₹ 20

www.kewalsach.com

निर्भीकता हमारी पहचान

दिसम्बर 2022

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

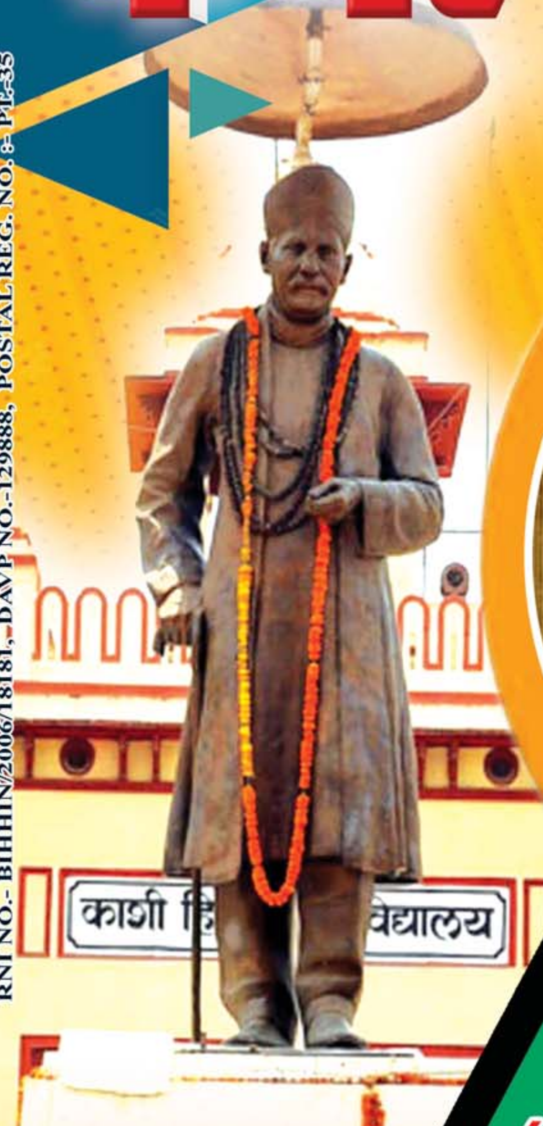

हिन्दी के पुरजोर समर्थक जिसने 'सत्यमेव जयते' का उद्‌घोष किया

भारत रत्न विशेषांक

RNI NO.- BIHHIN/2006/18181, DAVP NO.-129888, POSTAL REG. NO. :- PT-35

बिहार के श्रेष्ठ नर्सिंग, पारामेडिकल, फार्मेसी एवं मैनेजमेंट प्रशिक्षण संस्थान में नामांकन के लिए सम्पर्क करें।

हमारे प्रशिक्षण संस्थान एवं उक्त संस्थान में संचालित कोर्स

KRISHNA INSTITUTE OF HIGHER EDUCATION

Recognized By Health Department Govt. of Bihar, Patna &
Affiliated by Aryabhatta Knowledge University, Patna

1. Bachelor of Physiotherapy
2. Bachelor of Hospital Management
3. Bachelor of Occupational Therapy
4. Bachelor in Medical Laboratory Technology
5. Diploma in Operation Theatre Assistant
6. Diploma in Medical Laboratory Technology
7. Certificate in Medical Dresser

At- Adarsh Colony, West Patel Nagar, P.O- Keshrinagar,
P.S- Shastrinagar, Dist.- Patna-800024
Mobile No.: **7280073231/ 8709323736/ 7319832831**

Krishna Institute of Paramedical Sciences

Recognized By Health Department Govt. of Bihar, Patna &
Affiliated by Aryabhatta Knowledge University, Patna

1. Bachelor of Physiotherapy
2. Bachelor of Hospital Management
3. Bachelor in Medical Laboratory Technology

At-Professor Colony, Rambagh, P.O- Purnea,
P.S- Sadar, Dist.- Purnea-854301
Contact No.: **6205999576, 8935996859**

VIDYAPATI INSTITUTE OF HIGHER EDUCATION

Recognized By Health Department Govt. of Bihar, Patna &
Affiliated by Aryabhatta Knowledge University, Patna

1. Bachelor of Physiotherapy
2. Bachelor of Hospital Management
3. Bachelor of Occupational Therapy
4. Bachelor in Medical Laboratory Technology
5. Diploma in Operation Theatre Assistant
6. Diploma in Ophthalmic Assistant
7. Diploma in Medical Laboratory Technology
8. Diploma in E.C.G
9. Certificate in Medical Dresser

At- Mishri Singh Vishwamohini Nagar, P.O+P.S- Dalsinghsarai
Dist.- Samastipur-848114
Contact No.: **7859073609, 7367967424**

KRISHNA INSTITUTE OF NURSING AND PARA MEDICAL SCIENCES

Recognised by Health Department Govt. of Bihar, Patna & Pharmacy Council of India, New Delhi &
Affiliated by Bihar Nurses Registration Council, Patna & Aryabhatta Knowledge University, Patna

1. A.N.M
2. C.M.D.
3. D.M.L.T.
4. O.T.ASSISTANT
5. Bachelor of Physiotherapy
6. Bachelor of Occupational Therapy
7. Bachelor of Hospital Management
8. D.Pharm

At- Singhia Khurd, P.O- Singhia Khurd, P.S- Muffasil, Dist- Samastipur, Pin- 848113
Mob.: 6204998517, 8434712377, 9693712377, 9431808823, 9693615536

KRISHNA INSTITUTE OF HIGHER EDUCATION

Recognised By: Health Department Govt. of Bihar, Patna & Affiliated by Bihar Nurses
Registration Council, Patna & Aryabhatta Knowledge University, Patna

1. ANM
2. Bachelor of Physiotherapy
3. Bachelor of Hospital Management
4. Diploma in Medical Laboratory Technology
5. Certificate in Medical Dresser

At+P.O- Murliganj, Dist- Madhepura, Pin- 852122
Mobile No: **6206095356/ 6287779279**

KRISHNA INSTITUTE OF IT & MANAGEMENT

Recognized By Aryabhatta Knowledge University, Patna

1. Bachelor of Computer Application
2. Bachelor of Business Administration
3. Bachelor of Mass Communication

At+P.O- Singhia Khurd, P.S- Mufassil, Dist.- Samastipur-848113
Mobile No.: **9631299790/ 9304762396**

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
(Serving nation since 1990)

WESTOCITRON
WESTOCLAV
WESTOFERON
WESTOPLEX
QNEMIC

AOJ
AZIWEST
DAULER
MUCULENT
AOJ-D
BESTARYL-M
GAS-40
MUCULENT-D

SEVIPROT
WESTOMOL
WESTO ENZYME
ZEBRIL

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD. WD Dispersing Happiness

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.

Industrial area, Fatuha-803201
E-mail- westerlindrugsprivatelimited@gmail.com
Phone No.:0162-3500233/2950008

Himalaya Law College

Affiliated to Patliputra University

A **LAW** College with difference
Strong **ACADEMIC** for
PROFESSIONAL grooming

Courses on Offer

- **BA LLB**
- **BBA LLB**

5 Years Integrated Courses

- **LLB**

3 Years Course After Graduation

Website : www.himalayalawcollege.com
E-mail : himalahyauniv.law@gmail.com

बिहार स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड की सुविधा उपलब्ध

Why Consider HLC?

- Hi-Tech Moot Court with Multimedia Control Center
- Multi-Institutional and Multidimensional Atmosphere
- Seasoned Faculty with industry interface
- Internship from the very First Year
- Wi-Fi Campus with State of the art Language Lab
- Well furnished 24x7 Hostels with Wi-Fi Campus (For Boys & Girl)

Approved by
BAR COUNCIL OF INDIA

ADMISSION OFFICE : Patna ITI Campus, New Bypass Road, Brahampur, New Jaganpura, Patna
CAMPUS : Chiksi, Paliganj, Patna - 801110

9031015472, 9334767990, 9304637349

निर्भीकता हमारी पहचान
केवल सच
हिन्दी मासिक पत्रिका

हिन्दुत्व जागरण में कथावाचक

सनातन संस्कृति में माँ-बाप का दर्जा भगवान से भी उपर है और यही कारण है कि भगवान भी पृथ्वी पर किसी मनुष्य के घर जन्म लिया है इसके उदाहरण धर्मग्रंथों में मिलता है। 21वीं सदी के संचारक्रांति के फूहड़पन दौर में पैसे के लालच में वासना को प्रोजेक्ट करने पर्दे के हिरो हमारी युवा पीढ़ी पर हावी होते जा रहे है लेकिन सरकार इसपर गंभीर नहीं दिखती बल्कि इसका राजनीति होता है, जिसकी वजह से सेंसरबोर्ड विवादस्पद एवं बेशर्म फिल्मों की अनुमति देता है। सरकार एवं प्रशासन की जिम्मेवारी को राष्ट्रहित में धर्मगुरूओं एवं कथावाचकों ने उठा रखा है और उनका प्रभाव मानसपटल पर पड़ने भी लगा है। सोशल मीडिया ने जहां सेक्स एवं अपराध के साथ फूहड़पन को परोसा वहीं उसपर हावी हो गये कथावाचक एवं हिन्दू धर्म के साथ सनातन संस्कृति उसके गौरवशाली प्रभाव के विषय में भी युवा सजग हो रहे हैं। बागेश्वर धाम/सन्यासी बाबा के लोकप्रिय कथावाचक धीरेन्द्र शास्त्री ने युवाओं के भीतर जोश भर दिया है। हिन्दू जागरण में वर्षों से प्रयास कर रहे देवकीनंदन ठाकुर भी युवाओं में सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर रहे हैं। कथावाचक प्रमोद मिश्रा, जया किशोरी, चित्रलेखा, राजेन्द्र दास जी महाराज, अनिरूद्ध आचार्य, गौरव कृष्ण शास्त्री, श्रीकृष्ण चन्द्र ठाकुर, श्यान सुन्दर परासर, सवामी अवधेशानंद गिरी सहित सैकड़ों रामकथा, भागवत कथा एवं शिवचर्चा के कथावाचक हिन्दू अस्मिता एवं अस्तित्व को सुदृढ़ करने में मगन हैं जिसकी वजह से हिन्दूओं में जन-जागरण हो रहा है और किसी भी परिस्थिति से निपटने के लिए गोलबंद भी हो रहे हैं।

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

आजादी के 76 साल हो चुके हैं और देश आज भी **1947 का भारत-पाकिस्तान बंटवारा** को नहीं भूला है और इसके लिए महात्मा गाँधी एवं जवाहर लाल नेहरू को दोषी मानते हैं यह वातावरण बनाने की कोशिश राजनीतिक दलों के द्वारा की जाती है। कहने, सुनने के लिए और संवैधानिक रूप से भारत धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है परन्तु देश के भीतर धर्म की राजनीति भी परचम पर है। 30 करोड़ की आबादी के बाद भी मुस्लिम भारत में असुरक्षित है तो सिक्ख एवं इसाई सिर्फ शांति से मुस्लिम एवं हिन्दू के बीच की कूटनीति को देख रहा है। तमाम प्रकार के विवादों के बीच भारतीय संस्कृति एवं सनातन परंपरा को हिन्दूवादी संगठनों से कहीं ज्यादा देश के **श्रीराम कथा**, **श्री भागवत कथा**, **श्री शिव पुराण कथा** पाठ करने वाले कथावाचको ने संभाल रखा है। एक दशक पूर्व हिन्दू देवी-देवताओं को जिस प्रकार से फिल्मी दुनिया मजाक बनाती थी वह वातावरण आज नहीं है क्योंकि प्रवचनकत्ताओं की मोटिवेशन विचारों के कारण देश के चारो दिशाओं में भगवान के विरूद्ध (हिन्दू) कोई भी टिप्पणी से बचने लगा है। धर्म की रक्षा, राष्ट्र की रक्षा, प्रकृति की रक्षा, लव-जिहाद जैसे गंभीर विषयों पर कक्षावाचाकों ने मोर्चा संभाल रखा है अथा युवाओं के उपर विशेष फोकस किया जा रहा है तथा आसुरी शक्तियों से निपटा जा सके। हिन्दू प्रधान हिन्दुस्तान में जिस प्रकार संस्कृत को सरकारी राजनीति की वजह से रसातल में पहुंचा दिया गया उसी प्रकार अगर भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय नहीं बनाया होता तो आज देश के भीतर एक शिक्षण संस्थान भी हिन्दुओं के नाम पर नहीं होता। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, जामिया-इस्लामिया और बीएचयू विभिन्न राजनीतिक दलों के लिए राजनीति करने का प्रमुख केन्द्र है और यहां किस-किस प्रकार की शिक्षा मिल रही है इसको पूरा विश्व देख रहा है। मुरारी बापू हो या देवकीनंदन ठाकुर और अब तो धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री बागेश्वर धाम ने तो सनातन संस्कृति को सुदृढ़ करने का बीड़ा हीं उठा लिया है। देवकीनंदन ठाकुर के बाद बेबाकी से हिन्दू धर्म की रक्षा एवं हिन्दुओं पर हो रहे राजनीतिक एवं धार्मिक हमले पर आग बबूला होकर धीरेन्द्र शास्त्री टिप्पणी करने से पीछे नहीं हटते। कुछेक कथावाचक एवं धर्म पर प्रवचन करने वाले साधुओं की करतूत भी देश के साथ विश्व के लोगों ने देखा है कि किस प्रकार हिन्दू धर्म को बदनाम करने की कोशिश करने वाले सेक्सी संतो का हाल भी सबने देखा है। धर्म के आड़ में हवस के बाजार को तोड़ने की कोशिश भी कथावाचक लगातार कर रहे हैं खुले मंच से सीना ठोकते हुए हिन्दू धर्म का विस्तार करने में जुटे हैं और विश्व के अन्य देशों में भी सनातन संस्कृति को विकसित करने की हर संभव कोशिश कर रहे हैं। हरे कृष्णा-हरे कृष्णा, कृष्णा-कृष्णा हरे-हरे की भक्ति में विदेशी भी सनातन संस्कृति में विश्वास करने लगे हैं और जबसे कथावाचकों ने हिन्दुओं के अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा का दायित्व उठाया तबसे वर्त्तमान युवा पीढ़ी में भी एक नया जोश महसूस किया जा रहा है। किस प्रकार निजाम से जमीन लेकर गुलाम भारत में हिन्दुओं के सम्मान को जीवंत रखने का शिक्षा का मंदिर का निर्माण की स्थापना पंडित मदन मोहन मालवीय ने की उनको मोदी की सरकार ने भारत रत्न देकर यह साफ कर दिया कि आजादी का अमृत महोत्सव का काल में हिन्दूओं की अस्मिता को बरकरार रखने वालों को विशेष स्थान दिया जायेगा। उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र एवं राजस्थान में कथावाचकों ने भारत की एकता अखंडता को बरकरार रखने के साथ सनातन संस्कृति के प्रभाव एवं प्रकृति के वास्तविक सच्चाई से धर्म के साथ जोड़कर उनके महत्व पर प्रकाश डाला जा रहा है। एक दौर था कि फिल्मी दुनिया के कलाकारों का एक दिन का प्रोग्राम के लिए 10-20 लाख रूपये देकर बुलाया जाता था और एक ही कलाकार को दो दिन प्रोग्राम हो तो उनका महत्व नहीं रहता है लेकिन आज फिल्म कलाकारों से ज्यादा क्रेज कथावाचकों का हो गया है और उनके 7 दिन के प्रोग्राम पर करोड़ों रूपये खर्च किये जा रहे हैं और इनके सात दिनों के प्रवचन को लोग बड़ी श्रद्धा से सुनते हैं। कथा वाचन का कार्य न सिर्फ पुरूष बल्कि महिलाओ ने भी संभाल रखा है और सबके श्रोताओं की संख्या लाखों-करोड़ों में है। जया किशोरी एवं चित्रलेखा सहित अन्य के योजस्वी विचार को श्रद्धा भाव से सुनते हैं। एक दौर में और आज भी राष्ट्रवाद एवं हिन्दुओं के प्रभाव को साहित्कार/कवियों ने अपने सम्मेलनों से संभाला है तो वहीं कार्य कथावाचक चुनौती लेते हुए कर रहे हैं। कई कथावाचकों की सुरक्षा घेरा कितना मजबूत है यह देखा जा सकता है क्योंकि यह भी राजनेताओं एवं पदाधिकारियों की तरह विदेशी एवं देश के जयचंदों के टारगेट पर हैं परन्तु सनातन संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ बनाने के साथ हिन्दुओं के उच्च विचार को बिना किसी अन्य धर्म सम्प्रदाय पर टारगेट करते हुए कथावाचक अपने सभाओं में हिन्दू जागरण का कार्य का निष्पादन कर रहे हैं।

निर्भीकता हमारी पहचान
केवल सच
हिन्दी मासिक पत्रिका

पाठक की कलम से

नवंबर 2022

आपको केवल सच पत्रिका कैसी लगी तथा इसमें कौन-कौन सी खामियाँ हैं, अपने सुझाव के साथ हमारा मार्गदर्शन करें। आपका पत्र ही हमारा बल है। हम आपके सलाह को संजीवनी बूटी समझेंगे।

केवल सच

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

हमारा पता है :- द्वारा:- ब्रजेश मिश्र

पूर्वी अशोक नगर, रोड़ नं.- 14, मकान संख्या- 14/28

कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)

फोन:- 9431073769/ 8340360961/ 9955077308

हमारा ई-मेल kewalsach@gmail.com, editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

पदयात्रा

संपादक जी,

आपका संपादकीय में गजब का सम्मोहन है कि कोई भी इसको एकबार पढ़ ले तो वह बार बार पढ़ेगा। नवंबर 2022 अंक का संपादकीय **किसके लिए पदयात्रा?** में आपने देश मे हुए कई पदयात्रा की संक्षिप्त जानकारी परंतु सटीक दी है तथा इसके राजनीतिक नफा नुकसान पर भी फोकस किया है। जितनी सरलता से आप किसी भी विषय पर आलेख लिखते है जिससे आम को लगता है कि आपने उसकी दिल की बात लिख दी है। राहुल गांधी के भारत जोड़ो पदयात्रा से इमेज बदलेगा उसकी समीक्षा सटीक है।

✦ प्रकाश श्रीवास्तव, एमरोना सिटी, पूना

नतीजे

ब्रजेश जी,

बिहार विधानसभा के उपचुनाव के जितने पर बहुत दमदार और मंथन करने वाला खबर को नवंबर 2022 अंक में अमित कुमार ने अपनी खबर उपचुनाव के नतीजे दोनों कानों के लिए सबक बहुत ही बेहतरीन राजनीतिक समीक्षात्मक लिखा गया है। मोकामा से राजद और गोपालगंज से भाजपा की जीत पर बिहार की राजनीति पर काफी विचारणीय विषयो को उठाया है। ऐसी खबरों पर सरकार ध्यान नहीं देगी तो सत्तारूढ पार्टी को उसका नुकसान झेलना पड़ेगा। सटीक विश्लेषण के लिए धन्यवाद।

✦राहुल शांडिल्य, साकेत पूरी, अनीसाबाद

सावधान

मिश्रा जी,

देश की सुरक्षा के लिए सावधान रहने का समय आलेख में सेना के पूर्व अधिकारी ललन सिंह ने चेतावनी व सावधानी बरतने की उचित सलाह दी है। देश के भीतर जिस प्रकार की राजनीति चल रही है वैसे में सुरक्षा के लिए सावधानी की सख्त जरूरत है। नवंबर 2022 अंक में कई बड़ी खबर प्रकाशित हुई है जिससे पाठकों को सटीक जानकारी मिलती है। इसी अंक में अजय कुमार की रिपोर्ट पत्रकारिता का गिरता स्तर और विदेशी फंडिंग का तानाबाना में वास्तविक सच्चाई से रूबरू कराया है जी पठनीय के साथ चिंता का विषय है।

✦दिवाकर सक्सेना, द्वारका, सेक्टर-4 नई दिल्ली

जिम्मेदार कौन?

मिश्रा जी,

केवल सच, पत्रिका सही एवं प्रामाणित खबरों को बिना भय का प्रकाशित करता है तथा जो जिम्मेदार हैं उसपर उंगली उठाने से नहीं डरता। नवंबर 2022 अंक में शशि रंजन सिंह और राजीव शुक्ला की खबर यशस्वी राज के मौत का जिम्मेदार कौन? में बिहार सरकार की लापरवाही पर लथाड़ते हुए उत्तरप्रदेश की योगी बाबा की पुलिस को भी टारगेट पर लिया है और यशस्वी राज के मौत के कारण की तह तक लिखने की कोशिश की है। आज जिस प्रकार शिक्षण संस्थानों में ड्रग्स का बाजार बढ़ता जा रहा है जिससे अपराध में वृद्धि हो रही है।

✦ पंकज सिंह, पाया नं.-57, राजाबाजार, पटना

किंगपिन

संपादक जी,

नवंबर 2022 अंक जा कवर पेज बहुत आकर्षक लगा तथा कृष्ण कुमार सिंह की खबर एसपी लिपि सिंह हैं किंगपिन में सहरसा जिला में हुए एससी एसटी के मुकदमें पर पुलिस की संलिप्तता पर मजबूती से प्रकाश डाला है। खबर का असर भी हुआ और सहरसा जिले के एससी/एसटी थाना के प्रभारी ललन पासवान और कांड संख्या 09/2022 के आईओ बलदेव राम का वहां से हटा दिया गया है। पूर्ण बेबाकी एवं निडरतापूर्वक खबर के कारण इस खबर को बहुत लोगों ने सहरसा जिला में पढ़ा है और एक उम्मीद जगी है कि पत्रकारिता आज भी जिंदा है।

✦ कमलेश चौधरी, लहेरियासराय, दरभंगा

अच्छी खबर

संपादक जी,

बिहार सरकार के द्वारा किये जा रहे जनहित के कार्य को भी केवल सच, पत्रिका पूर्ण जनकारीप्रद के साथ प्रकाशित किया है। नवंबर 2022 अंक में धर्मेंद्र सिंह और झारखंड की खबर भी बहुत बेहतरीन है। छोटी-छोटी कई महत्वपूर्ण खबर भी आकर्षक लगे। संपादकीय भी बहुत दमदार था और राजनीतिक खबरें भी पठनीय है। सहरसा जिला की एसपी किंगपिन हैं लिपि सिंह वाली खबर भी पर्दाफास करता है। अमित कुमार की खबर जदयू जा राजद में विलय अनुमान या हकीकत में बहुत ही सटीक समीक्षा किया गया है जिससे बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

✦ सोहन चटर्जी, श्याम बाजार, कोलकाता

अन्दर के पन्नों में

32

91

93

भारत में बदलाव के माहौल....103

RNI No.- BIHHIN/2006/18181, समृद्ध भारत **DAVP No.- 129888** खुशहाल भारत

निर्भीकता हमारी पहचान
केवल सच
राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्षः- 17,	अंकः- 199,	माहः- दिसम्बर 2022,	मूल्यः- 20/- रू

फाउंडर

स्व० गोपाल मिश्र

संपादक

ब्रजेश मिश्र

9431073769 8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com

kewalsach@gmail.com

प्रधान संपादक

अरूण कुमार बंका	7782053204
सुरजीत तिवारी	9431222619
सच्चिदानन्द मिश्र	9934899917
ललन कुमार प्रसाद	9334107607

संपादकीय सलाहकार

अमिताभ रंजन मिश्र	9430888060, 8873004350
अमोद कुमार	9431075402

महाप्रबंधक

त्रिलोकी नाथ प्रसाद	9308815605, 9122003000

triloki.kewalsach@gmail.com

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

पूनम जयसवाल	9430000482, 9798874154
मनीष कुमार कमलिया	9934964551, 8809888819
रीता सिंह	7004100454, 9308729879

उपसंपादक

अरबिन्द मिश्रा	9934227532, 8603069137
प्रसुन्न पुष्कर	9430826922, 7004808186
ब्रजेश सहाय	7488696914
ललन कुमार	9430243587, 9334813587
आलोक कुमार सिंह	8409746883

संयुक्त संपादक

अमित कुमार 'गुड्डू'	9905244479, 7979075212

amit.kewalsach@gmail.com

राजीव कुमार शुक्ला	9430049782, 7488290565
कृष्ण कुमार सिंह	6209194719, 7909077239
काशीनाथ गिरी	9905048751, 9431644829
प्रदीप कुमार सिन्हा	9472589853, 6204674225

सहायक संपादक

शशि रंजन सिंह	8210772610, 9431253179
मिथिलेश कुमार	9934021022, 9431410833
नवेन्दु कुमार मिश्र	9570029800, 9199732994
रामपाल प्रसाद वर्मा	9939086809, 7079501106

समाचार प्रबंधक

सुधीर कुमार मिश्र	9608010907

ब्यूरो-इन-चीफ

संकेत कुमार झा	9386901616, 7762089203
बिनय भूषण झा	9473035808, 8229070426.

.

विधि सलाहकार

शिवानन्द गिरि	9308454485
रवि कुमार पाण्डेय	9507712014

चीफ क्राइम ब्यूरो

आनन्द प्रकाश	9508451204, 8409462970
कुमार सौरभ	7004381748, 9102366629
गगन कुमार मिश्र	8210810032, 9835585560

साज-सज्जा प्रबंधक

अमित कुमार	9905244479

कार्यालय संवाददाता

सोनू यादव	8002647553, 9060359115

प्रसार प्रतिनिधि

कुणाल कुमार	9905203164

बिहार प्रदेश जिला ब्यूरो

पटना (श०) :-	श्रीधर पाण्डेय	09470709185
(म०) :-		
(ग्रा०) :-		
बाढ़ :-		
भोजपुर :-	गुड्डू कुमार सिंह	8789291547
बक्सर :-	बिन्ध्याचल सिंह	8935909034
कैमूर :-		
रोहतास :-	अशोक कुमार सिंह	7739706506
:-		
गया (श०) :-	सुमित कुमार मिश्र	7667482916
(ग्रा०) :-		
औरंगाबाद :-		
जहानाबाद :-	नवीन कुमार रौशन	9934039939
अरवल :-	संतोष कुमार मिश्रा	9934248543
नालन्दा :-		
:-		
नवादा :-	अमित कुमार	9934706928
:-		
मुंगेर :-		
लखीसराय :-		
शेखपुरा :-		
बेगूसराय :-	निलेश कुमार	9113384406
:-		
खगड़िया :-		
समस्तीपुर :-		
जमुई :-	अजय कुमार	09430030594
वैशाली :-		
:-		
छपरा :-		
सिवान :-		
:-		
गोपालगंज :-		
:-		
मुजफ्फरपुर :- .		
:-		
सीतामढ़ी :-		
शिवहर :-		
बेतिया :-	रवि रंजन मिश्रा	9801447649
बगहा :-		
मोतिहारी :-		
दरभंगा :-		
:-		
मधुबनी :-	सुरेश प्रसाद गुप्ता	9939817141
:-		
सहरसा :-		
मधेपुरा :-		
सुपौल :-		
किशनगंज :-		
:-		
अररिया :-	अब्दुल कय्यूम	9934276870
पूर्णिया :-		
कटिहार :-		
भागलपुर, :-		
(ग्रा०) :-	रवि पाण्डेय	7033040570
नवगछिया :-		

दिल्ली कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तल्ला, शास्त्रीनगर, न्यू
दिल्ली-110052
संजय कुमार सिन्हा, स्टेट हेड
मो०- 9868700991, 9431073769

उत्तरप्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
.................................., **स्टेट हेड**

सम्पर्क करें
9308815605

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
अजीत कुमार दुबे, स्टेट हेड
मो०- 9433567880, 9308815605

मध्य प्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
हाउस नं.-28, हरसिद्धि कैम्पस
खुशीपुर, चांबड़
भोपाल, मध्य प्रदेश- 462010
अभिषेक कुमार पाठक, स्टेट हेड
मो०- 8109932505,

झारखंड कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
वैष्णवी इंक्लेव, द्वितीय तल, फ्लैट नं- 2बी
नियर- फायरिंग रेंज
बरियातु रोड, राँची- 834001
अजय कुमार, प्रदेश प्रभारी
मो०- 6203723995, 9431073769

छत्तीसगढ़ कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
.................................., **स्टेट हेड**
सम्पर्क करें
8340360961

संपादकीय व प्रधान कार्यालयः-

☞ पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्या:- 28/14, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार) मो०- 9431073769, 9955077308

☞ .e-mail:- kewalsach@gmail.com, ditor.kstimes@rediffmail.com kewalsach_times@rediffmail.com

☞ स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा सांध्य प्रवक्ता खबर वर्क्स, ए- 17, वाटिका विहार (आनन्द विहार), अम्बेडकर पथ, पटना 8000 14(बिहार) एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। RNI NO.-BIHHIN/2006/18181

☛ पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

☛ सभी प्रकार के वाद-विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।

☛ आलेख पर कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।

☛ किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।

☞ सभी पद अवैतनिक हैं।

☞ फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)

☞ कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।

☞ **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**

☞ भुगतान Kewal Sach को ही करें। प्रतिनिधियों को नगद न दें।

☞ A/C No. :- 0600050004768
BANK :- Punjab National Bank
IFSC Code :- PUNB0060020
PAN No. :- AAJFK0065A

झारखण्ड स्टेट ब्यूरो

ब्रजेश कुमार मिश्र 9431950636-9631490205

उप संपादक सह प्रदेश प्रभारी

अजय कुमार 6203723995-8409103023

झारखण्ड सहायक संपादक

ब्रजेश मिश्रा 7654122344-7979769647
अभिजीत दीप 7004274675-9430192929

संयुक्त संपादक

....
....

विशेष प्रतिनिधि

भारती मिश्रा 8210023343-8863893672
....
....

झारखण्ड प्रदेश जिला ब्यूरो

राँची	:-	अभिषेक मिश्र	9431732481
साहेबगंज	:-	अनंत मोहन यादव	9546624444
खूँटी	:-		
जमशेदपुर	:-	तारकेश्वर प्रसाद गुप्ता	9304824724
हजारीबाग	:-		
जामताड़ा	:-		
दुमका	:-		
देवघर	:-		
धनबाद	:-		
बोकारो	:-		
रामगढ़	:-		
चाईबासा	:-		
कोडरमा	:-		
गिरीडीह	:-		
चतरा	:-	धीरज कुमार	9939149331
लातेहार	:-		
गोड्डा	:-		
गुमला	:-		
पलामू	:-		
गढ़वा	:-		
पाकुड़	:-		
सरायकेला	:-		
सिमडेगा	:-		
लोहरदगा	:-		

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)
पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
09431016951, 09334110654

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,
लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020
फोन- 0612/3504251

श्री सज्जन कुमार सुरेका

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
डी- 402 राजेन्द्र विहार, फॉरेस्ट पार्क
भुवनेश्वर- 751009 मो-09437029875

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक **''मगध इंटरनेशनल स्कूल''** टेकारी
'' केवल सच '' पत्रिका **एवं '' केवल सच टाइम्स ''**
9060148110
sudhir4s14@gmail.com

श्री आर के झा

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
EX. CGM, (Engg.) N.B.C.C
08877663300

देवब्रत्त कुमार गणेश

मुख्य संरक्षक सह भावी प्रत्याशी, 53 ठाकुरगंज विधानसभा
'' केवल सच '' पत्रिका **एवं '' केवल सच टाइम्स ''**
8986196502/9304877184
devbartkumar15@gmail.com

बिहार राज्य प्रमंडल ब्यूरो

पटना		
मगध		
सारण		
तिरहुत		
पूर्णिया	**धर्मेन्द्र सिंह**	9430230000 7004119966
भागलपुर		
मुंगेर		
दरभंगा		
कोशी		

विशेष प्रतिनिधि

आशुतोष कुमार	9430202335, 9304441800
सागर कुमार	9155378519, 8863014673
सुमित राज यादव	9472110940, 8987123161
बेंकटेश कुमार	8521308428, 9572796847
राजीव नयन	9973120511, 9430255401
लक्ष्मी नारायण सिंह	9204090774
मणिभूषण तिवारी	9693498852
राजीव रंजन	9431657626
दीपनारायण सिंह	9934292882
आनन्द प्रकाश पाण्डेय	9931202352, 7808496247
अनु कुमारी	9471715038, 7542026482
रामजीवन साहू	9430279411, 7250065417
रंजीत कुमार सिन्हा	9931783240, 7033394824
विनित कुमार	8210591866, 8969722700
कुणाल कुमार सिंह	9988447877, 9472213899

छायाकार

त्रिलोकी नाथ प्रसाद	9122003000, 9431096964
मुकेश कुमार	9835054762, 9304377779
जय प्रसाद	9386899670,
कृष्णा कुमार	9608084774, 9835829947

कलराज मिश्र
राज्यपाल, राजस्थान

Kalraj Mishra
Governor, Rajasthan

सत्यमेव जयते

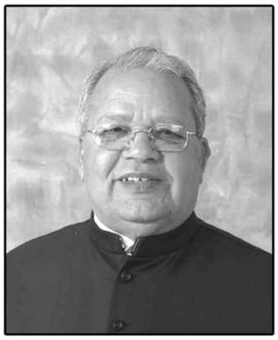

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि महामना मदन मोहन मालवीय जी की स्मृति में 'केवल सच' हिन्दी मासिक पत्रिका 'महामना भारत रत्न' विशेषांक का प्रकाशन करने के साथ ही 'केवल सच सम्मान–2022' का आयोजन कर रही है।

मदन मोहन मालवीय जी भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों के सही मायने में पोषक थे। उन्हें महामना इसलिए कहा जाता है कि वह सत्य, समर्पण के गुणों से सम्पन्न और राष्ट्र के लिए जीवन जीने वाले महापुरूष थे। सुखद है कि उनकी स्मृति को संजोते आप यह आयोजन कर रहे हैं।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं है।

(कलराज मिश्र)

राज भवन, सिविल लाइन्स, जयपुर–302006
Raj Bhawan, Civil Lines, Jaipur-302006
दूरभाष : 0141–2228716–19, 2228611–12, 2228722

मंगुभाई पटेल
MANGUBHAI PATEL

सत्यमेव जयते

राज्यपाल, मध्यप्रदेश
GOVERNOR OF MADHYA PRADESH

राज भवन
भोपाल-462052
RAJ BHAVAN
BHOPAL-462052

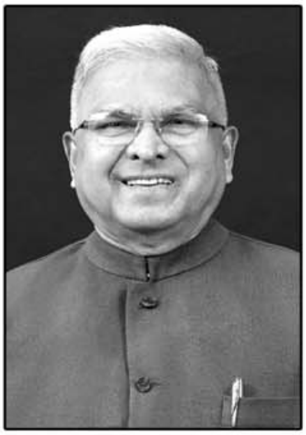

क्रमांक 8...5...6/राजभवन/2022
भोपाल, दिनांक-29.. नवम्बर, 2022

संदेश

हर्ष का विषय है कि हिंदी मासिक पत्रिका केवल सच द्वारा **महामना भारतरत्न** दिवस के अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों के प्रबुद्ध जन का भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय केवल सच सम्मान से विभूषण किया जा रहा है। इस अवसर पर भारत रत्न विशेषांक का प्रकाशन किया जाना सराहनीय है।

भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय महान शिक्षाविद्, बेहतरीन वक्ता और एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता थे। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम आंदोलनों, उद्योगों को बढ़ावा देने, देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में योगदान देने, शिक्षा, धर्म, सामाजिक सेवा, हिंदी भाषा के विकास और राष्ट्रीय महत्व से संबंधित कई अन्य गतिविधियों में हिस्सा लिया। उनके जन्मोत्सव पर सम्मान समारोह और विशेषांक का प्रकाशन अनुकरणीय पहल है।

आशा है, भारतरत्न विशेषांक और सम्मान समारोह समाज में निस्वार्थ सेवा के भावों के विकास में सहयोगी होगा।

सफल आयोजन की शुभकामनाएं,

मंगुभाई पटेल

(मंगुभाई पटेल)

दूरभाष : 0755-2858828, 2858830, फैक्स : 0755-2858832, ई-मेल : mprajbhavan@mp.gov.in

प्रो० जगदीश मुखी
राज्यपाल, असम

सत्यमेव जयते

राज भवन, गुवाहाटी
पिन-781 001

12 दिसम्बर, 2022

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि दिनांक 25 दिसम्बर, 2022 को भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय जी की जयंती पर "केवल सच समूह" विभिन्न सेवाओं में उल्लेखनीय कार्य करने वाले विशिष्ट व्यक्तियों को "भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय केवल सच सम्मान - 2022" से सम्मानित करने जा रहा है। साथ ही, समूह की ओर से इस विशेष अवसर पर "भारत रत्न विशेषांक" का भी प्रकाशन होने जा रहा है।

पंडित मदन मोहन मालवीय जी का न सिर्फ़ देश की स्वतंत्रता में अद्‌वितीय योगदान रहा, बल्कि उन्होंने देश में शिक्षा के लिए भी अथक प्रयास किए। उन्होंने देश के युवाओं की अच्छी शिक्षा के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्‌यालय की स्थापना करने के साथ-साथ पत्रकारिता एवं समाज-सुधार में भी अभूतपूर्व योगदान दिया।

मालवीय जी के जीवन का मूल लक्ष्य था - राष्ट्रीय स्वतंत्रता एवं प्रगति। वे अपने महान कार्यों के लिए पूरे देश में "महामना" के नाम से विख्यात हुए। देश के युवाओं की शिक्षा एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए अपना संपूर्ण जीवन अर्पित करने वाले मां भारती के ऐसे महान सपूत की जयंती पर केवल सच समूह द्‌वारा "भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय केवल सच सम्मान - 2022" प्रदान करना तथा इस अवसर पर "भारत रत्न विशेषांक" का प्रकाशन व विमोचन करना अत्यंत सराहनीय कार्य है।

भारत रत्न पंडित मालवीय जी की जयंती पर केवल सच समूह द्‌वारा प्रकाशित "भारत रत्न विशेषांक" के सफल प्रकाशन हेतु मेरी अनंत शुभकामनाएं।

जगदीश मुखी

(प्रो. जगदीश मुखी)

फोन : (0361) 2540500 (ऑफिस); फैक्स : (0361) 2731832 ; ई-मेल : rajbhavan-assam@gov.in

ড° হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মা
Dr. Himanta Biswa Sarma

सत्यमेव जयते

মুখ্যমন্ত্ৰী, অসম
Chief Minister, Assam

दिसपुर, २५ अगहन, १४२९ भास्कराब्द
12 November, 2022

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि 25 दिसंबर, 2022 को "महामना भारत रत्न अवतरण दिवस" के अवसर पर विभिन्न श्रेत्रों के प्रबुद्ध लोगों को "भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय केवल सच सम्मान-2022" से सम्मानित किया जा रहा है। आपने हमारे देश के विशिष्ट व्यक्तियों को विशेष सम्मान प्रदान करने के लिए जो कदम उठाया है, वह अति सराहनीय है।

महामना भरत रत्न मदन मोहन मालवीय जी सत्य, दया और न्याय पर आधारित सनातन धर्म के सच्चे उपासक थे। सनातन धर्म एवं हिंदू संस्कृति की रक्षा और संवर्धन के लिए मालवीय जी ने अनमोल योगदान दिया है। मालवीय जी ने भारत के गौरवशाली प्राचीन सभ्यता और संस्कृति को पढ़ने, सुनने और जानने के उद्देश्य से काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। काशी हिंदू विश्वविद्यालय उनके जीवन का अक्षय-कीर्ति-स्तंभ है। मालवीय जी ने असीम बुद्धिमत्ता, देशभक्ति, निष्ठा, त्याग और समर्पण की भावना से हमारे देश के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मालवीय जी की महानता को देखते हुए गांधीजी ने उन्हें "महामना" की उपाधि प्रदान की थी, जो भारत में केवल एक ही है। भारत की पुण्य भूमि पर जन्म लेने वाले पूजनीय मालवीय जी एक आदर्श पुरूष है। भारत के इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा रहेगा।

केवल सच के भारत रत्न विशेषांक में भारत के गौरवशाली व्यक्तित्वों के बारे में प्रकाशित किया जा रहा है, जो अति प्रशंसनीय है। यह विशेषांक युवाओं को सही मार्गदर्शन करने, देशप्रेम की भावना को जगाने तथा उनमें सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करने में काफी मदद करेगी।

मैं, "महामना भारत रत्न अवतरण दिवस" के अवसर पर "भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय केवल सच सम्मान-2022" का आयोजन तथा इस अवसर पर भारत रत्न विशेषांक का विमोचन सफलता से संपन्न होने की कामना करते हुए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

भवदीय

हिमन्त वि. शर्मा

(डॉ. हिमंत विश्व शर्मा)

अरविन्द केजरीवाल
मुख्यमंत्री

सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय, आई.पी.एस्टेट,
नई दिल्ली-110002
ऑफिस-23392020, 23392030
फैक्स - 23392111

अ.शा. पत्र संख्या : osdcmi/139
दिनाँक 12-12-2022

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय का अवतरण दिवस 25 दिसम्बर के अवसर पर **"श्रुति कम्युनिकेशन ट्रस्ट"** एवं **"केवल सच"** हिन्दी मासिक पत्रिका अपने स्थापना के 17वें वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में **'केवल सच सम्मान–2022'** का आयोजन कांस्टीट्यूशल क्लब ऑफ इंडिया, नई दिल्ली में किया जा रहा है और इस अवसर पर पत्रिका का **'भारत रत्न विशेषांक'** का भी विमोचन किया जाएगा।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका, पत्रकारिता के नियमों का पालन करते हुए नियमित रूप से प्रकाशित होती रहेगी।

मैं पत्रिका की सफलता के 17 वर्ष पूरे होने पर अपनी हार्दिक बधाई भेजता हूँ ।

(अरविन्द केजरीवाल)

अवध विहारी चौधरी
अध्यक्ष
बिहार विधान सभा, पटना-15

सत्यमेव जयते

AWADH BIHARI CHAUDHARY
Speaker
Bihar Legislative Assembly, Patna-15

शुभकामना संदेश

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि दिनांक 25 दिसम्बर, 2022 को ''महामना भारत रत्न अवतरण दिवस'' के अवसर पर ''भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय केवल सच सम्मान-2022'' समारोह का आयोजन किया जा रहा है एवं इस पुनित अवसर पर ''भारत रत्न विशेषांक'' पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रणेता एवं इस युग के आदर्श पुरूष भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय भारत के पहले एवं अंतिम व्यक्ति थें जिन्हें महामना के सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया गया ।

मैं इस समारोह की सफलता एवं ''भारत रत्न विशेषांक'' पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मंगल कामना करता हूँ ।

9.12.22

(अवध विहारी चौधरी)

Address : 2, Desh Ratna Marg, Patna-15 Phone No. : 0612- 2217856, 2217082 (O)
Phone No. : 0612-2215232 (R), Fax No.: 0612-2217373 (O) 0612-2215858 (R)
E-mail : mla-siwan-bih@nic.in

देवेश चन्द्र ठाकुर

बी.ए. (प्रतिष्ठा) फर्गुसन कॉलेज, पुणे
एल.एल.बी. (आई.एल.एस.), पुणे
सभापति
बिहार विधान परिषद्

सत्यमेव जयते

पत्रांक....................   दिनांक 02/12/2022

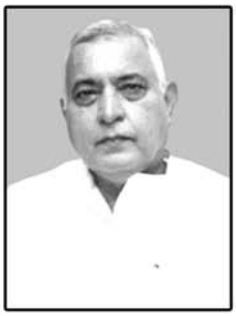

शुभकामना-संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि **'केवल सच'** हिन्दी मासिक पत्रिका द्वारा **'भारत रत्न विशेषांक'** का विमोचन 25 दिसम्बर, 2022 को किया जा रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के अग्रगण्य नेता, विलक्षण प्रतिभा के धनी, महान शिक्षाविद, विज्ञ अधिवक्ता, भारत माता की सेवा में संपूर्ण जीवन समर्पण करने वाले महान देशभक्त एवं समाज सुधारक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना मदन मोहन मालवीय के **जन्म दिवस** के अवसर पर इस पत्रिका द्वारा भारत रत्न से सम्मानित महापुरूषों के व्यक्तित्व को समाहित करते हुए विशेषांक का प्रकाशन एक प्रशंसनीय प्रयास है। आशा है, इस विशेषांक के सुधी पाठकगण महामना के साथ-साथ अन्य विशिष्ठ पुरूषों के जीवनगाथा एवं आदर्शों से समाज सेवा एवं राष्ट्र सेवा की ओर प्रेरित होंगे।

मैं पत्रिका के **'भारत रत्न विशेषांक'** के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकानाएँ देता हूँ।

(देवेश चन्द्र ठाकुर)
2/12/22

आवास : 3, देशरत्न मार्ग, पटना–800001, फोन : 0612-2215819, 2215245 (का.), 2217203 (आ.)
मोबाईल : 94310 20000, 99344 45000, 9867998679, ई–मेल : chairman-blc@nic.in

श्रवण कुमार
شرون کمار

मंत्री
ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

पत्रांक 3507/310 दिनांक 06/12/22

शुभकामना संदेश

प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी मासिक पत्रिका **"केवल सच"** द्वारा भारत रत्न मदन मोहन मालवीय के अवतरण दिवस के अवसर पर 25 दिसम्बर, 2022 को भारत रत्न विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

महान शिक्षाविद्, भारतीय संस्कृति के पुरोधा, समाज सुधारक, देश भक्त तथा राष्ट्र की सेवा में अपना पूरा जीवन समर्पित करने वाले काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय के प्रति हमारा देश कृतज्ञ है । उनके जीवन से आज की पीढ़ी अपना भविष्य संवारने का रास्ता ढूंढती है ।

मैं **"केवल सच"** पत्रिका द्वारा प्रकाशित किये जाने वाले **भारत रत्न विशेषांक** के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ ।

(श्रवण कुमार)

कार्यालय – मुख्य सचिवालय, पटना–800015, आवास : 12ए, बेली रोड, पटना–800015
दूरभाष : 0612–2205331 (का०), 2215472 (आ०), मोबाईल : 9471006315
ई–मेल : sharwankumarmla@gmail.com

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री

संदेश

केवल सच हिन्दी मासिक पत्रिका समूह को **"महामना भारत रत्न"** विशेषांक प्रकाशन की शुभकामनाएँ।

यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय जी को समर्पित यह विशेषांक वसुधैव कुटुंबकम और सर्वे भवन्तु सुखिनः के उद्देश्यों पर लक्षित है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पूरे देश में शिक्षा, अनुशासन और अपनी विद्वता की वजह से पहचाना जाता है। उसके संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय ऐसे क्रांतिकारी थे, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति का शंखनाद किया। उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

एक बार पुनः केवल सच हिन्दी मासिक पत्रिका को **"महामना भारत रत्न"** विशेषांक प्रकाशन हेतु अनन्त शुभकामनाएँ।

जोहार!

(हेमन्त सोरेन)

कांके रोड, रांची - 834 008 (झारखंड)
दूरभाष : 0651-2280886, 2280996, 2400233 फैक्स: 2280717, 2400232

S. K. MANDAL GROUP OF INSTITUTIONS, PATNA
Road No-3, East Patel Nagar, Near Gandhi Murti, Patna-800023
0612-2283169, 9771347996, 9341072401
krishna 54002@gmail.com www.skmgi.in

Ref. 118/2022 Date: 11/12/2022

शुभकामना संदेश

प्रसन्नता की बात है कि लोकप्रिय हिन्दी मासिक पत्रिका **"केवल सच"** द्वारा भारत रत्न मदन मोहन मालवीय के अवतरण दिवस के अवसर पर 25 दिसम्बर 2022 को भारत रत्न विशेषांग का प्रकाशन किया जा रहा है।

महान शिक्षाविद्, भारतीय संस्कृत के पुरोधा, समाज सुधारक, देशभक्त तथा राष्ट्र की सेवा में अपना पूरा जीवन समर्पित करने वाले काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय के प्रति हमारा देश कृतज्ञ है। उनके जीवन से आज की पीढ़ी अपना भविष्य संवारने का रास्ता ढूंढती है।

मैं **"केवल सच"** पत्रिका द्वारा प्रकाशित किए जाने वाले भारत रत्न विशेषांग के सफल प्रकाशन की मंगल कामना करता हूँ।

एस0 के0 मंडल
अध्यक्ष

S.K. MANDAL GROUP OF INSTITUTIONS * PATNA * CHAIRMAN

देश का सर्वोच्च सम्मान

भारत रत्न

सभ्यता, संस्कृति, धर्मनिरपेक्षता और न जाने कितने गुणों से परिपूर्ण आज की लगभग डेढ़ अरब की आबादी वाले भारत-हिन्दुस्तान-इंडिया, जिसे अन्य कई नामों से जाने जानेवाले देश की खोज जब वास्कोडिगामा जैसे इंसान ने की थी, अगर वह आज होते तो शायद उन्हें इस देश की खोज करने पर गर्व महसूस यह जानकर होता कि जिस देश की खोज उन्होंने की, वहां के लोग राष्ट्रहित के लिए अपनी कुर्बानी जंग में देकर या फिर अपने कला-कौशल से देश को गौरवान्वित किया है और कर रहे हैं और उनके योगदान को भारत, सम्मान करना जानता है। अपनी धरती माँ और देशवासियों की सुरक्षा में 24 घंटे तैनात वीर जवानों के लिए जहाँ परमवीर चक्र जैसे सम्मान हैं तो वहीं देश की मान-मर्यादा को सुशोभित करने के लिए 'भारत रत्न' जैसे सम्मान। यह सम्मान पाना प्रत्येक व्यक्ति के लिए गर्व की बात है और वर्ष 1954 से वर्ष 2019 तक कुल 48 विभूतियों को इस सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है। **केवल सच पत्रिका** अपने इस विशेषांक में उन शख्स को समर्पित कर रही है जो किसी परिचय के मोहताज नहीं। जी हाँ, "काशी हिन्दू विश्वविद्यालय" के संस्थापक सह महान स्वतंत्रता सेनानी महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की। साथ ही अन्य 47 वैसे विभूतियों की भी, जिनका उत्कृष्ट योगदान देश के सम्मान, विज्ञान, समाजसेवा, खेल, फिल्म और न जाने कितने तरह से दिये गये। हम पढ़ेंगे उन विभूतियों के बारे में, जिन्हे भारत रत्न सम्मान से सम्मानित कर इतिहास के पन्नों में सुनहरे अक्षरों से अंकित कर दिया गया। भारत रत्न के विशेषांक अंक में प्रस्तुत है संयुक्त संपादक **अमित कुमार** की समीक्षात्मक रिपोर्ट :-

भारत रत्न, भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है तथा यह सम्मान राष्ट्र की सेवा के लिए दिया जाता है। इन सेवाओं में कला, साहित्य, विज्ञान, सार्वजनिक सेवा तथा खेल शामिल है। बताते चले कि इस सम्मान की शुरूआत 2 जनवरी 1954 को भारत के तत्कालिक राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद द्वारा की गई थी। अन्य अलंकरणों के समान इस सम्मान को भी नाम के साथ पदवी के रूप में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। गौरतलब है कि प्रारंभ में इस सम्मान को मरणोपरान्त देने का प्रावधान नहीं था, किन्तु सन् 1955 के बाद में इसे जोड़ा गया। बताते चले कि भारत रत्न जैसे सम्मान को वर्ष में सिर्फ तीन व्यक्तियों को ही दिया जा सकता है, साथ ही अन्य प्रतिष्ठित

नागरिक सम्मान की श्रेणी में पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री का नाम लिया जा सकता है। सनद् रहे कि भारत रत्न से सम्मानित व्यक्तियों को पदक स्वरूप जो भेंट मिलता था, उसका डिजाइन 35 मिली मीटर गोलाकार स्वर्ण मैडल होता था। जिसमें सामने सूर्य बना होता था, ऊपर में हिन्दी में भारत रत्न लिखा होता था तथा नीचे पुष्पहार। वहीं पीछे से राष्ट्रीय चिन्ह् और मोटो होता था। फिर इस पदक के डिजाइन को बदलकर तांबे के बने पीपल के पत्ते पर प्लेटिनम का चमकता सूर्य बना दिया गया। जिसके नीचे चाँदी में भारत रत्न लिखा रहता है। भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित होने वालों को भारत सरकार द्वारा एक प्रमाणपत्र तथा एक पदक दिया जाता है। इस सम्मान के

भारत रत्न पुरस्कार विजेताओं की सूची

विजेताओं का नाम	वर्ष
सर्वपल्ली राधाकृष्णन	1954
चक्रवर्ती राजगोपालाचारी	1954
सी वी रमन	1954
भगवान दासो	1955
एम. विश्वेश्वरय्या	1955
जवाहर लाल नेहरू	1955
गोविंद बल्लभ पंत	1957
धोंडो केशव कर्वे	1958
बिधान चंद्र रॉय	1961
पुरुषोत्तम दास टंडन	1961
राजेन्द्र प्रसाद	1962
जाकिर हुसैन	1963
पांडुरंग वामन काने	1963
लाल बहादुर शास्त्री	1966
इंदिरा गांधी	1971
वी.वी. गिरि	1975
के. कामराजी	1976
मदर टेरेसा	1980
विनोबा भावे	1983
अब्दुल गफ्फार खान	1987
एमजी रामचंद्रन	1988
बीआर अम्बेडकर	1990
नेल्सन मंडेला	1990
राजीव गांधी	1991
वल्लभभाई पटेल	1991
मोरारजी देसाई	1991
अबुल कलाम आजाद	1992
जेआरडी टाटा	1992
सत्यजीत रे	1992
गुलजारीलाल नंद	1997
अरुणा आसफ अली	1997
ए पी जे अब्दुल कलाम	1997
एमएस सुब्बुलक्ष्मी	1998
चिदंबरम सुब्रमण्यम	1998
जयप्रकाश नारायण	1999
अमर्त्य सेन	1999
गोपीनाथ बोरदोलोई	1999
रवि शंकर	1999
लता मंगेशकरी	2001
बिस्मिल्लाह खान	2001
भीमसेन जोशी	2009
सीएनआर राव	2014
सचिन तेंडुलकर	2014
मदन मोहन मालवीय	2015
अटल बिहारी वाजपेयी	2015
प्रणब मुखर्जी	2019
भूपेन हजारिका	2019
नानाजी देशमुख	2019

साथ किसी भी प्रकार की कोई धनराशि नहीं दी जाती परन्तु विभिन्न सरकारी विभागों से सुविधाएं मिलती हैं। उदाहरण के लिए भारत रत्न प्राप्त करने वालों को प्रोटोकॉल में राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, पूर्व राष्ट्रपति, उपप्रधानमंत्री, मुख्य न्यायाधीश, लोकसभा अध्यक्ष, कैबिनेट मंत्री, मुख्यमंत्री, पूर्व प्रधानमंत्री और संसद के दोनों सदनों में विपक्ष के नेता के बाद स्थान दिया जाता है। वही बता दें देश के सबसे बड़ा नागरिक सम्मान पुरस्कार हर किसी को नहीं मिलता है लेकिन जिन लोगों को यह पुरस्कार राष्ट्रपति द्वारा दिया जाता है वह कोई आम लोग नहीं होते हैं। भारत का सबसे बड़ा नागरिक सम्मान पुरस्कार भारत रत्न है जो 1 साल में अधिकत्तम तीन लोगों को दिया जाता है। भारत रत्न अपने क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाले लोगों को दिया जाता है बिना किसी धर्म जाति लिंग को देखते हुए। देश के राष्ट्रपति का प्रधानमंत्री द्वारा भारत रत्न खिताब के लिए लोगों के नाम प्रस्तावित किए जाते हैं, जिसके बाद राष्ट्रपति भवन में एक समारोह आयोजित करके भारत रत्न विजेताओं को भारत रत्न दिए जाते हैं। 1954 में पहली बार भारत रत्न (सर्वपल्ली राधाकृष्णन, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी और सी वी रमन) को मिला था। कोरोना महामारी के कारण पिछले तीन वर्षो से भारत रत्न किसी को नहीं दिया गया, लेकिन जल्द ही भारत सरकार भारत में रहे विजेताओं के नाम जारी करेगी।

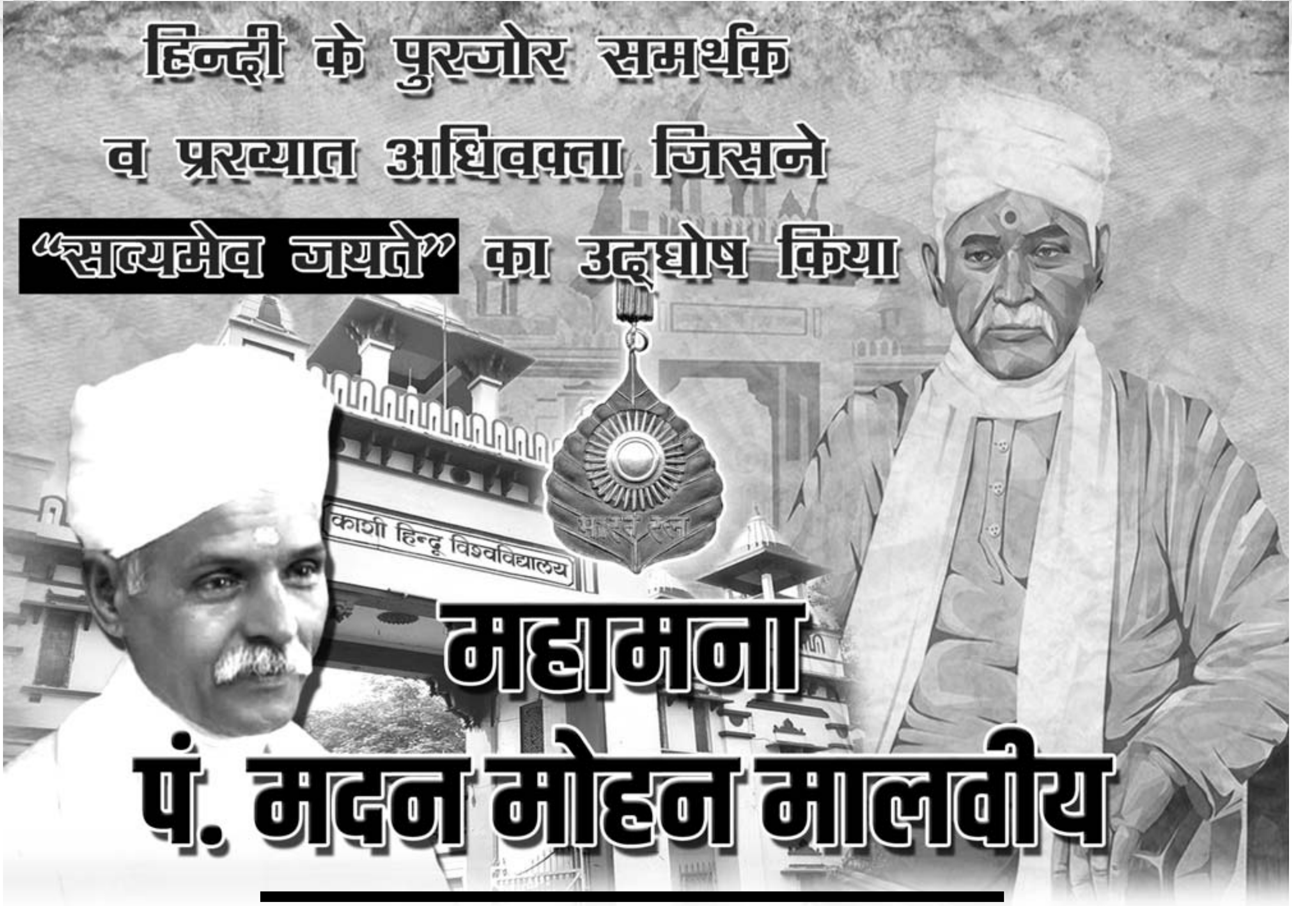

काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के संस्थापक महामना पंडित मदन मोहन मालवीय को सरकार ने वर्ष 2015 में मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया। ज्ञात हो कि बीएचयू ने देश को कई राजनेता, कलाकार, गायक, कवि, लेखक, खिलाड़ी और वैज्ञानिक दिए हैं। बहरहाल, पंडित मदन मोहन मालवीय ने भारत को वह देकर गये जिसका गुणगान देश ही नहीं वरन विदेशों में भी है। उनमें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण है। हिन्दी के उत्थान में मालवीय जी की भूमिका ऐतिहासिक है। कांग्रेस के निर्माताओं में विख्यात मालवीय जी ने उसके द्वितीय अधिवेशन (कलकत्ता-1886) से लेकर अपनी अन्तिम साँस तक स्वराज्य के लिये कठोर तप किया। पंडित मदन मोहन मालवीय ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेकर 35 साल तक कांग्रेस की सेवा की। उन्हें सन् 1909, 1918, 1930 और 1932 में कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया। वही नरम और गरम दलों के बीच की कड़ी मालवीय जी ही थे जो गाँधी युग की कांग्रेस में हिन्दू मुसलमानों एवं उसके विभिन्न मतों में सामंजस्य स्थापित करने में प्रयत्नशील रहे। गौरतलब हो कि मालवीय जी एक प्रख्यात वकील भी थे। एक वकील के रूप में उनकी सबसे बड़ी सफलता चौरी चौरा कांड के अभियुक्तों को फांसी से बचा लेने की थी। चौरी-चौरा कांड में 170 भारतीयों को सजा-ए-मौत देने का ऐलान किया गया था, लेकिन महामना ने अपनी योग्यता और तर्क के बल पर 151 लोगों को फांसी के फंदे से छुड़ा लिया था। मालवीय जी ने ही कांग्रेस के सभापति के रूप में सुझाया था कि ''सत्यमेव जयते'' को भारत का राष्ट्रीय उद्घोष वाक्य स्वीकार किया जाये, तब मदन मोहन मालवीय को महामना की उपाधि महात्मा गांधी ने दी थी। बापू उन्हें अपना बड़ा भाई मानते थे। बताते चले कि सनातन धर्म व हिन्दू संस्कृति की रक्षा और संवर्धन में मालवीय जी का योगदान अतुलनीय है। जनबल तथा मनोबल में नित्य क्षयशील हिन्दू जाति को विनाश से बचाने के लिये उन्होंने हिन्दू संगठन का शक्तिशाली आन्दोलन चलाया और स्वयं अनुदार सहधर्मियों के तीव्र प्रतिवाद झेलते हुए भी कलकत्ता, काशी, प्रयाग और नासिक में भंगियों को धर्मोपदेश और मंत्रदीक्षा दी। उन्होंने हरिद्वार में हरी की पौड़ी पर गंगा आरती का आयोजन किया, जो आज तक चल रहा है। इन महान विभूति का देश के प्रति उत्कृष्ट योगदान पर प्रस्तुत है पत्रिका के संयुक्त संपादक अमित कुमार की समीक्षात्मक रिपोर्ट :-

पंडित मदन मोहन मालवीय का जन्म प्रयाग में, जिसे स्वतन्त्र भारत में इलाहाबाद कहा जाता है में 25 दिसम्बर 1861 को पंडित ब्रजनाथ व मूनादेवी के यहाँ हुआ था। वे अपने माता-पिता से उत्पन्न कुल सात भाई बहनों में पाँचवें पुत्र थे। मध्य के मालवा प्रान्त से प्रयाग आ बसे उनके पूर्वज मालवीय कहलाते थे। आगे चलकर यही जातिसूचक नाम उन्होंने भी अपना लिया। उनके पिता पंडित ब्रजनाथ जी संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे। वे श्रीमद् भागवत की कथा सुनाकर अपनी आजीविका अर्जित करते थे। पाँच वर्ष की आयु में उन्हें उनके माँ-बाप ने संस्कृत भाषा में प्रारम्भिक शिक्षा लेने हेतु पण्डित हरदेव धर्म ज्ञानोपदेश पाठशाला में भर्ती करा दिया जहाँ से उन्होंने प्राइमरी परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके पश्चात वे एक अन्य विद्यालय में भेज दिये गये जिसे प्रयाग की विद्या वर्धिनी सभा संचालित करती थी। यहाँ से शिक्षा पूर्ण कर वे इलाहाबाद के जिला स्कूल पढने गये। यहीं उन्होंने मकरंद के उपनाम से कवितायें लिखनी प्रारम्भ कीं। उनकी कवितायें पत्र-पत्रिकाओं में खूब छपती थीं। लोगबाग उन्हें चाव से पढते थे। 1879 में उन्होंने म्योर सेण्ट्रल कॉलेज, जो आजकल इलाहाबाद विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है, मैट्रीकुलेशन (दसवीं की परीक्षा) उत्तीर्ण की। हैरिसन स्कूल के प्रिन्सिपल ने उन्हें छात्रवृत्ति देकर कलकत्ता विश्वविद्यालय भेजा जहाँ से उन्होंने 1884 ई. में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की।

मालवीय जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रणेता तो थे ही इस युग के आदर्श पुरुष भी थे। वे भारत के पहले और अन्तिम व्यक्ति थे जिन्हें महामना की सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया गया। पत्रकारिता, वकालत, समाज सुधार, मातृ-भाषा तथा भारत माता की सेवा में अपना जीवन अर्पण करने वाले इस महामानव ने जिस विश्वविद्यालय की स्थापना

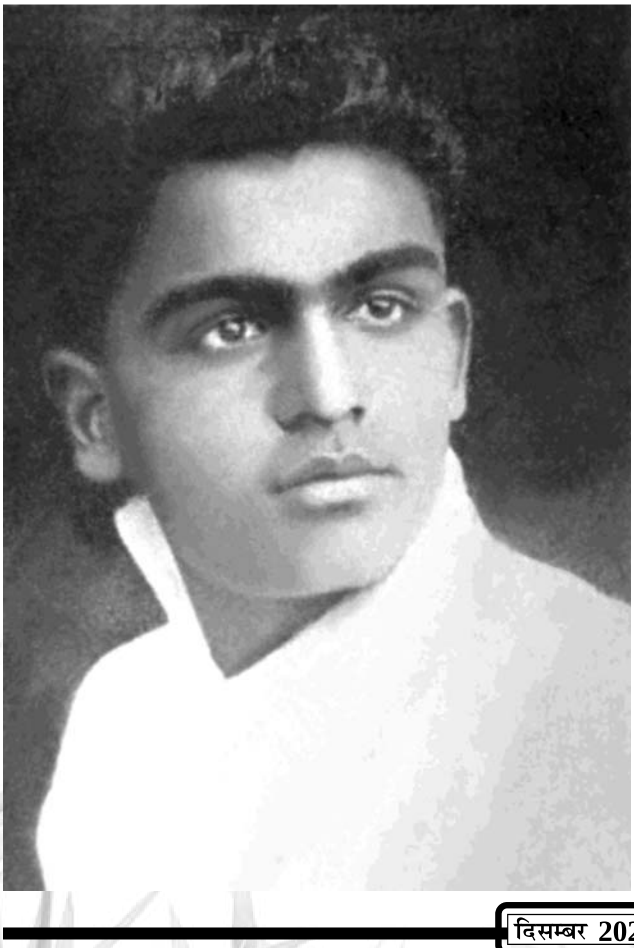

की उसमें उनकी परिकल्पना ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षित करके देश सेवा के लिये तैयार करने की थी जो देश का मस्तक गौरव से ऊँचा कर सकें। मालवीय जी सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, देशभक्ति तथा आत्मत्याग में अद्वितीय थे। इन समस्त आचरणों पर वे केवल उपदेश ही नहीं दिया करते थे अपितु स्वयं उनका पालन भी किया करते थे। वे अपने व्यवहार में सदैव मृदुभाषी रहे। कर्म ही उनका जीवन था। अनेकों संस्थाओं के जनक एवं सफल संचालक के रूप में उनकी अपनी विधि व्यवस्था का सुचारु सम्पादन करते हुए उन्होंने कभी भी रोष अथवा कड़ी भाषा का प्रयोग नहीं किया। अपने हृदय की महानता के कारण सम्पूर्ण भारतवर्ष में 'महामना' के नाम से पूज्य मालवीय जी को संसार में सत्य, दया और न्याय पर आधारित सनातन धर्म सर्वाधिक प्रिय था। करुणामय हृदय, भूतानुकम्पा, मनुष्यमात्र में अद्वेष, शरीर, मन और वाणी के संयम, धर्म और देश के लिये सर्वस्व त्याग, उत्साह और धैर्य, नैराश्यपूर्ण परिस्थितियों में भी आत्मविश्वास पूर्वक दूसरों को असंभव प्रतीत होने वाले कर्मों का संपादन, वेशभूषा और आचार विचार में मालवीय जी भारतीय संस्कृति के प्रतीक तथा ऋषियों के प्राणवान स्मारक थे। यह आदर्श उन्हें बचपन में ही अपने पितामह प्रेमधार चतुर्वेदी, जिन्होंने 108 दिन निरन्तर 108 बार श्रीमद् भागवत का पारायण किया था से राधा-कृष्ण की अनन्य भक्ति, पिता ब्रजनाथ जी की भागवत-कथा से धर्म-प्रचार एवं माता मूनादेवी से दुखियों की सेवा करने का स्वभाव प्राप्त हुआ था। धनहीन किन्तु

निर्लोभी परिवार में पलते हुए भी देश की दरिद्रता तथा अर्थार्थी छात्रों के कष्ट निवारण के स्वभाव से उनका जीवन ओतप्रोत था। बचपन में जिन आचार विचारों का निर्माण हुआ उससे रेल में, जेल में तथा जलयान में कहीं पर भी प्रातरूसायं सन्धयोपासना तथा श्रीमद्भागवत और महाभारत का स्वाधयाय उनके जीवन का अभिन्न अंग बना रहा। वह अखाड़े में व्यायाम और सितार पर शास्त्रीय संगीत की शिक्षा वे बराबर देते रहे। उनका व्यायाम करने का नियम इतना अद्भुत था कि साठ वर्ष की अवस्था तक वे नियमित व्यायाम करते ही रहे। सात वर्ष के मदन मोहन को धर्मज्ञानोपदेश पाठशाला के मेले में ले जाकर मूढ़े पर खड़ा करके व्याख्यान दिलवाते थे। शायद इसका ही परिणाम था कि कांग्रेस के द्वितीय अधिवेशन में अंग्रेजी के प्रथम भाषण से ही प्रतिनिधियों को मंत्रमुग्ध कर देने वाले मृदुभाषी (सिलवर टंग्ड) मालवीय जी उस समय विद्यमान भारत देश के सर्वश्रेष्ठ हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी के व्याख्यान वाचस्पतियों में इतने अधिक प्रसिद्ध हुए। हिन्दू धर्मोपदेश, मंत्रदीक्षा और सनातन धर्म प्रदीप ग्रथों में उनके धार्मिक विचार आज भी उपलब्ध हैं जो भारत देश की विभिन्न समस्याओं पर बड़ी कौंसिल से लेकर असंख्य सभा सम्मेलनों में दिये गये हजारों व्याख्यानों के रूप में भावी पीढ़ियों के उपयोगार्थ प्रेरणा और ज्ञान के अमित भण्डार हैं। उनके बड़ी कौंसिल में रौलट बिल के विरोध में निरन्तर साढ़े चार घण्टे और अपराध निर्मोचन (अंग्रेजी) Indemnity) बिल पर पाँच घण्टे के भाषण निर्भयता और गम्भीरतापूर्ण दीर्घवक्तता के लिये आज भी स्मरणीय हैं। उनके उद्घरणों में हृदय को स्पर्श करके रुला देने की क्षमता थी, परन्तु वे अविवेकपूर्ण कार्य के लिये श्रोताओं को कभी उकसाते नहीं थे। म्योर कालेज के मानसगुरु महामहोपाध्याय पंद्ग आदित्यराम भटाचार्य के साथ 1880 ई० में स्थापित हिन्दू समाज में मालवीयजी भाग ले ही रहे थे कि उन्हीं दिनों प्रयाग में वाइसराय लार्ड रिपन का आगमन हुआ। रिपन जो स्थानीय स्वायत्त शासन स्थापित करने के कारण भारतवासियों में जितने लोकप्रिय थे उतने ही अंग्रेजों के कोपभाजन भी। इसी कारण प्रिसिपल हैरिसन के कहने पर उनका स्वागत संगठित करके मालवीयजी ने प्रयाग वासियों के हृदय में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया।

सनद् रहे कि अपने काल में पंडित मालवीय जी ने न जाने कितने उल्लेखनीय कार्य किए, जिससे वह देश ही नहीं वरन विदेशों में भी उनकी ख्याति सुनने को मिलती है। बताते चले कि कालाकाँकर के देशभक्त राजा रामपाल सिंह के अनुरोध पर मालवीय जी ने उनके हिन्दी अंग्रेजी समाचार पत्र हिन्दुस्तान का 1887 से सम्पादन करके दो ढ़ाई साल तक जनता को जगाया। उन्होंने कांग्रेस के ही एक अन्य नेता पं० अयोध्यानाथ का उनके इंडियन ओपीनियन के सम्पादन में भी हाथ बँटाया और 1907 ई० में साप्ताहिक अभ्युदय को निकालकर कुछ समय तक उसे भी सम्पादित किया। यही नहीं सरकार समर्थक समाचार पत्र पायोनियर के समकक्ष 1909 में दैनिक लीडर अखबार निकालकर लोकमत निर्माण का महान कार्य सम्पन्न किया तथा दूसरे वर्ष मर्यादा पत्रिका भी प्रकाशित की। इसके बाद उन्होंने 1924 ई0 में दिल्ली आकर हिन्दुस्तान टाइम्स को सुव्यवस्थित किया तथा सनातन धर्म को गति प्रदान करने हेतु लाहौर से विश्वबन्ध्य जैसे अग्रणी पत्र को प्रकाशित करवाया। हिन्दी के उत्थान में मालवीय जी की भूमिका ऐतिहासिक है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के नेतृत्व में हिन्दी गद्य के निर्माण में संलग्न मनीषियों में 'मकरंद' तथा 'झक्कड़ सिंह' के उपनाम से विद्यार्थी जीवन में रसात्मक काव्य रचना के लिये ख्यातिलब्धा मालवीय जी ने देवनागरी लिपि

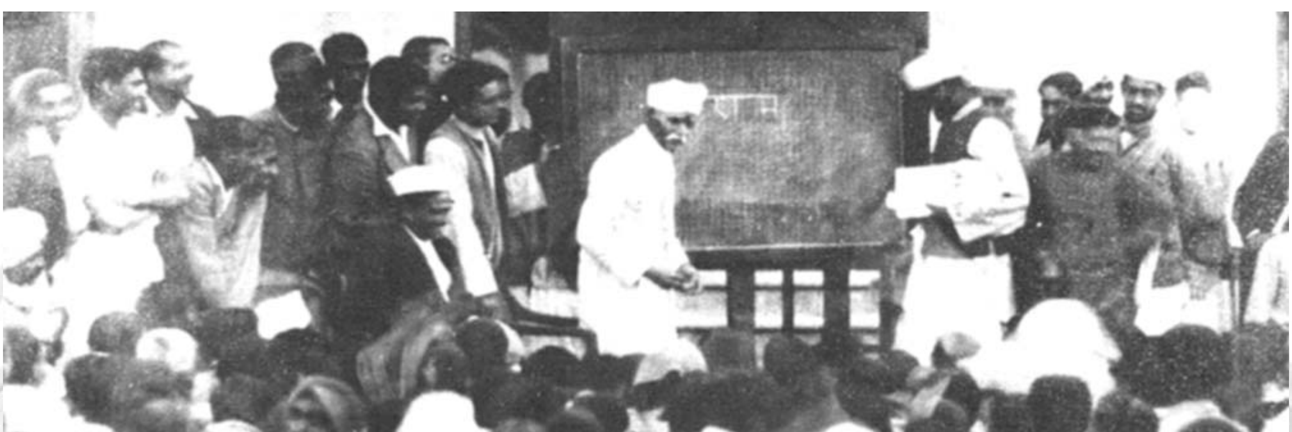

महामना का मातृभाषा के प्रति समर्पण

महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी एक महान् देशभक्त और राजनेता थे ही परन्तु उन्होंने देश एवं समाज से जुड़े हुए अनेक क्षेत्रों में कार्य किया और हर क्षेत्र में अपना अप्रतिम स्थान बनाना। वे एक महान् शिक्षाविद्, प्रखर पत्रकार, अद्वितीय वक्ता, कुशल अधिवक्ता, श्रेष्ठ समाज सेवी, लोकोपकारी धर्मप्रणेता, परमार्थ के क्षेत्र में एक महान् भिक्षु के साथ ही, वे स्वदेशी, स्वभाषा तथा हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं के उन्नयन के लिये पूर्ण समर्पित थे। वे भारत की राष्ट्रभाषा आन्दोलन के जनक थे। उनके कारण ही भारतीय भाषाओं में नवयुग का उदय हुआ। हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय भी मालवीय जी को जाता है। वे देशभक्ति के लिए मातृभाषा के प्रति प्रेम आवश्यक मानते थे। उनका दृढ़ मत था कि साहित्य और देश की उन्नति अपने देश की भाषा के द्वारा ही हो सकती है। हिन्दी के प्रति उनके उत्कृष्ट लगाव का यही कारण था। हिन्दी भाषा के साथ नागरी लिपि के भी वह प्रबल समर्थक थे। वे फारसी या रोमन लिपि में हिन्दी लिखने का विरोध करते थे। मालवीय जी का मत था कि हिन्दी "संस्कृत की पुत्री" है और सभी भारतीय भाषायें आपस में बहनें हैं। हिन्दी उनमें बड़ी बहन है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मालवीय जी का हिन्दी प्रेम किसी विवशतावश नहीं था, वे हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी तथा उर्दू में भी धारा प्रवाह बोलते और लिखते थे। उनके अंग्रेजी भाषा के उच्चारण, शब्दों के चयन और व्याकरण की शुद्धता से अंग्रेज भी मोहित हो जाते थे।

☞ **न्यायालयों में हिन्दी और देवनागरी लिपि प्रयोग :-** महामना मालवीय जी ने देवनागरी लिपि की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। इसके गुणों की चर्चा करते हुये वे अन्य भाषा के विद्वानों के मतों को भी उद्धृत करते थे। प्रोफेसर मोनिया विलियम्स का कथन है- "स्थूल रूप से कहा जा सकता है कि देवनागरी अक्षर से बढ़कर पूर्ण और उत्तम अक्षर दूसरे नहीं है"। उन्होंने इसे देवनिर्मित तक कहा है। मालवीय जी का मानना था कि संसार में यदि कोई सर्वांगपूर्ण अक्षर है तो वह नागरी के हैं, प्रत्येक शब्द का उच्चारण देखने मात्र से ज्ञात हो जाता है। संस्कृत भाषा की यही लिपि है। नागरी लिपि में लिखे हुये शब्दों को उसका अर्थ न जानने वाला भी सुगमता और शुद्धतापुर्वक पढ़ सकता है।

☞ **काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी माध्यम :-** काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के समय, मालवीय जी के कई सहयोगियों की यह धारणा थी कि विश्वविद्यालय में प्रारम्भ में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रखा जाय जिससे दक्षिण तथा पूर्व प्रान्तों में विद्यार्थियों तथा अध्यापकों को कोई असुविधा न हो मालवीय जी इस विचार से सहमत नहीं थे। उनका कहना था कि अगर यह सनातन सत्य है कि शिक्षा का प्रभावी माध्यम मातृभाषा है तो उसका प्रयोग प्रारम्भ से ही होना चाहिए, नहीं तो पुस्तकों के निर्माण में विलम्ब होता रहेगा और अंग्रेजी माध्यम निरन्तर चलता रहेगा। मालवीय जी का यह कथन कितना सत्य था वह आज की परिस्थिति से सभी को विदित है। सन् 1929 ई. में मालवीय जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में दीक्षान्त भाषण दिया। इस अवसर पर भी आपने शिक्षा के प्रभावी माध्यम के रूप में हिन्दी की चर्चा की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की स्थापना से ही संचालकों का ध्रुवतम है कि शिक्षा का माध्यम उच्च कक्षाओं में भी हिन्दी को किन्तु विशेष परिस्थितियों के कारण अभी इसे क्रियान्वित नहीं किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि "अभी हमारी राष्ट्रभाषा को अंग्रेजी का स्थान ग्रहण करने में कुछ समय अवश्य लगेगा।

☞ **काशी हिन्दू वि.वि. में हिन्दी भाषा का पठन-पाठन :-** हिन्दी शिक्षा का माध्यम तो नहीं बन पायी किन्तु एक भाषा के रूप में वह बी. ए. की कक्षाओं में पढ़ाई जाने लगी। स्नातकोत्तर स्तर पर भी हिन्दी को एक विषय के रूप में पढ़ाया जाने लगा। कलकत्ता विश्वविद्यालय के बाद स्नातकोत्तर कक्षाओं में हिन्दी का पठन-पाठन प्रारम्भ करने वाला काशी हिन्दू विश्वविद्यालय दूसरा विश्वविद्यालय हुआ। सन् 1922 ई. में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना हुई। यहीं बाबू श्यामसुन्दर दास, पण्डित रामचन्द्र शकुल, पण्डित अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', बाबू भगवान् दीन जैसे विद्वानों का सान्निध्य हिन्दी प्रेमी विद्यार्थियों का प्राप्त होता था। महात्मा गाँधी जी ने मालवीय जी ने देवनागरी लिपि और हिन्दी के प्रचार-प्रसार के प्रयास को 1942 ई. के कशी हिन्दू विश्वविद्यालय के रजत जयन्ती के दीक्षान्त भाषण में खूब सराहा और मालवीय जी ने भी गाँधी जी को आश्वस्त किया कि निकट भविष्य में जैसे ही पाठ्य पुस्तकें हिन्दी भाषा में तैयार हो जायेगी, शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो जायेगा।

☞ **अनुवाद के पक्षधर :-** मालवीय जी का सदैव आग्रह रहता था कि विश्व की श्रेष्ठ पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर हिन्दी भाषी जनता को उपलब्ध कराना चाहिए। प्रायः इस विश्व में, वे अंग्रेजी के लेखकों का उदाहरण देते थे। दृष्टान्त किए रूप में कहते थे "अंग्रेजी अपनी भाषा में संसार की जब उन्नत भाषाओं के उत्त्मोतम ग्रन्थों का अनुवाद कर डाले हैं। संस्कृत के ऊँचे-ऊँचे काव्य नाटकों का, चारों वेदों का, वाल्मीकि रामायण तथा तुलसीदास के रामचरित मानस का और आल्हा-रुदल तक का अनुवाद कर लिया है।

☞ **हिन्दी माध्यम द्वारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा :-** मालवीय जी भारत के गौरवशाली अतीत को पुनः प्रतिस्थापित करने के लिये आधुनिक विज्ञान और तकनीकी की शिक्षा को आवश्यक मानते थे। वे आधनिक विज्ञान की शिक्षा को जन-जन तक ले जाना चाहते थे। यह तभी संभव हो सकता था जब शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो। विज्ञान और तकनीकी राष्ट्र की धरोहर तभी बन सकती है जब उसकी शिक्षा का माध्यम मातृभाषा बनेगी। उनका दृढ़ मत था कि भारतीय आसानी से विज्ञान की शिक्षा भारतीय भाषाओं के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। महामना का स्पष्ट मत था कि अंग्रेजी जैसी दुरूह भाषा को सीखने में जितना समय छात्र लगायेगा उसमें वह विज्ञान तथा तकनीकी के प्रायोगिक ज्ञान को प्राप्त कर सकता है। मालवीय जी को इस बात की पूरी कल्पना थी कि हिन्दी में विज्ञान तथा तकनीकी की पुस्तकों के निर्माण का कार्य दुरूह, श्रम-साध्य तथा दीर्घकालिक होगा किन्तु जो कार्य आवश्यक हो उसे प्रारम्भ से ही करना चाहिये। चाहे वह कितना ही कष्टकारक, कठिन और समय लेने वाला हो। ऐसे कार्य धीरज तथा श्रम से अवश्य पूर्ण कर लिये जायेंगे। हमारी तरह ऐसे और भी राष्ट्र-विश्व में थें। जिनके पास राष्ट्रीय धरोहर के रूप में विज्ञान तथा तकनीकी पुस्तकें नहीं थी किन्तु उन्होंने अपनी मातृभाषा से ही चमत्कारिक कार्य कर दिखाया। इस सन्दर्भ में मालवीय जी प्रायः जापान का उदाहरण देते थे।

और हिन्दी भाषा को पश्चिमोत्तर प्रदेश व अवध के गवर्नर सर एंटोनी मैकडोनेल के सम्मुख 1898 ई० में विविधा प्रमाण प्रस्तुत करके कचहरियों में प्रवेश दिलाया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन (काशी-1910) के अध्यक्षीय अभिभाषण में हिन्दी के स्वरूप निरूपण में उन्होंने कहा कि उसे फारसी अरबी के बड़े बड़े शब्दों से लादना जैसे बुरा है, वैसे ही अकारण संस्कृत शब्दों से गूँथना भी अच्छा नहीं और भविष्यवाणी की कि एक दिन यही भाषा राष्ट्रभाषा होगी। सम्मेलन के एक अन्य वार्षिक अधिवेशन (बम्बई-1919) के सभापति पद से उन्होंने हिन्दी उर्दू के प्रश्न को, धर्म का नहीं अपितु राष्ट्रीयता का प्रश्न बतलाते हुए उद्घोष किया कि साहित्य और देश की उन्नति अपने देश की भाषा द्वारा ही हो सकती है। समस्त देश की प्रान्तीय भाषाओं के विकास के साथ-साथ हिन्दी को अपनाने के आग्रह के साथ यह भविष्यवाणी भी की कि कोई दिन ऐसा भी आयेगा कि जिस भाँति अंग्रेजी विश्व भाषा हो रही है उसी भाँति हिन्दी का भी सर्वत्र प्रचार होगा। इस प्रकार उन्होंने हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय रूप का लक्ष्य भी दिया। कांग्रेस के निर्माताओं में विख्यात मालवीय जी ने उसके द्वितीय अधिवेशन (कलकत्ता-1886) से लेकर अपनी अन्तिम साँस तक स्वराज्य के लिये कठोर तप किया। उसके प्रथम उत्थान में नरम और गरम दलों के बीच की कड़ी मालवीय जी ही थे जो गाँधी युग की कांग्रेस में हिन्दू मुसलमानों एवं उसके विभिन्न मतों में सामंजस्य स्थापित करने में प्रयत्नशील रहे। एनी बेसेंट ने ठीक कहा था कि, ''मैं दावे के साथ कह सकती कि विभिन्न मतों के बीच, केवल मालवीय जी भारतीय एकता की मूर्ति बने खड़े हुए हैं।'' असहयोग आन्दोलन के आरम्भ तक नरम दल के नेताओं के कांग्रेस को छोड़ देने पर मालवीय जी उसमें डटे रहे और कांग्रेस ने उन्हें चार बार सभापति निर्वाचित करके सम्मानित किया। लाहौर (1909 में), दिल्ली (1918 और 1931 में) तथा कलकत्ता (1933 में)। यद्यपि अन्तिम दोनों बार वे सत्याग्रह के कारण पहले ही गिरफ्तार कर लिये गये। स्वतंत्रता के लिये उनकी तड़प और प्रयासों के परिचायक फैजपुर कांग्रेस (1936) में राष्ट्रीय सरकार और चुनाव प्रस्ताव के समर्थन में मालवीय जी के ये शब्द स्मरणीय हैं कि मैं पचास वर्ष से कांग्रेस के साथ हूँ। सम्भव है मैं बहुत दिन न जियूँ और अपने जी में यह कसक लेकर मरूँ कि भारत अब भी पराधीन है। किंतु फिर भी मैं यह आशा करता हूँ कि मैं इस भारत को स्वतंत्र देख सकूँगा। इतना ही नहीं असहयोग आंदोलन के चतुसूत्री कार्यक्रम में शिक्षा संस्थाओं के बहिष्कार का मालवीय जी ने खुलकर विरोध किया जिसके कारण उनके व्यक्तित्व के प्रभाव से हिन्दू विश्वविद्यालय पर उसका अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। 1921 ई० में कांग्रेस के नेताओं तथा स्वयं सेवकों से जेल भर जाने पर किंकर्तव्यविमूढ़ वाइसराय लॉर्ड रीडिंग को प्रान्तों में स्वशासन देकर गाँधी जी से संधि कर लेने को मालवीय जी ने भी सहमत

कर लिया था परन्तु 4 फरवरी 1922 के चौरीचौरा काण्ड ने इतिहास को पलट दिया। गाँधी जी ने बारदौली की कार्यकारिणी में बिना किसी से परामर्श किये सत्याग्रह को अचानक रोक दिया। इससे कांग्रेस जनों में असन्तोष फैल गया और यह खुसुर-पुसुर होने लगी कि बड़ा भाई के कहने में आकर गान्धी जी ने यह भयंकर भूल की है। गांधी जी स्वयं भी पाँच साल के लिये जेल भेज दिये गये। इसके परिणामस्वरूप चिलचिलाती धूप में 61 वर्ष के बूढ़े मालवीय ने पेशावर से डिबरूगढ़ तक तूफानी दौरा करके राष्ट्रीय चेतना को जीवित रखा। इस भ्रमण में उन्होंने बहुत बार कुख्यात धारा 144 का उल्लंघन भी किया जिसे सरकार खून का घूँट समझकर पी गयी। परन्तु 1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में उसी ब्रिटिश सरकार ने उन्हें बम्बई में गिरफ्तार कर लिया जिस पर श्रीयुत् भगवान दास (भारतरत्न) ने कहा था कि मालवीय जी का पकड़ा जाना राष्ट्रीय यज्ञ की पूर्णाहुति समझी जानी चाहिये। उसी साल दिल्ली में अवैध घोषित कार्यसमिति की बैठक में मालवीयजी को पुनः बन्दी बनाकर नैनी जेल भेज दिया गया। यह उनकी जीवनचर्या तथा वृद्धावस्था के कारण यथार्थ में एक प्रकार की तपस्या थी। परन्तु सैद्धान्तिक मतभेद के कारण हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रिंस ऑव वेल्स का स्वागत और कांग्रेस स्वराज्य पार्टी के समकक्ष कांग्रेस स्वतंत्र दल व रैमजे मैकडनल्ड के साम्प्रदायिक निर्णय पर, जिसकी स्वीकृति को मालवीय जी ने राष्ट्रीय आत्महत्या माना। इस प्रकार कांग्रेस की अस्वीकार नीति के कारण निर्णय विरोधी सम्मेलन और राष्ट्रीय कांग्रेस दल का पुनः संगठन करने जैसे उनके कांग्रेस विरोध के उदाहरण भी इतिहास उल्लेखनीय हैं।

गौरतलब है कि सनातन धर्म व हिन्दू संस्कृति की रक्षा और संवर्धन में मालवीय जी का योगदान अनन्य है। जनबल तथा मनोबल में नित्य क्षयशील हिन्दू जाति को विनाश से बचाने के लिये उन्होंने हिन्दू संगठन का शक्तिशाली आन्दोलन चलाया और स्वयं अनुदार सहधर्मियों के तीव्र प्रतिवाद झेलते हुए भी कलकत्ता, काशी, प्रयाग और नासिक में भंगियों को धर्मोपदेश और मंत्रदीक्षा दी। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रनेता मालवीय जी ने, जैसा स्वयं पं० जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है, अपने नेतृत्वकाल में हिन्दू महासभा को राजनीतिक प्रतिक्रियावादिता से मुक्त रखा और अनेक बार धर्मो के सह अस्तित्व में अपनी आस्था को अभिव्यक्त किया। प्रयाग के भारती भवन पुस्तकालय, मैकडोनेल यूनिवर्सिटी हिन्दू छात्रालय और मिण्टो पार्क के जन्मदाता, बाढ़, भूकम्प, सांप्रदायिक दंगों व मार्शल ला से त्रस्त दु:खियों के आँसू पोंछने वाले मालवीय जी को ऋषिकुल हरिद्वार, गोरक्षा और आयुर्वेद सम्मेलन तथा सेवा समिति, ब्वाय स्काउट तथा अन्य कई संस्थाओं को स्थापित अथवा प्रोत्साहित करने का श्रेय प्राप्त हुआ, किन्तु उनका अक्षय-कीर्ति-स्तम्भ तो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ही है जिसमें

जब पंडित मालवीय ने निजाम की जूती नीलाम कर दी

पंडित मदन मोहन मालवीय का व्यक्तित्व जुदा किस्म का था। वे कोई संकल्प कर लेते थे तो पूरी जिद के साथ उसे पूरा करते थे। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना। पढ़िए इससे जुड़े कुछ किस्से :-

☞ कुंभ के मेले में मिली चंदे की प्रेरणा पंडित मदन मोहन मालवीय एक बार त्रिवेणी संगम पर कुंभ के मेले में थे। वहां उन्होंने लोगों को बताया कि वे काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना करना चाहते हैं। यह सुनकर एक वृद्धा सामने आई। उसने अपने योगदान के रूप में पंडित मालवीय को एक पैसा दिया। वहीं से पंडित मालवीय को यह प्रेरणा मिली कि वे चंदा इकट्ठा कर विश्वविद्यालय बना सकते हैं।

☞ निजाम की जूती लेकर चारमीनार पहुंच गए पंडित मालवीय 4 फरवरी 1916 को काशी हिंदू विश्वविद्यालय की नींव रख दी गई थी। लेकिन इसे विकसित करने के मकसद से चंदा जुटाने के लिए पंडित मालवीय पूरे देश का दौरा कर रहे थे। वे हैदराबाद पहुंचे। निजाम से मिले। लेकिन निजाम ने उन्हें मदद करने से इनकार कर दिया। पंडित मालवीय हार मानने वाले नहीं थे। वे जिद पर अड़े रहे। इस पर निजाम ने कहा कि मेरे पास दान में देने के लिए सिर्फ अपनी जूती है। पंडित मालवीय राजी हो गए। महामना निजाम की जूती ले गए और हैदराबाद में चारमीनार के पास उसकी नीलामी लगा दी। निजाम की मां चारमीनार के पास से बंद बग्घी में गुजर रही थीं। भीड़ देखकर जब उन्होंने पूछा तो पता चला कि कोई जूती 4 लाख रुपए में नीलाम हुई है और वह जूती निजाम की है। उन्हें लगा कि बेटे की जूती नहीं इज्ज्जत बीच शहर में नीलाम हो रही है। उन्होंने फौरन निजाम को सूचना भिजवाई। निजाम ने पंडित मालवीय को बुलवाया और शर्मिंदा होकर बड़ा दान दिया।

☞ एक और कहानी यह है कि निजाम के इनकार के बाद जब पंडित मालवीय महल से बाहर आए तो पास ही एक शव-यात्रा गुजर रही थी। जिस व्यक्ति का निधन हुआ था वह हैदराबाद का धनी सेठ था। शव-यात्रा के दौरान गरीबों को पैसा बांटा जा रहा था। पंडित मालवीय ने भी हाथ आगे बढ़ा दिया। एक व्यक्ति ने उनसे कहा कि लगता तो नहीं कि आपको इस पैसे की जरूरत है। इस पर वे बोले- भाई क्या करूं? तुम्हारे निजाम के पास तो मुझे देने के लिए कुछ नहीं है। खाली हाथ काशी लौटूंगा तो क्या कहूंगा कि निजाम ने कुछ नहीं दिया? ... इसके बाद निजाम ने उन्हें बुलवाया और मदद की। पेशावर से लेकर कन्याकुमारी तक महामना ने विश्वविद्यालय के लिए करीब एक करोड़ 64 लाख रुपए का चंदा इकट्ठा किया था।

☞ दिनभर में जितनी जमीन नापी, उतनी दान में मिली दान के साथ-साथ पंडित मालवीय को विश्वविद्यालय के लिए जमीन की भी दरकार थी। एक बार वे काशी नरेश के गंगा स्नान के समय घाट पर पहुंच गए। काशी नरेश डुबकियां लगाकर बाहर आए तो मालवीयजी ने जमीन मांग ली। नरेश ने कहा कि दान तो दूंगा लेकिन एक शर्त है कि सूरज ढलने तक लंबाई-चौड़ाई में जितनी जमीन पैदल चलकर नाप सकेंगे, उतनी ही जमीन मिलेगी। पंडित मालवीय राजी हो गए। जितना हो सका, उतनी जमीन नाप ली और विश्वविद्यालय के लिए दान में ले ली।

☞ जब 155 भारतीयों को फांसी से बचाया मालवीयजी ने 1893 में कानून की पढ़ाई पूरी की। फिर इलाहाबाद हाईकोर्ट में वकालत करने लगे। 4 फरवरी 1922 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले स्थित चौरी चौरा थाने को दो हजार से ज्यादा गांव वालों ने घेर लिया। ब्रिटिश राज के दमन के विरोध में उन्होंने थाने में आग लगा दी। इसमें 24 सिपाही जलकर मर गए। इस मामले में अंग्रेज हुकूमत ने 170 भारतीयों को फांसी की सजा सुनाई। लेकिन 151 लोगों को पंडित मालवीय ने कानूनी मुकदमा जीतकर फांसी से बचा लिया।

उनकी विशाल बुद्धि, संकल्प, देशप्रेम, क्रियाशक्ति तथा तप और त्याग साक्षात् मूर्तिमान हैं। विश्वविद्यालय के उद्देश्यों में हिन्दू समाज और संसार के हित के लिये भारत की प्राचीन सभ्यता और महत्ता की रक्षा, संस्कृत विद्या के विकास एवं पाश्चात्य विज्ञान के साथ भारत की विविधा विद्याओं और कलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता दी गयी। उसके विशाल तथा भव्य भवनों एवं विश्वनाथ मन्दिर में भारतीय स्थापत्य कला के अलंकरण भी मालवीय जी के आदर्श के ही प्रतिफल हैं।

ज्ञात हो कि पंडित मदन मोहन मालवीय ने भारत को वह देकर गये जिसका गुणगान देश ही नहीं वरन विदेशों में भी है। उनमें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय या बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में स्थित एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एक्ट, एक्ट क्रमांक 16, सन् 1915 महामना पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा सन् 1916 में वसंत पंचमी के पुनीत दिवस पर की गई थी। इस विश्वविद्यालय के मूल

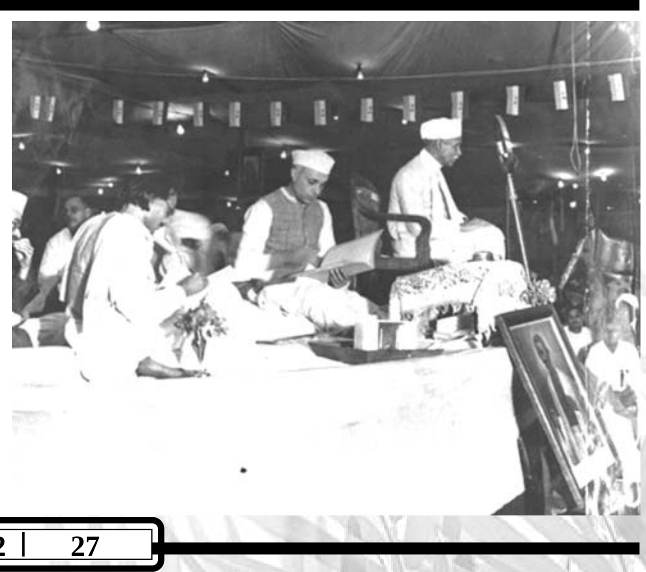

में डॉ० एनी बेसेन्ट द्वारा स्थापित और संचालित सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज की प्रमुख भूमिका थी। संप्रति इस विश्वविद्यालय के दो परिसर है। मुख्य परिसर (1300 एकड़) वाराणसी में स्थित है। मुख्य परिसर में 3 संस्थान, 14 संकाय और 124 विभाग है। विश्वविद्यालय का दूसरा परिसर मिर्जापुर जनपद में बरकछा नामक जगह (2700 एकड़) पर स्थित है। यह एशिया का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। इसके प्रांगण में विश्वनाथ का एक विशाल मंदिर भी है। विशाल सर सुंदरलाल चिकित्सालय, गोशाला, प्रेस, बुकडिपो एवं प्रकाशन, टाउन कमेटी (स्वास्थ्य), पीडब्ल्यूडी, स्टेट बैंक की शाखा, पर्वतारोहण केंद्र, एनसीसी प्रशिक्षण केंद्र, हिंदू यूनिवर्सिटी नामक डाकखाना एवं सेवायोजन कार्यालय भी विश्वविद्यालय तथा जनसामान्य की सुविधा के लिए इसमें संचालित हैं। श्री सुंदरलाल, पं. मदनमोहन मालवीय, डॉ० एस. राधाकृष्णन (भूतपूर्व राष्ट्रपति), डॉ० अमरनाथ झा, आचार्य नरेंद्र देव, डॉ० रामस्वामी अय्यर, डॉ० त्रिगुण सेन (भूतपूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री) जैसे मूर्धान्य विद्वान यहाँ के कुलपति रह चुके हैं। बताते चले कि पं० मदनमोहन मालवीय ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना का श्रीगणेश 1904 ई० में किया, जब काशी नरेश महाराज प्रभुनारायण सिंह की अध्यक्षता में संस्थापकों की प्रथम बैठक हुई। 1905 ई० में विश्वविद्यालय का प्रथम पाठ्यक्रम प्रकाशित हुआ। जनवरी 1906 ई० में कुंभ मेले में मालवीय जी ने त्रिवेणी संगम पर भारत भर से आयी जनता के बीच अपने संकल्प को दोहराया। कहा जाता है कि वहीं एक वृद्ध ने मालवीय जी को इस कार्य के लिए सर्वप्रथम एक पैसा चंदे के रूप में दिया। डॉ० ऐनी बेसेंट काशी में विश्वविद्यालय की स्थापना में आगे बढ़ रही थीं। इन्हीं दिनों दरभंगा के राजा महाराज रामेश्वर सिंह भी काशी में शारदा विद्यापीठ की स्थापना करना चाहते थे। इन तीन विश्वविद्यालयों की योजना परस्पर विरोधी थी, अत: मालवीय जी ने डॉ० बेसेंट और महाराज रामेश्वर सिंह से परामर्श कर अपनी योजना में सहयोग देने के लिए उन दोनों को राजी कर लिया। फलस्वरूप बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी सोसाइटी की 15 दिसम्बर 1911 को स्थापना हुई, जिसके महाराज दरभंगा अध्यक्ष, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के प्रमुख बैरिस्टर सुंदरलाल सचिव, महाराज प्रभुनारायण सिंह, पं० मदनमोहन मालवीय एवं डॉ० ऐनी बेसेंट सम्मानित सदस्य थीं। तत्कालीन शिक्षा मंत्री सर हारकोर्ट बटलर के प्रयास से 1915 ई० में केंद्रीय विधानसभा से हिंदू यूनिवर्सिटी ऐक्ट पारित हुआ, जिसे तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिज ने तुरंत स्वीकृति प्रदान कर दी। 14 जनवरी 1916 ई० (वसंत पंचमी) के दिन से समारोह वाराणसी में गंगातट के पश्चिम, रामनगर के समानांतर महाराज प्रभुनारायण सिंह द्वारा प्रदत्त भूमि में काशी हिंदू विश्वविद्यालय का शिलान्यास हुआ। उक्त समारोह में देश के अनेक गवर्नरों, राजे-रजवाड़ों तथा सामंतों ने गवर्नर जनरल एवं वाइसराय का स्वागत और मालवीय जी से सहयोग करने के लिए हिस्सा लिया। अनेक शिक्षाविद् वैज्ञानिक एवं समाजसेवी भी इस

अवसर पर उपस्थित थे। गांधी जी भी विशेष निमंत्रण पर पधारे थे। अपने वाराणसी आगमन पर गांधी जी ने डॉ० बेसेंट की अध्यक्षता में आयोजित सभा में राजा-रजवाड़ों, सामंतों तथा देश के अनेक गणयमान्य लोगों के बीच, अपना वह ऐतिहासिक भाषण दिया, जिसमें एक ओर ब्रिटिश सरकार की और दूसरी ओर हीरे-जवाहरात तथा सरकारी उपाधियों से लदे, देशी रियासतों के शासकों की घोर भर्तसना की गई। डॉ० बेसेंट द्वारा समर्पित सेंट्रल हिंदू कालेज में काशी हिंदू विश्वविद्यालय का विधिवत शिक्षण कार्य, 1 अक्टूबर 1917 से आरंभ हुआ। 1916 ई० में आयी बाढ़ के कारण स्थापना स्थल से हटकर कुछ पश्चिम में 1300 एकड़ भूमि में निर्मित वर्तमान विश्वविद्यालय में सबसे पहले इंजीनियरिंग कालेज का निर्माण हुआ तत्पश्चात क्रमश: आर्ट्स कालेज एवं साइंस कालेज स्थापित किया गया। 1921 ई० से विश्वविद्यालय की पूरी पढ़ाई कमच्छा कॉलेज से स्थानांतरित होकर नए भवनों में प्रारंभ हुई। विश्वविद्यालय का औपचारिक उद्घाटन 13 दिसम्बर 1921 को प्रिंस ऑव वेल्स ने किया।

सनद् रहे कि पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने अपने जीवन काल में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण के साथ-साथ अखिल भारत हिन्दू महासभा जैसे राजनीतिक दल का भी निर्माण किया और यह राजनीतिक दल एक राष्ट्रवादी हिन्दू संगठन है। इसकी स्थापना के बारे में

कहा जाये तो सन् 1915 में हुई थी। विनायक दामोदर सावरकर इसके अध्यक्ष रहे। केशव बलराम हेडगेवार इसके उपसभापति रहे तथा इसे छोड़कर सन् 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। भारत के स्वतन्त्रा के उपरान्त जब महात्मा गांधी की हत्या हुई तब इसके बहुत से कार्यकर्ता इसे छोड़कर भारतीय जनसंघ में भर्ती हो गये। गौरतलब हो कि स्वराज्य के लिए मुसलिम सहयोग की आवश्यकता समझकर कांग्रेस ने जब मुसलमानों के तुष्टीकरण की नीति अपनाई तो कितने ही हिंदू देशभक्तों को बड़ी निराशा हुई। फलस्वरूप सन् 1910 में पूज्य पं० मदनमोहन मालवीय के नेतृत्व में प्रयाग में हिंदू महासभा की स्थापना की गई। सन् 1916 में लोकमान्य तिलक की अध्यक्षता में लखनऊ में कांग्रेस अधिवेशन हुआ। यद्यपि तिलक जी भी मुस्लिमपोषकनीति से क्षुब्ध थे, फिर भी लखनऊ कांग्रेस ने ब्रिटिश अधिकारियों के प्रभाव में पड़कर एकता और राष्ट्रहित की दोहाई देकर मुस्लिम लीग से समझौता किया जिसके कारण सभी प्रांतों में मुसलमानों को विशेष अधिकार और संरक्षण प्राप्त हुए। अंग्रेजों ने भी अपनी कूटनीति के अनुसार चेम्सफोर्ड योजना बनाकर मुसलमानों के विशेषाधिकार पर मोहर लगा दी। हिंदू महासभा ने सन् 1917 में हरिद्वार में महाराजा नंदी कासिम बाजार की अध्यक्षता में अपना अधिवेशन करके कांग्रेस-मुस्लिम लीग समझौते तथा चेम्सफोर्ड योजना का तीव्र विरोध किया किंतु हिंदू बड़ी संख्या में कांग्रेस के साथ थे अत: सभा के विरोध का कोई परिणाम न निकला। अंग्रेजों ने स्वाधीनता आंदोलन का दमन करने के लिए रौलट एक्ट बनाकर क्रांतिकारियों को कुचलने के लिए पुलिस और फौजी अदालतों को व्यापक अधिकार दिए। कांग्रेस की तरह हिंदू महासभा ने भी इसके विरुद्ध आंदोलन चलाया, पर मुसलमान आंदोलन से दूर थे। उसी समय गाँधी जी ने तुर्की के खलीफा को अंग्रेजों द्वारा हटाए जाने के विरुद्ध तुर्की के खिलाफत आंदोलन के समर्थन में भारत में भी खिलाफत आंदोलन चलाया। हजारों हिंदू इस आंदोलन में जेल गए परंतु खिलाफत का प्रश्न समाप्त होते ही मुसलमानों ने पुन: कोहाट, मुलतान और मालावार आदि में मार-काट कर सांप्रदायिकता की आग भड़काई। हिंदू महासभा भी राष्ट्रीय एकता समर्थक है किंतु उसका मत यह रहा है कि देश की बहुसंख्यक जनता हिंदू है, अत: उसका हित ही वस्तुत: राष्ट्र का हित है। सभा इसे सांप्रदायिकता नहीं समझती। मुसलमान इस देश में न रहें, यह उसका लक्ष्य है।

बताते चले कि सन् 1923 के अगस्त मास में हिंदू महासभा का अधिवेशन काशी में हुआ, जिसमें सनातनी, आर्य समाज के सदस्य, सिक्ख, जैन, बौद्ध आदि सभी संप्रदाय के लोग बड़ी संख्या में एकत्र हुए। हिंदू महासभा के इस अधिवेशन ने हिंदुओं को सांत्वना एवं साहस प्रदान किया और वे पूज्य मालवीय जी, स्वामी श्रद्धानंद, लाला लाजपत राय के नेतृत्व में हिंदू महासभा द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने पर प्रयत्न करने लगे। अधिवेशन में संपूर्ण देश में बलपूर्वक मुसलमान बनाए गए हिंदुओं को शुद्ध करने का निश्चय किया गया। तदनुसार संपूर्ण देश में शुद्धि का आंदोलन चल पड़ा जिसमें पूज्य स्वामी श्रद्धानंद प्राणपण से जुट गए। फलस्वरूप शीघ्र हो 50-60 हजार मलवाना राजपूत पुन: शुद्ध होकर हिंदू बन गए। इसपर एक धर्मांध मुसलमान अब्दुल रशीद ने स्वामी श्रद्धानंद जी की हत्या कर दी। उसके बाद सन् 1925 में कलकत्ता नगरी में लाला लाजपत राय जी की अध्यक्षता में हिंदू महासभा का अधिवेशन हुआ जिसमें प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता डॉ० जयकर भी सम्मिलित हुए। सन् 1926 में देश में प्रथम निर्वाचन होने जा रहा था। अंग्रेजों ने कांग्रेस लीग गठबंधन को असफल बनाने एवं मुसलमानों को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में विद्रोह और विद्वेष फैलाए रखने के लिए अपनी ओर से असंबलियों में मुसलमानों के लिए स्थान सुरक्षित कर दिए। इस बात की चेष्टा होने लगी कि हिंदू सीटों पर कट्टर हिंदू सभाइयों के बजाय ढुलमुल मुस्लिम समर्थक कांग्रेसी ही चुने जाएँ। हिंदू महासभा ने पृथक निर्वाचन के सिद्धांत और मुसलमानों के लिए सीटें सुरक्षित करने का तीव्र विरोध किया और निश्चय किया कि चुनाव में अपने प्रखर राष्ट्रवादी प्रतिनिधि भेजे जाएँ, जो अंग्रेज-मुस्लिम षड्यंत्र का डटकर विरोध कर सकें। दिगर बात है कि हिंदू महासभा के प्रमुख नेता संपूर्ण देश में दौरा करके हिंदुओं में नया जीवन और चेतना उत्पन्न करने लगे। परिणाम स्वरूप हिंदू सभा को चुनाव में अच्छी सफलता मिली। इसी समय बंगाल के मुसलमानों

"मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि विभिन्न मतों के बीच, केवल मालवीय जी भारतीय एकता की मूर्ति बने खड़े हुए हैं।"

-: एनी बेसेंट

ने पुन: अपने अंग्रेज मित्रों के संकेत पर कलकत्ता में समाज के जुलूस पर आक्रमण करके दंगे आरंभ कर दिए परंतु इसका परिणाम उनको महँगा पड़ा।

गौरतलब है कि जब अंग्रेजों का साइमन कमीशन, रिफार्म एक्ट में सुधार के लिए भारत आया, तो हिंदू महासभा ने भी कांग्रेस के कहने पर इसका बहिष्कार किया। लाहौर में हिंदू महासभा के अध्यक्ष लाला लाजपत राय हिंदू महासभा के हजारों स्वयंसेवकों के साथ काले झंडे लेकर कमीशन के बहिष्कार के लिए एकत्र हुए। पुलिस ने बहुत ही निर्दयता से लाठी प्रहार किया, जिसमें लाला जी को भी काफी चोट आई और वह फिर बिस्तर से न उठ सके। थोड़े ही समय में लाहौर में उनका स्वर्गवास हो गया। ब्रिटिश सरकार ने लंदन में गोलमेज सम्मेलन आयोजित करके हिंदू, मुसलमान, सिक्ख आदि सभी के प्रतिनिधियों को बुलाया। हिंदू महासभा की ओर से डॉ० धर्मवीर, मुंजे, बैरिस्टर जयकर आदि सम्मिलित हुए। गांधी जी ने लंदन गोलमेज सम्मेलन में पुन: मुस्लिम सहयोग प्राप्त करने के लिए मुसलमानों को कोरा चेक दे दिया, परंतु फिर भी सौदेबाज में वह अंग्रेजों से जीत न सके। अंग्रेजों ने अपनी ओर से सांप्रदायिक निर्णय देकर हिंदुओं के अधिकार घटाकर मुसलमानों के अधिकार और अधिक बढ़ा दिए। हिंदू महासभा ने इसका तीव्र विरोध किया। सन् 1929 से लेकर सन् 1936 तक श्री रामानंद चटर्जी तथा केलकर आदि अध्यक्ष होते हुए भी वस्तुत: भाई परमानंद जी तथा डॉ० मुंजे ही हिंदू सभा की बागडोर चलाते रहे। डॉ० मुंजे ने नासिक में हिंदुओं को सैनिक शिक्षा देने के लिए भोसला मिलिट्री कॉलेज की भी स्थापना की। हिंदू महासभा ने सिंध प्रांत को बंबई से अलग करने का भी तीव्र विरोध किया। वहीं वीर सावरकर का आगमन सन् 1937 में जब हिंदू महासभा में हुई तब महासभा काफी शिथिल पड़ गई थी और हिंदू जनता गांधी जी की ओर झुकती चली जा रही थी, तब भारतीय स्वाधीनता के लिए अपने परिवार को होम देनेवाले तरुण तपस्वी स्वातंर्त्य वीर सावरकर कालेपानी की भयंकर यातना एवं रत्नागिरि की नजरबंदी से मुक्त होकर भारत आए। सनद् रहे कि स्थिति समझकर उन्होंने निश्चय किया कि राष्ट्र की स्वाधीनता के निमित्त दूसरों का सहयोग पाने के लिए सौदेबाजी करने की अपेक्षा हिंदुओं को ही संगठित किया जाए। वीर सावरकर ने सन् 1937 में अपने प्रथम अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिंदू ही इस देश के राष्ट्रीय हैं और आज भी अंग्रेजों को भगाकर अपने देश की स्वतंत्रता उसी प्रकार प्राप्त कर सकते हैं, जिस प्रकार भूतकाल में उनके पूर्वजों ने शकों, ग्रीकों, हूणों, मुगलों, तुर्कों और पठानों को परास्त करके की थी। उन्होंने घोषणा की कि हिमालय से कन्याकुमारी और अटक से कटक तक रहनेवाले वह सभी धर्म, संप्रदाय, प्रांत एवं क्षेत्र के लोग जो भारत भूमि को पुण्यभूमि तथा पितृभूमि मानते हैं, खानपान, मतमतांतर, रीतिरिवाज और भाषाओं की भिन्नता के बाद भी एक ही राष्ट्र के अंग हैं क्योंकि उनकी संस्कृति, परंपरा, इतिहास और मित्र और शत्रु भी एक हैं। उनमें कोई विदेशीयता की भावना नहीं है। वीर सावरकर ने अहिंदुओं का आवाहन करते हुए कहा कि हम तुम्हारे साथ

बैलगाड़ी से सात दिन में 90 किमी का सफर तय कर मालवीय ने लिए थे सात फेरे

महामना मदन मोहन मालवीय नन्दजी मालवीय की इकलौती पुत्री कुंदन देवी से विवाह रचाने इलाहाबाद से मीरजापुर बारात लेकर गए थे। उन दिनों यातायात की व्यवस्था ठीक नहीं होने की वजह से बैलगाड़ी से 90 किलोमीटर का सफर सात दिनों में पूरा हुआ था। सात दिन चलकर आई बारात का जनवासा सात दिन का था और इतने ही दिन मीरजापुर से अपनी अर्धांग्घिन के रूप में कुंदन देवी को घर ले जाने में लगा। इस तरह वरयात्रा 21 दिन की हो गई। मीरजापुर नगर के मध्य बसे इमली महादेव मोहल्ले में रहने वाले नन्दजी मालवीय के घर सन् 1878 में उनकी इकलौती पुत्री कुंदन देवी से विवाह रचाने के लिए इलाहाबाद से मदन मोहन मालवीय की बारात आई थी। उन दिनों यातायात की सुगम व्यवस्था नहीं होने से बैलगाड़ी से 90 किलोमीटर का सफर सात दिन में पूरा हुआ था।

☞ **पत्नी ने पूरे मनोयोग से दिया मालवीय का साथ :-** देशभक्ति भावना से भरे मदन मोहन विंध्य क्षेत्र से शक्ति पाकर धर्म रक्षा और समाज सेवा में लग गए। पत्नी कुंदन ने पूरे मनोयोग से उनका साथ दिया। शक्ति स्वरूपा पत्नी कुंदन का सहयोग पाकर मदन मोहन महामना बने और देश को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जैसा धरोहर सौंपा। वहीं, पत्नी कुंदन देवी ने अपना धर्म निभाते हुए परिवार की सेवा करते हुए बच्चों को संस्कार के साथ जीना सिखाया।

☞ **भारत रत्न की घोषणा के बाद ससुराल में मनाया गया जश्न :-** महामना मदन मोहन मालवीय को भारत रत्न दिए जाने की घोषणा सुनकर उनके ससुराल मीरजापुर में जश्न मनाया गया। संस्कार भारती के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में ससुराल के मोहल्ले में बसे लोगों ने महान विभूति को नमन किया। महामना के चित्र पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें भारत रत्न मिलने को देश का मान और स्वाभिमान का सम्मान बताया। इस मौके पर डॉ. गणेश प्रसाद अवस्थी, विष्णु मालवीय, राजपति ओझा, गोपाल कांस्यकार, गोविन्द, विंध्यवासिनी केशरवानी, शिवलाल अवस्थी समेत ससुराल और मोहल्ले में बसे सभी लोग मौजूद रहे।

समता का व्यवहार करने को तैयार हैं परंतु कर्तव्य और अधिकार साथ-साथ चलते हैं। तुम राष्ट्र को पितृभूमि और पुण्यभूमि मानकर अपना कर्तव्यपालन करो, तुम्हें वे सभी अधिकार प्राप्त होंगे जो हिंदू अपने देश में अपने लिए चाहते हैं। उन्होंने कहा कि यदि तुम साथ चलोगे तो तुम्हें लेकर, यदि तुम अलग रहोगे तो तुम्हारे बिना और अगर तुम अंग्रेजों से मिलकर स्वतंत्रता संग्राम में बाधा उत्पन्न करोगे तो तुम्हारी बाधाओं के बावजूद हम हिंदू अपनी स्वाधीनता का युद्ध लड़ेंगे। ज्ञात हो कि उसी समय मुस्लिम देशी रियासतों में अंग्रेजों के वरदहस्त के कारण वहाँ के शासक अपनी हिंदू जनता पर भयंकर अत्याचार करके उनका जीवन दूभर किए हुए थे, अतएव हिंदू महासभा ने आर्यसमाज के सहयोग से निजाम हैदराबाद के पीड़ित हिंदुओं के रक्षार्थ सन् 1939 में ही संघर्ष आरंभ कर दिया और संपूर्ण देश से हजारों सत्याग्रही निजाम की जेलों में भर गए। हैदराबाद के निजाम ने समझौता करके हिंदुओं पर होनेवाले प्रत्यक्ष अत्याचार बंद कराने की प्रतिज्ञा की। सन् 1936 के निर्वाचनों में जब मुस्लिम लीग के कट्टर अनुयायी चुनकर गए और हिंदू सीटों पर कांग्रेसी चुने गए, जो लीग की किसी भी राष्ट्रद्रोही माँग का समुचित उत्तर देने में असमर्थ थे, तब पाकिस्तान बनाने की माँग जोर पकड़ती गई। हिंदु महासभा ने अपनी शक्ति भर इसका विरोध किया।

सन् 1941 में भागलपुर अधिवेशन पर अंग्रेज गवर्नमेंट की आज्ञा से प्रतिबंध लगा दिया गया कि बकरीद के पहले हिंदू महासभा अपना अधिवेशन न करे अन्यथा हिंदू मुस्लिम दंगे की संभावना हो सकती है। वीर सावरकर ने कहा कि हिंदु महासभा दंगा करना नहीं चाहती, अत: दंगाइयों के बदले शांतिप्रिय नागरिकों के अधिकारों का हनन करना घोर अन्याय है। वीर सावरकर लगभग 5,000 प्रतिनिधियों के साथ भागलपुर जा रहे थे कि अंग्रेजी सरकार ने उन्हें गया में ही रोककर गिरफ्तार कर लिया। भाई परमानंद, डॉ० मुंजे, डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी आदि नेता भी बंदी बनाए गए, फिर भी न केवल भागलपुर में वरन् संपूर्ण बिहार प्रांत में तीन दिनों तक हिंदू महासभा के अधिवेशन आयोजित हुए जिसें वीर सावरकर का भाषण पढ़ा गया तथा प्रस्ताव पारित हुए। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि हिंदू महासभा के घोर विरोध के पश्चात् भी अंग्रेजों ने कांग्रेस को राजी करके मुसलमानों को पाकिस्तान दे दिया और हमरी परम पुनीत भारत भूमि, जो इतने अधिक आक्रमणों का सामना करने के बाद भी कभी खंडित नहीं हुई थी, खंडित हो गई। हिंदू महासभा के नेता महात्मा रामचन्द्र वीर (हिन्दु सन्त, कवि, लेखक) और वीर सावरकर ने विभाजन का घोर विरोध किया। यद्यपि पाकिस्तान की स्थापना हो जाने से मुसलमानों की मुंहमाँगी मुराद पूरी हो गई और भारत में भी उन्हें बराबरी का हिस्सा प्राप्त हो गया है, फिर भी कितने ही मुसलिम नेता तथा कर्मचारी छिपे रूप से पाकिस्तान का समर्थन करते तथा भारत विरोधी गतिविधियों में सहायक होते रहते हैं। फलस्वरूप कश्मीर, असम, राजस्थान आदि में अशांति तथा विदेशी आक्रमण की आशंका बनी रहती है। वर्तमान समय में देश की परिस्थितियों को देखते हुए हिंदू महासभा इसपर बल देती है कि देश की जनता को, प्रत्येक देशवासी को अनुभव करना चाहिए कि जब तक संसार के सभी छोटे मोटे राष्ट्र अपने स्वार्थ और हितों को लेकर दूसरों पर आक्रमण करने की घात में लगे हैं, उस समय तक भारत की उन्नति और विकास के लिए प्रखर हिंदू राष्ट्रवादी भावना का प्रसार तथा राष्ट्र को आधुनिकतम अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होना नितांत आवश्यक है।

वैसे तो उन्होंने 1911 में ही वकालत छोड़ दी थी। लेकिन साल 1922 में चौरी-चौरा कांड हुआ और लगभग 172 स्वतंत्रता सेनानियों को अंग्रेजी सरकार ने हिंसा के जुर्म में गिरफ्तार करके फांसी की सजा सुना दी। ऐसे में, एक बार फिर महामना ने अपनी वकालत की कमान संभाली। उन्होंने न सिर्फ इन क्रांतिकारियों का मुकदमा लड़ा, बल्कि 153 लोगों को बरी भी करवाया। बाकी सभी की भी फांसी की सजा माफ करवाकर, उसे उम्र कैद में बदलवा दिया। तो ऐसा था, भारत के 'महामना' का व्यक्तित्व। बताते हैं कि उन्होंने शहीद-ए-आजम भगत सिंह की फांसी रोकने के लिए भी अपील की थी। यदि वह अपील स्वीकार हो जाती तो भारतीय राजनीती का इतिहास आज कुछ और ही होता। इस सबके अलावा, उन्होंने हमेशा ही स्त्री शिक्षा, उनके अधिकारों और दलितों के अधिकारों पर जोर दिया। वह हमेशा कहते थे कि वह बनारस में नहीं मरना चाहते। क्योंकि कहते हैं कि जो बनारस में मरता है, वह फिर कभी दोबारा पृथ्वी पर जन्म नहीं लेता। लेकिन महामना फिर से भारत की भूमि पर जन्म लेकर अपने जीवन को गरीबों और जरुरतमंदों के लिए समर्पित करना चाहते थे। लेकिन 12 नवंबर 1946 को उन्होंने बनारस में ही अपनी आखिरी सांस ली।

महामना भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय जी के सम्मान में हरिद्वार में घाट के निकट ही स्थित एक छोटे से द्वीप का नाम 'मालवीय द्वीप' रखा गया है। प्रयागराज, लखनऊ, दिल्ली, देहरादून, भोपाल, दुर्ग और जयपुर में उनके सम्मान में ष्मालवीय नगरष बसे हैं। जबलपुर में एक चौराहे का नाम 'मालवीय चौक' रखा गया है। मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर तथा मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर का नामकरण भी उनके नाम पर किया गया है। उनके नाम पर अनेक छात्रावासों के नाम 'मालवीय भवन' रखे गये हैं जिनमें से आईआईटी खड़गपुर, आई. आई. टी. रूडकी का सहारनपुर परिसर, बिड़ला प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान के पिलानी तथा तथा हैदराबाद परिसर सम्मिलित हैं। 2011 में भारत सरकार ने उनकी स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया। 24 दिसम्बर 2014 को भारत सरकार ने उन्हें भारतरत्न से सम्मानित किया। 22 जनवरी 2016 को महामना एक्सप्रेस चलायी गयी जो वाराणसी से दिल्ली के बीच चलती है।

भारतीय राजनीति के अजातशत्रु

अटल बिहारी बाजपेयी

'हार नहीं मानूंगा, रार नई ठानूंगा....', किसी भी परिस्थिति से जूझने और हार न मानने का ये मंत्र देने वाले पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति में अजातशत्रु की तरह याद किए जाते रहेंगे। इसमें कोई संदेह नहीं हैं कि देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' प्राप्त करने वाले देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने राजनीति में रहते हुए एक विशिष्ट और सराहनीय मुकाम को हासिल किया था। ये भारतीय जनता पार्टी की ओर से देश के सबसे सराहनीय प्रधानमंत्री रहे। पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने एक बार कहा था कि एक रोज अटल बिहारी वाजपेयी को देश का प्रधानमंत्री बनने का मौका जरूर मिलेगा। वाजपेयी को उनकी वाकपटुता और करिश्माई व्यक्तित्व के लिए जाना जाता है। वह ऐसे पहले भारतीय प्रधानमंत्री भी थे, जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में भाषण देने का फैसला किया। वाजपेयी को कविताओं से भी खासा लगाव रहा। वह अपने विचारों को कई बार कविताओं के माध्यम से ही सामने रखते थे। कविता उनके लिए जंग में हार नहीं, बल्कि जीत की घोषणा की तरह है। अटल बिहारी वाजपेयी को कई बार सम्मनित किया जा चुका है। उन्हें 1992 में पद्म विभूषण, 1994 में लोकमान्य तिलक पुरस्कार, श्रेष्ठ सांसद पुरस्कार व गोविंद वल्लभ पंत जैसे पुरस्कारों से नवाजा गया। उनको दिसम्बर, 2015 में देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से भी नवाजा गया। प्रस्तुत है जनसंघ से लेकर प्रधानमंत्री तक के सफर में अटल बिहारी बाजपेयी जी पर पत्रिका के संयुक्त संपादक **अमित कुमार** की समीक्षात्मक रिपोर्ट :–

बाजपेयी जी का जन्म 25 दिसम्बर 1924 को उत्तर प्रदेश के आगरा जनपद के प्राचीन स्थान बटेश्वर में पिता पंडित कृष्ण बिहारी और माता कृष्णा बाजपेयी के घर हुआ था। उनके पिता मध्य प्रदेश की रियासत ग्वालियर में अध्यापक थें। पिता कृष्ण बिहारी बाजपेयी ग्वालियर में अध्यापन कार्य तो करते ही थे, इसके अतिरिक्त वे हिन्दी व ब्रज भाषा के सिद्धहस्त कवि भी थें। पुत्र में काव्य के गुण वंशानुगत परिपाटी से प्राप्त हुए। महात्मा रामचन्द्र वीर द्वारा रचित अमर कृति 'विजय पताका' पढ़कर अटल जी के जीवन की दिशा ही बदल गयी। अटल जी की बी.ए. की शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज (वर्तमान में लक्ष्मीबाई कालेज) में हुई। छात्र जीवन से वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने और तभी से राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहे। कानपुर के डी.ए.वी.कॉलेज से राजनीति शास्त्र में एम.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उसके बाद उन्होंने अपने पिताजी के साथ-साथ कानपुर में ही एल.एल.बी. की पढ़ाई भी प्रारम्भ की लेकिन उसी बीच में ही विराम देकर पूरी निष्ठा से संघ के कार्य में जुट गये। गौरतलब है कि डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के निर्देशन में राजनीति का पाठ तो पढ़ा ही, साथ-साथ दैनिक स्वदेश और वीर अर्जुन जैसे पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन का कार्य भी कुशलता पूर्वक करते रहे।

बताते चले कि बाजपेयी जी का राजनीति में प्रवेश के साथ भारतीय जनसंघ की स्थापना करने वालों में से एक हैं और सन् 1968 से 1973 तक वह उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रह चुके हैं। सन् 1955 में उन्होंने पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ा, परन्तु सफलता नहीं मिली। लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और सन् 1957 में बलरामपुर (जिला गोण्डा, उत्तर प्रदेश) से जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में विजयी होकर लोकसभा में पहुँचे। तत्पश्चात् सन् 1957 से 1977 तक जनता पार्टी की स्थापना तक वे बीस वर्ष तक लगातार जनसंघ के संसदीय दल के नेता रहे। ज्ञात हो कि अटल जी मोरारजी देसाई की सरकार में सन् 1977 से 1979 तक विदेश मंत्री रहे और विदेशों में भारत की छवि बनायी। बाद में 1980 को जनता पार्टी से असन्तुष्ट होकर इन्होंने जनता पार्टी छोड़ दी और भारतीय जनता पार्टी की स्थापना में मदद की। 6 अप्रैल 1980 में बनी भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष पद का दायित्व भी वाजपेयी को सौंपा गया और वे दो बार राज्यसभा के लिये भी निर्वाचित हुए। लोकतंत्र के सजग प्रहरी अटल बिहारी वाजपेयी ने 11वीं लोकसभा में लखनऊ से सांसद के रूप में विजयी हुए और भारतीय लोकतंत्र के प्रधानमंत्री बने। राष्ट्रपति महोदय ने उन्हें 16 मई, 1996 को

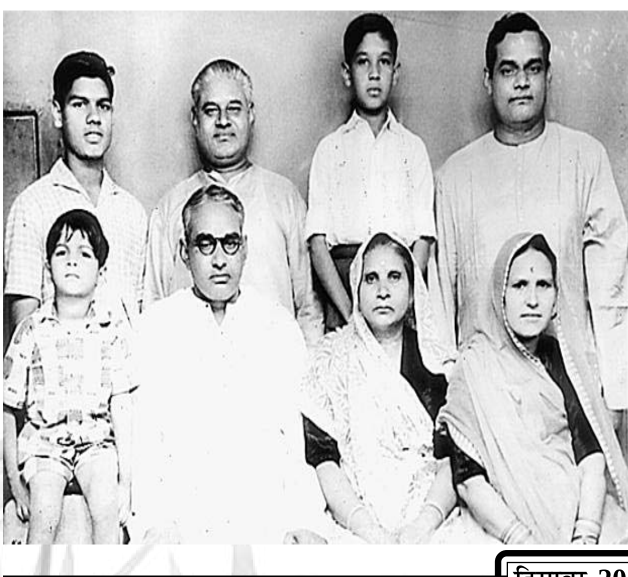

प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई, किंतु उन्होंने विपरीत परिस्थितियों के कारण 28 मई 1996 को स्वयं त्याग पत्र दे दिया। फिर सन् 1998 के चुनावों में भी भारतीय जनता पार्टी लोकसभा में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। चुनावों के पूर्व उसने देश की अन्य कई पार्टियों के साथ मिलकर चुनाव लड़े थे। भाजपा और उसकी सहयोगी पार्टियों को राष्ट्रपति महोदय ने सरकार बनाने के लिए उपयुक्त पाया और अटलजी को सरकार बनाने का निमंत्रण दिया। अटल जी ने 19 मार्च 1998 को दूसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। पुन: 13 अक्टूबर 1999 को अटल जी ने तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री पद की शपथ ली और उनके नेतृत्व में 13 दलों की गठबंधन सरकार ने पाँच वर्षों में देश के अन्दर प्रगति के अनेक आयाम छुए। पुन: सन् 2004 में कार्यकाल पूरा होने से पहले भयंकर गर्मी में सम्पन्न कराये गये लोकसभा चुनावों में भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबन्धन (एनडीए) ने वाजपेयी के नेतृत्व में चुनाव लड़ा और भारत उदय (अंग्रेजी में इण्डिया शाइनिंग) का नारा दिया। इस चुनाव में किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला। ऐसी स्थिति में वामपंथी दलों के समर्थन से काँग्रेस ने भारत की केन्द्रीय सरकार पर कायम होने में सफलता प्राप्त की और भाजपा विपक्ष में बैठने को मजबूर हुई।

गौरतलब है कि अपने कार्यकाल में विशेष उपाधि पा चुके अटल जी ने ऐसे-ऐसे कार्य किए जो इतिहास और लोगों के जेहन में समा गये और उन्हें अपना आदर्श मानने लगे। बताते चले कि अटल सरकार ने 11 और 13 मई 1998 को पोखरण में पाँच भूमिगत परमाणु परीक्षण विस्फोट करके भारत को परमाणु शक्ति संपन्न देश घोषित कर दिया। इस कदम से उन्होंने

भारत को निर्विवाद रूप से विश्व मानचित्र पर एक सुदृढ वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया। यह सब इतनी गोपनीयता से किया गया कि अति विकसित जासूसी उपग्रहों व तकनीकी से संपन्न पश्चिमी देशों को इसकी भनक तक नहीं लगी। यही नहीं इसके बाद पश्चिमी देशों द्वारा भारत पर अनेक प्रतिबंध लगाए गए लेकिन वाजपेयी सरकार ने सबका दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए आर्थिक विकास की ऊँचाईयों को छुआ।

दिगर बात है कि 19 फरवरी 1999 को सदा-ए-सरहद नाम से दिल्ली से लाहौर तक बस सेवा शुरू की गई। इस सेवा का उद्घाटन करते हुए प्रथम यात्री के रूप में वाजपेयी जी ने पाकिस्तान की यात्रा करके नवाज शरीफ से मुलाकात की और आपसी संबंधों में एक नयी शुरुआत की। इसी बीच रिश्ते में मधुरता बनाये रखने के लिए जहां भारत एक ओर अग्रसर था, वहीं पड़ोसी राष्ट्र पाकिस्तान अपनी हरकतों से कभी बाज नहीं आयी और कुछ ही समय पश्चात् पाकिस्तान के तत्कालीन सेना प्रमुख परवेज मुशर्रफ की शह पर पाकिस्तानी सेना व उग्रवादियों ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके कई पहाड़ी चोटियों पर कब्जा कर लिया। अटल सरकार ने पाकिस्तान की सीमा का उल्लंघन न करने की अंतर्राष्ट्रीय सलाह का सम्मान करते हुए धैर्यपूर्वक किंतु ठोस कार्यवाही करके भारतीय क्षेत्र को मुक्त कराया। इस युद्ध में प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण भारतीय सेना को जान माल का काफी नुकसान हुआ और पाकिस्तान के साथ शुरु किए गए संबंध सुधार एकबार फिर शून्य हो गए।

बताते चले कि कठिनाईयों व परेशानियों के ताज को सिर पर रखते हुए बाजपेयी जी ने विकास की एक नयी नीव स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना को चालू किया। भारत भर के चारों कोनों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना (गोल्डन क्वाड्रिलेट्रल प्रोजेक्ट या संक्षेप में जी क्यू प्रोजेक्ट) की शुरुआत की गई। इसके अंतर्गत दिल्ली, कोलकात्ता, चेन्नई व मुम्बई को राजमार्ग से जोड़ा गया। ऐसा माना जाता है कि अटल जी के शासनकाल में भारत में जितनी सड़कों का निर्माण हुआ इतना सिर्फ शेरशाह सूरी के समय में ही हुआ था। सनद् रहे कि विकास कार्य की रफ्तार अभी यही नहीं थमती, आगे बढ़ते हुए अटल जी ने एक सौ साल से भी ज्यादा पुराने कावेरी जल विवाद को सुलझाया एवं संरचनात्मक ढाँचे के लिये कार्यदल, सॉफ्टवेयर विकास के लिये सूचना एवं प्रौद्योगिकी कार्यदल, विद्युतीकरण में गति लाने के लिये केन्द्रीय विद्युत नियामक आयोग आदि का गठन किया। राष्ट्रीय राजमार्गों एवं हवाई अड्डों

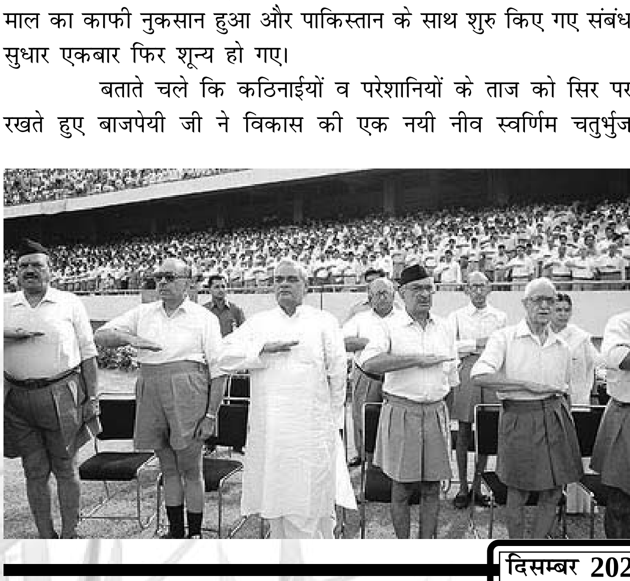

पिता के साथ एक ही क्लास में पढ़ते थे अटल जी

अटल बिहारी वाजपेयी अपने पिता के साथ एक साथ बैठकर कानपुर के डीएवी कॉलेज में लॉ की पढ़ाई करते थे। हैरानी की बात यह थी कि दोनों एक ही क्लास में पढ़ते थे और हॉस्टल के एक ही रूम में रहते थे। जब इस बात का पता उनके दोस्तों को चला और छात्रों ने उनके बारे में बातें करना शुरू कर दिया तो दोनों ने अपने सेक्शन बदल लिए थे। अटल बिहारी वाजपेयी ने एक इंटरव्यू के दौरान बताया था कि वह हमेशा से एक पत्रकार बनना चाहते थे, लेकिन गलती से वह राजनीति में पहुंच गए। अटल बिहारी वाजपेयी जब भी जनसभा करते थे तो काली मिर्च और मिश्री का सेवन करते थे। उनके लिए खास मथुरा से मिश्री मंगाई जाती थी। सभा से पहले और बाद में वे इसे खाते थे। अटल बिहारी वाजपेयी को गिफ्ट पसंद नहीं थे। वे गिफ्ट परंपरा के बेहद खिलाफ थे। वे खाने-पीने के काफी शौकीन थे, इसलिए वे घर में तैयार भोजन को सबसे बड़ा तोहफा मानते थे।इसके अलावा उन्हें हिंदी सिनेमा से भी खासा लगाव था। उन्हें 'उमराव जान' फिल्म बहुत पसंद थी। 26 पार्टियों के साथ सरकार चलाने वाले वह देश के पहले प्रधानमंत्री थे। उन्होंने तीन बार इस पद की शपथ ली थी। पूर्व प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानते थे। अटल बिहारी वाजपेयी ने शादी नहीं की। उन्होंने एक बेटी को गोद लिया, जिसका नाम नमिता है। अटल जी की बहन ने कई बार उनकी पैंट को घर के बाहर फेंक दिया था, क्योंकि उनके पिता एक सरकारी कर्मचारी थे और वो नहीं चाहते थे कि अटल जी आरएसएस की खाकी पैंट पहने।

का विकास, नई टेलीकम नीति तथा कोकण रेलवे की शुरुआत करके बुनियादी संरचनात्मक ढाँचे को मजबूत करने वाले बड़े कदम उठाये। साथ ही बताते चले कि राष्ट्रीय सुरक्षा समिति, आर्थिक सलाह समिति, व्यापार एवं उद्योग समिति भी गठित कीं। आवश्यक उपभोक्ता सामग्रियों की कीमतें नियंत्रित करने के लिये मुख्यमंत्रियों का सम्मेलन बुलाया। इसके तहत उड़ीसा के सर्वाधिक गरीब क्षेत्र के लिये सात सूत्रीय गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम शुरू किया, जिनमें आवास निर्माण को प्रोत्साहन देने के लिए अर्बन सीलिंग एक्ट को समाप्त किया तो वही ग्रामीण रोजगार सृजन एवं विदेशों में बसे भारतीय मूल के लोगों के लिये बीमा योजना भी शुरू की और आपसी सद्भाव को बनाये रखने हेतु सरकारी खर्चे पर रोजा इफ्तार शुरू किया।

सनद् रहे कि जैसा ऊपर में अटल जी के वंशानुगत गुण के बारे में बताया गया था कि वह कवि के रूप में भी प्रख्यात रहे, साथ ही लाल बहादूर शास्त्री के नारे जय जवान-जय किसान को आगे जोड़ते हुए जय विज्ञान का नारा दिया, यह देश की जनता के लिए सुखद संदेश था। बताते चले कि अटल बिहारी वाजपेयी राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ एक कवि भी हैं। उनकी सर्व प्रथम कविता ताजमहल थी। इसमें श्रृंगार रस में 'प्रेम प्रसून न चढ़ाकर एक शहंशाह ने बनवा के हसीं ताजमहल, हम गरीबों की मोहब्बत का उड़ाया है मजाक' की तरह उनका भी ध्यान ताजमहल के कारीगरों के शोषण पर ही गया। वास्तव में कोई भी कवि हृदय कभी कविता से वंचित नहीं रह सकता। राजनीति के साथ-साथ राष्ट्र के प्रति उनकी वैयक्तिक संवेदनशीलता आद्योपान्त प्रकट होती ही रही है। उनके संघर्षमय जीवन, परिवर्तनशील परिस्थितियाँ, राष्ट्रव्यापी आन्दोलन, जेल-जीवन आदि अनेक आयामों के प्रभाव एवं अनुभूति ने काव्य में सदैव ही अभिव्यक्ति पायी। विख्यात गजल गायक जगजीत सिंह ने अटल जी की चुनिंदा कविताओं को संगीतबद्ध करके एक एल्बम भी निकाला था। अटल जी की प्रमुख रचनाओं पर प्रकाश डालें तों उनकी कुछ प्रमुख प्रकाशित रचनाएँ इस प्रकार हैं- मृत्यु या हत्या, अमर बलिदान (लोक सभा में अटल जी के वक्तव्यों का संग्रह), कैदी कविराय की कुण्डलियाँ, संसद में तीन दशक इत्यादि। उनके अच्छे व्यक्तित्व के लिए उन्हें 1992 में पद्म विभूषण, 1993 में डी लिट (कानपुर विश्वविद्यालय), 1994 में लोकमान्य तिलक पुरस्कार, श्रेष्ठ सांसद पुरस्कार, भारत रत्न पंडित गोविंद वल्लभ पंत पुरस्कार सहित

जब अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत रत्न लेने से कर दिया था इनकार

करिश्माई नेता, ओजस्वी वक्ता, प्रखर कवि और विरोधियों में भी सम्मान के पात्र रहे राजनेता एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को देश के शीर्ष नागरिक पुरस्कार भारत रत्न से 2015 सम्मानित किया जा चुका है. हालांकि एक मौका यह भी था जब अटल बिहारी वाजपेयी ने देश का यह सर्वोच्च सम्मान लेने से इनकार कर दिया था. बात तब की है जब 1999 में करगिल युद्ध के बाद हुए लोकसभा चुनावों में बीजेपी ने जीत हासिल की थी और वाजपेयी तीसरी बार प्रधानमंत्री बने थे. तब जीत का उत्साह पार्टी पर हावी था. 1998 के परमाणु परीक्षण और करगिल में पाकिस्तान को धूल चटाने के बाद मिली जीत के बाद पार्टी के कई नेताओं को लगा कि वाजपेयी को भारत रत्न दिया जाना चाहिए. अटल बिहारी वाजपेयी के मीडिया सलाहकार रहे वरिष्ठ पत्रकार अशोक टंडन बताते हैं कि वाजपेयी को ये दलीलें दी गई कि जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री रहते हुए खुद को भारत रत्न दिलवाया था. वाजपेयी से कहा गया कि उनका भारतीय राजनीति में ऐसा ही मुकाम है लिहाजा उन्हें ये सम्मान स्वीकार करना चाहिए, लेकिन उन्होंने इससे इनकार कर दिया. उन्होंने कहा कि उन्हें ये उचित नहीं लगता कि अपनी सरकार में खुद को ही सम्मानित किया जाए. वाजपेयी के इनकार के बाद वरिष्ठ मंत्रियों ने योजना बनाई कि जब वाजपेयी किसी विदेश दौरे पर जाएं तब उनकी अनुपस्थिति में सरकार उन्हें भारत रत्न देने का निर्णय कर दे, लेकिन वाजपेयी को इसकी भनक लग गई. उन्होंने सख्ती से ऐसा करने से इनकार कर दिया. बता दें कि अटल बिहारी वाजपेयी ने प्रधानमंत्री के रूप में तीन बार देश का नेतृत्व किया है. वे पहली बार साल 1996 में 16 मई से 1 जून तक, 19 मार्च 1998 से 26 अप्रैल 1999 तक और फिर 13 अक्टूबर 1999 से 22 मई 2004 तक देश के प्रधानमंत्री रहे हैं. अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी के कवि, पत्रकार और प्रखर वक्ता भी हैं. भारतीय जनसंघ की स्थापना में भी उनकी अहम भूमिका रही है. वे 1968 से 1973 तक जनसंघ के अध्यक्ष भी रहे. आजीवन राजनीति में सक्रिय रहे अटल बिहारी वजपेयी लम्बे समय तक राष्ट्रधर्म, पाञ्चजन्य और वीर अर्जुन आदि पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन भी करते रहे हैं. वाजपेयी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समर्पित प्रचारक रहे हैं और इसी निष्ठा के कारण उन्होंने आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प लिया था. सर्वोच्च पद पर पहुंचने तक उन्होंने अपने संकल्प को पूरी निष्ठा से निभाया.

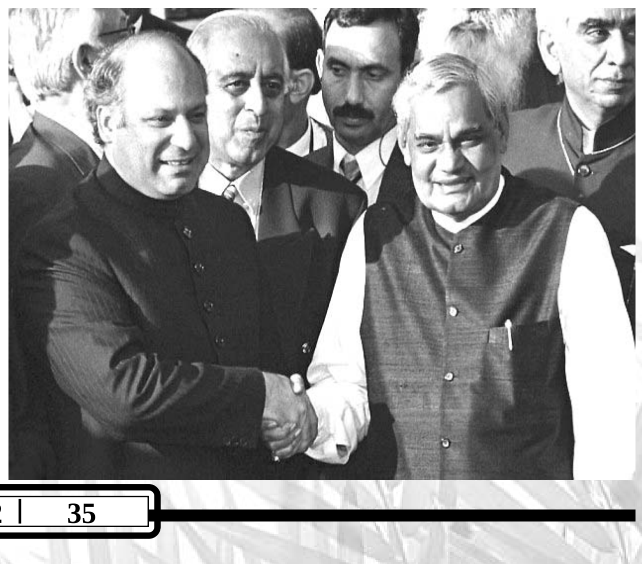

2015 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

बहरहाल, भारत के सबसे प्रसिद्ध नेताओं में से एक अटल बिहारी वाजपेयी का दिल्ली के एम्स अस्पताल में निधन हो गया। बता दें कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी आखिरी बार सबके सामने 2015 में आए थे। उन्हें पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने 2015 में भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया था। तस्वीर में अटल बिहारी वाजपेयी सफेद कुर्ता पजामा में थे। इस तस्वीर में अटल जी कुर्सी पर बैठे हैं और पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी उन्हें भारत रत्न से सम्मानित कर रहे हैं। इस तस्वीर में उन्होंने चश्मा भी लगाया हुआ था। आपको बता दें कि 2009 में स्ट्रोक आने की वजह से पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के ब्रेन ने काम करना बंद कर दिया था। उन्हें डायबिटीज भी थी और स्ट्रोक के बाद उन्हें डिमनेंशिया की बीमारी भी हो गई थी। इसके बाद उनकी सेहत लगातार गिरने लगी और वो अधिकतर अपने कृष्णा मेनन मार्ग स्थित बंगले में ही रहने लगे। यहां तक कि उन्हें साफ बोलने में भी दिक्कत होती थी। उन्हें 11 जून 2018 में किडनी में संक्रमण और कुछ अन्य स्वास्थ्य समस्याओं की वजह से अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में भर्ती कराया गया था, जहाँ 16 अगस्त 2018 को उनका निधन हो गया। उन्हें अगले दिन 17 अगस्त को हिंदू संस्कृति पद्धति के अनुसार अंतिम संस्कार किया गया । उनकी दत्तक पुत्री नमिता कौल भट्टाचार्या ने उन्हें मुखाग्नि दी। उनकी समाधि स्थल राजघाट के पास शान्ति वन में बने स्मृति स्थल में बनाया गया है। उनकी अंतिम यात्रा बहुत भव्य तरीके से निकाली गयी। जिसमे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत सैंकड़ों नेता गण पैदल चलते हुए गंतव्य तक पहुंचे थे। वाजपेयी के निधन पर भारत भर में सात दिन के राजकीय शोक की घोषणा की गयी। अमेरिका, चीन, बांग्लादेश, ब्रिटेन, नेपाल और जापान समेत विश्व के कई राष्ट्रों द्वारा उनके निधन पर दु:ख जताया गया। अटल जी की अस्थियों को देश की सभी प्रमुख नदियों में विसर्जित किया गया।

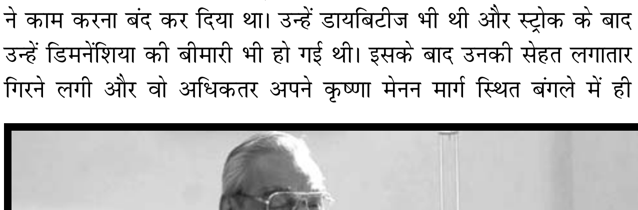

गोलगप्पों और हिन्दी सिनेमा के शौकीन थे अटल बिहारी वाजपेयी

अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन से जुड़ी काफी बातें आप जानते होंगे लेकिन क्या आप ये जानते हैं कि उन्हें फुचके यानी कि गोलगप्पे बेहद पसंद थे. वह गोलगप्पे वाले को ऊपर कमरे में बुलाते और गोलगप्पे खाने से पहले उसमें खूब सारी मिर्च डलवाते। साथ ही वह मांशाहारी खाने के भी शौकीन थे, खासकर उन्हें मछली खाना बहुत पसंद था। इसके अलावा हिंदी सिनेमा से भी उन्हें खास लगाव था. उन्हें 'उमराव जान' फिल्म बहुत पसंद थी। 1981 में जब 'उमराव जान' फिल्म रिलीज हुई थी तब वाजपेयी जी कोलकाता में थे और उन्होंने एक रात में तीन बार वह फिल्म देखी इतना ही नहीं वह अपने साथ फिल्म की वीसीडी भी दिल्ली ले गए।

गौरतलब है कि अटल बिहारी बाजपेयी के जीवन के कुछ प्रमुख तथ्य यह रहे कि वह आजीवन अविवाहित रहे। वह चाहे प्रधानमंत्री के पद पर रहे हों या नेता प्रतिपक्ष, बेशक देश की बात हो या क्रान्तिकारियों की या फिर उनकी अपनी ही कविताओं की नपी-तुली और बेवाक टिप्पणी करने में अटल जी कभी नहीं चूके। धूल और धुएँ की बस्ती में पले एक साधारण अध्यापक के पुत्र श्री अटल बिहारी वाजपेयी दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रधानमंत्री बने। उनमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की संकल्पशक्ति, भगवान श्रीकृष्ण की राजनीतिक कुशलता और आचार्य चाणक्य की निश्चयात्मिका बुद्धि है। वे अपने जीवन का क्षण-क्षण और शरीर का कण-कण राष्ट्रसेवा के यज्ञ में अर्पित कर रहे हैं। उनका तो उद्घोष भी है- हम जिएँगे तो देश के लिए, मरेंगे तो देश के लिए। इस पावन धरती का कंकर-कंकर शंकर है, बिन्दु-बिन्दु गंगाजल है। भारत के लिए हँसते-हँसते प्राण न्योछावर करने में गौरव और गर्व का अनुभव करूँगा।

प्रधानमंत्री के रूप में अटल जी ने पोखरण में अणु-परीक्षण करके संसार को भारत की शक्ति का एहसास करा दिया। कारगिल युद्ध में पाकिस्तान के छक्के छुड़ाने वाले तथा उसे पराजित करने वाले भारतीय सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए अटल जी अग्रिम चौकी तक गए थे। उन्होंने अपने एक भाषण में कहा भी था-'वीर जवानो! हमें आपकी वीरता पर गर्व है। आप भारत माता के सच्चे सपूत हैं। पूरा देश आपके साथ है। हर भारतीय आपका आभारी है। अटल जी के भाषणों का ऐसा जादू है कि लोग उन्हें सुनते ही रहना चाहते हैं। उनके व्याख्यानों की प्रशंसा संसद में उनके विरोधी भी करते थे। उनके अकाट्य तर्कों का सभी लोहा मानते हैं। उनकी वाणी सदैव विवेक और संयम का ध्यान रखती है। बारीक से बारीक बात वे हँसी की फुलझड़ियों के बीच कह देते हैं। उनकी कविता उनके भाषणों में छन-छनकर आती रहती है। अटल जी का कवि रूप भी शिखर को स्पर्श करता है। सन् 1939 से लेकर अद्यावधि उनकी

रचनाएँ अपनी ताजगी के साथ टाटक सामग्री परोसती आ रही है। उनका कवि युगानुकूल काव्य-रचना करता आ रहा है। वे एक साथ छंदकार, गीतकार, छंदमुक्त रचनाकार तथा व्यंग्यकार हैं। यद्यपि उनकी कविताओं का प्रधान स्वर राष्ट्रप्रेम का है तथापि उन्होंने सामाजिक तथा वैचारिक विषयों पर भी रचनाएँ की हैं। प्रकृति की छबीली छटा पर तो वे ऐसा मुग्ध होते हैं कि सुधा-बुधा खो बैठते हैं। हिंदी के वरिष्ठ समीक्षकों ने भी उनकी विचार-प्रधान नई कविताओं की सराहना की है।

अटल जी का एक परिचय सार्वजनिक कार्यों में रूचि के रूप में भी देखते हैं। यही कारण है कि ग्वालियर रियासत दोहरी गुलामी में जब थी और राजतंत्र के प्रति जनमानस में आक्रोश था और सत्ता के विरुद्ध आंदोलन चलते रहते थे। सन् 1942 में जब गाँधी जी ने 'अँग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा दिया तो ग्वालियर भी अगस्त क्रांति की लपटों में आ गया। छात्र वर्ग आंदोलन की अगुवाई कर रहा था और अटलजी तो इसमें सबके आगे ही रहते थे। जब आंदोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया तो पकड़-धकड़ होने लगी। कोतवाल, जो उनके पिताश्री कृष्ण बिहारी के परिचित थे, ने पिताजी को बताया कि आपके चिरंजीवी कारागार जाने की तैयारी कर रहे हैं। पिताजी को अटल जी के कारागार की तो चिंता नहीं थी, किंतु अपनी नौकरी जाने की चिंता जरूर थी। इसलिए उन्होंने अपने पुत्र को अपने पैतृक गाँव बटेश्वर भेज दिया। वहाँ भी क्रांति की आग धधक रही थी। अटल जी के बड़े भाई श्री प्रेम बिहारी उन पर नजर रखने के लिए साथ भेजे गए थे। अटल जी पुलिस की लपेट में आ गए। उस समय वे नाबालिग थे। इसलिए उन्हें आगरा जेल की बच्चा-बैरक में रखा गया। चौबीस दिनों की अपनी इस प्रथम जेलयात्रा के संस्मरण वे हँस-हँसकर सुनाते। उनके बारे में कहा जाता है कि जिन दिनों अटल जी इंटरमीडिएट में पढ़ते थे, उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कविता 'हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय' लिखी थी। सन् 1942 में लखनऊ के कालीचरण कॉलेज में ओटीसी का कैम्प लगाया गया था। परमपूज्य गुरुजी के समक्ष जब उन्होंने अपनी यह कविता पढ़ी तो श्रोता बड़े प्रभावित हुए। जिस समय वे हवा में हाथ लहराते हुए मुद्रा विशेष में तेवर के साथ निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़ रहे थे, तो सभी श्रोता रोमांचित हो उठे, वो कविता थी :-

होकर स्वतंत्र मैंने कब चाहा है कर लूँ जग को गुलाम।
मैंने तो सदा सिखाया है करना अपने मन को गुलाम।
गोपाल-राम के नामों पर कब मैंने अत्याचार किए?
कब दुनिया को हिंदू करने घर-घर में नरसंहार किए?
कोई बतलाए काबुल में जाकर कितनी तोड़ीं मस्जिद?
भू-भाग नहीं, शत-शत मानव के हृदय जीतने का निश्चय।
हिंदू तन-मन, हिंदू जीवन, रग-रग हिंदू मेरा परिचय।

अपनी वेशभूषा से भारतीयता का दर्शन कराने वाले

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी राजाजी नाम से भी जाने जाते हैं। वे वकील, लेखक, राजनीतिज्ञ और दार्शनिक थे। वे स्वतन्त्र भारत के द्वितीय गवर्नर जनरल और प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल थे। 10 अप्रैल 1952 से 13 अप्रैल 1954 तक वे मद्रास प्रांत के मुख्यमंत्री रहे। वे दक्षिण भारत के कांग्रेस के प्रमुख नेता थे, किन्तु बाद में वे कांग्रेस के प्रखर विरोधी बन गए तथा स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की। वे गांधीजी के समधी थे। राजाजी की पुत्री लक्ष्मी का विवाह गांधीजी के सबसे छोटे पुत्र देवदास गांधी से हुआ था। 1900 के आस-पास उन्होंने वकालत प्रारंभ किया राष्ट्रवादी बाल गंगाधार तिलक से प्रभावित होकर उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया और सालेम नगर पालिका के सदस्य और फिर अध्यक्ष चुने गए। महात्मा गाँधा स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रीय हुए तब राजगोपालाचारी उनके अनुगामी बन गए। इसके पश्चात उन्होंने असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और अपनी वकालत छोड़ दी। वर्ष 1921 में उन्हें कांग्रेस कार्य समिति का सदस्य चुना गया और वह कांग्रेस के महामंत्री भी रहे।

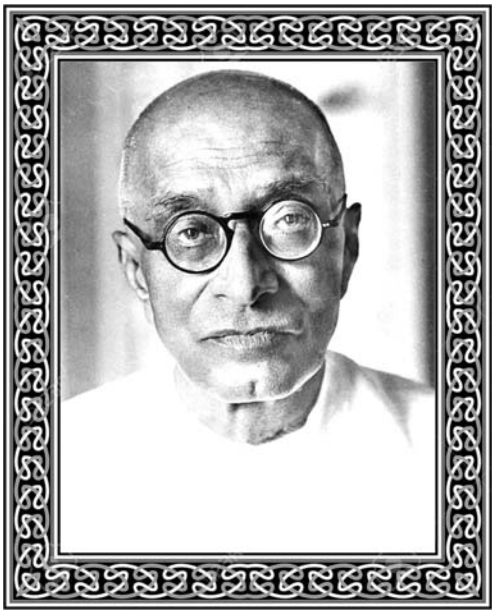

सन् 1922 में कांग्रेस के गया अधिवेशन में उन्हें एक नयी पहचान मिली। उन्होंने 'गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1919 के तहत अग्रेजी सरकार के साथ किसी भी सहयोग का विरोध किया और 'इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल' के साथ-साथ राज्यों के 'विधान परिषद्' में प्रवेश का भी विरोधा कर 'नो चेन्जर्स' समूह के नेता बन गए। 'नो चेन्जर्स' ने 'प्रो चेन्जर्स' को पराजित कर दिया जिसके फलस्वरूप मोतीलाल नेहरु और चितरंजन दास जैसे नेताओं ने इस्तीफा दे दिया। गाँधाी जी ने पहली भेंट में उनकी प्रतिभा को पहचाना और उनसे मद्रास में सत्याग्रह आन्दोलन का नेतृत्व करने का आहवान किया। उन्होंने पूरे जोश से मद्रास सत्याग्रह आन्दोलन का नेतृत्व किया और गिरफ्तार होकर जेल गये। जेल से छूटते ही चक्रवर्ती ने अपनी वकालत और तमाम सुख सुविधाओं को त्याग दिया और पूर्ण रूप से देश के स्वतंत्रता संग्राम को समर्पित हो गये। सन् 1921 में गाँधी जी ने नमक सत्याग्रह आरंभ किया। इसी वर्ष वह कांग्रेस के सचिव भी चुने गये। इस आन्दोलन के तहत उन्होंने जगजागरण के लिए पदयात्रा की और वेदयासम के सागर तट पर नमक कानून का उल्लंघन किया। परिणामस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर पुनः जेल भेज दिया गया। इस समय तक चक्रवर्ती देश की राजनीति और कांग्रेस में इतना ऊँचा कद प्राप्त कर चुके थे कि गाँधी जी जैसे नेता भी प्रत्येक कार्य में उनकी राय लेते थे। 1937 में चक्रवर्ती के नेतृत्व में कांग्रेस ने मद्रास प्रांत में विजय प्राप्त की। उन्हें मद्रास का मुख्यमंत्री बनाया गया। 1946 में देश की अंतरिम सरकार बनी। उन्हें केंद्र सरकार में उद्योग मंत्री बनाया गया। 1947 में देश के पूर्ण स्वतंत्र होने पर उन्हें बंगाल का राज्यपाल नियुक्त किया गया। 1950 में वे पुनः केंद्रीय मंत्रिमंडल में ले लिए गए। इसी वर्ष सरदार पटेल की मृत्यु के पश्चात वे केंद्रीय गृहमंत्री बनाए गए। 1952 के आम चुनावों में लोकसभा सदस्य बने और मद्रास के मुख्यमंत्री निर्वाचित हुए। कुछ वर्षों बाद कांग्रेस की नीतियों के विरोधा में उन्होंने मुख्यमंत्री पद और कांग्रेस दोनों को ही छोड़ दिया और अपनी पृथक स्वतंत्र पार्टी की स्थापना की।

☞ **सम्मान और पुरस्कार :-** वर्ष 1954 में भारतीय राजनीति के चाणक्य कहे जाने वाले राजाजी को भारत रत्न से सम्मानित किया गया। वे तमिल और अंग्रेजी के बहुत अच्छे लेखक थे। गीता और उपनिषदों पर उनकी टीकाएं प्रसिद्व चक्रवर्ती थरोमगम पर साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया। नशाबंदी और स्वदेशी वस्तुओं विशेषकर खादी के प्रचार-प्रसार में उनका योगदान महत्वपूर्ण माना जाता है। अपनी वेशभूषा से भारतीयता के दर्शन कराने वाले इस महापुरुष का 28 दिसंबर 1972 को देहांत हो गया।

अपनी वेशभूषा से भी भारतीयता के दर्शन कराने वाले इस महापुरुष का 28 दिसम्बर, 1972 को निधन हो गया।

समूचे विश्व को विद्यालय मानने वाले
डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

शिक्षा और राजनीति में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी ने महान दार्शनिक शिक्षाविद् और लेखक डॉ. राधाकृष्णन को देश का सर्वोच्च अलंकरण भारत रत्न प्रदान किया. 17 अप्रैल, 1975 को सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने लंबी बीमारी के बाद अपना देह त्याग दिया. हमारे देश में डॉक्टर राधाकृष्णन के जन्मदिन 5 सितंबर को प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन समस्त देश में भारत सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षकों को पुरस्कार प्रदान किया जाता है। डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन गैर राजनीतिक व्यक्ति होते हुए भी देश के राष्ट्रपति बने। इससे यह साबित होता है कि यदि व्यक्ति अपने क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य करे तो भी दूसरे क्षेत्र उसकी प्रतिभा से अप्रभावित नहीं रहते। डॉक्टर राधाकृष्णन बहुआयामी प्रतिभा के धनी होने के साथ ही देश की संस्कृति को प्यार करने वाले व्यक्ति थे। उन्हें एक बेहतरीन शिक्षक, दार्शनिक, देशभक्त और निष्पक्ष एवं कुशल राष्ट्रपति के रूप में यह देश सदैव याद रखेगा।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्वतंत्र भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति थे। उन्होंने डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद की गौरवशाली परम्परा को आगे बढ़ाया। उनका कार्यकाल 13 मई, 1962 से 13 मई, 1967 तक रहा। उनका नाम भारत के महान् राष्ट्रपतियों की प्रथम पंक्ति में सम्मिलित है। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के लिए सम्पूर्ण राष्ट्र इनका सदैव ऋणि रहेगा। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म तमिलनाडु के तिरूतनी ग्राम में, 5 सितंबर 1888 को हुआ था। इनका जन्मदिवस 5 सितंबर आज भी पूरा राष्ट्र शिक्षक दिवस के रूप में मनाता है। डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारतीय संस्कृति के ज्ञानी, एक महान् शिक्षाविद, महान् दार्शनिक, महान् वक्ता होने के साथ ही साथ विज्ञानी हिन्दू विचारक थे। डॉक्टर राधाकृष्णन ने अपने जीवन के 40 वर्ष एक शिक्षक के रूप में व्यतीत किए थे। वह एक आदर्श शिक्षक थे। डॉक्टर राधाकृष्णन समूचे विश्व को एक विद्यालय मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। अत: विश्व को एक ही इकाई मानकर शिक्षा का प्रबंधन करना चाहिए। ब्रिटेन के एडिनबरा विश्वविद्यालय में दिये अपने भाषण में डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था कि मानव को एक होना चाहिए। मानव इतिहास का संपूर्ण लक्ष्य मानव जाति की मुक्ति है। जब देशों की नीतियों का आधार पूरे विश्व में शांति की स्थापना का प्रयत्न हो। । वह जिस भी विषय को पढ़ाते थे, पहले स्वयं उसका गहन अध्ययन करते थे। दर्शन जैसे गंभीर विषय को भी वह अपनी शैली से सरल, रोचक और प्रिय बना देते थे।

21 वर्ष की उम्र अर्थात 1909 में राधाकृष्णन ने मद्रास प्रेसिडेंसी कॉलेज में कनिष्ठ व्याख्याता के तौर पर दर्शन शास्त्र पढ़ाना आरम्भ किया। यह उनका परम सौभाग्य था कि उनको अपनी प्रकृति के अनुकूल आजीविका प्राप्त हुई थी। यहाँ उन्होंने 7 वर्ष तक न केवल अध्यापन कार्य किया बल्कि स्वयं भी भारतीय दर्शन और भारतीय धर्म का गहराई से अध्ययन किया। उन दिनों व्याख्याता के लिए यह आवश्यक था कि अध्यापन हेतु वह शिक्षण का प्रशिक्षण भी प्राप्त करे। इस कारण 1910 में राधाकृष्णन ने शिक्षण का प्रशिक्षण मद्रास में लेना आरम्भ कर दिया। इस समय इनका वेतन मात्र 37 रुपये था। दर्शन शास्त्र विभाग के तत्कालीन प्रोफेसर राधाकृष्णन के दर्शन शास्त्रीय ज्ञान से काफी अभिभूत हुए। उन्होंने उन्हें दर्शन शास्त्र की कक्षाओं से अनुपस्थित रहने की अनुमति प्रदान कर दी। लेकिन इसके बदले में यह शर्त रखी कि वह उनके स्थान पर दर्शन शास्त्र की कक्षाओं में पढ़ा दें। तब राधाकृष्णन ने अपने कक्षा साथियों को तेरह ऐसे प्रभावशाली व्याख्यान दिए, जिनसे वह शिक्षार्थी चकित रह गए। यह सर्वपल्ली राधाकृष्णन की ही प्रतिभा थी कि स्वतंत्रता के बाद इन्हें संविधान निर्मात्री सभा का सदस्य बनाया गया।

1952 में सोवियत संघ से आने के बाद डॉक्टर राधाकृष्णन उपराष्ट्रपति निर्वाचित किए गए। संविधान के अंतर्गत उपराष्ट्रपति का नया पद सृजित किया गया था। नेहरू जी ने इस पद हेतु राधाकृष्णन का चयन करके पुन: लोगों को चौंका दिया। उन्हें आश्चर्य था कि इस पद के लिए कांग्रेस पार्टी के किसी राजनीतिज्ञ का चुनाव क्यों नहीं किया गया। उपराष्ट्रपति के रूप में राधाकृष्णन ने राज्यसभा में अध्यक्ष का पदभार भी सम्भाला। सन् 1952 में वे भारत के उपराष्ट्रपति बनाए गए। बाद में पंडित नेहरू का यह चयन भी सार्थक सिद्धद्ध हुआ, क्योंकि उपराष्ट्रपति के रूप में एक गैर राजनीतिज्ञ व्यक्ति ने सभी राजनीतिज्ञों को प्रभावित किया। संसद के सभी सदस्यों ने उन्हें उनके कार्य व्यवहार के लिए काफी सराहा। इनकी सदासयता, दृढ़ता और विनोदी स्वभाव को लोग आज भी याद करते हैं। सितंबर, 1952 में इन्होंने यूरोप और मिडिल ईस्ट देशों की यात्र की ताकि नए राष्ट्र हेतु मित्र राष्ट्रों का सहयोग मिल सके।

डॉ. राधाकृष्णन ने अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। वे पेरिस में यूनेस्को नामक संस्था की कार्यसमिति के अध्यक्ष भी रहे। यह संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ का एक अंग है और पूरे विश्व के लोगों की भलाई के लिए अनेक कार्य करती है। डॉ. राधाकृष्णन सन् 1949 से सन् 1952 तक रूस की राजधानी मास्को में भारत के राजदूत पद पर रहे। भारत रूस की मित्रता बढ़ाने में उनका भारी योगदान रहा था।

सी. वी. रमण

जिनकी महत्वपूर्ण खोज की याद में मनाया जाता है राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

चन्द्रशेखर वेंकटरामन का जन्म 7 नवम्बर सन् 1888 ई. में तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली नामक स्थान में हुआ था। आपके पिता चन्द्रशेखर अय्यर एस. पी. जी. कॉलेज में भौतिकी के प्राध्यापक थे। आपकी माता पार्वती अम्मल एक सुसंस्कृत परिवार की महिला थीं। सन् 1892 ई. मे आपके पिता चन्द्रशेखर अय्यर विशाखापतनम के श्रीमती ए. वी.एन. कॉलेज में भौतिकी और गणित के प्राध्यापक होकर चले गए। उस समय आपकी अवस्था चार वर्ष की थी। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा विशाखापत्तनम में ही हुई। वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य और विद्वानों की संगति ने आपको विशेष रूप से प्रभावित किया। आपने बारह वर्ष की अल्पावस्था में ही मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। तभी आपको श्रीमती एनी बेसेंट के भाषण सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके लेख पढ़ने को मिले। आपने रामायण, महाभारत जैसे धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया। इससे आपके हृदय पर भारतीय गौरव की अमिट छाप पड़ गई। आपके पिता उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजने के पक्ष में थे; किन्तु एक ब्रिटिश डॉक्टर ने आपके स्वास्थ्य को देखते हुए विदेश न भेजने का परामर्श दिया। फलत: आपको स्वदेश में ही अध्ययन करना पड़ा। सन् 1903 ई. में चेन्नैई के प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश ले लिया। यहाँ के प्राध्यापक आपकी योग्यता से इतने प्रभावित हुए कि आपको अनेक कक्षाओं में उपस्थित होने से छूट मिल गई। आप बी.ए. की परीक्षा में विश्वविद्यालय में अकेले ही प्रथम श्रेणी में आए। सीवी रमन उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश नहीं जा सकते थे, इसलिए उन्होंने अखिल भारतीय एकाउंट्स सर्विस प्रतियोगी परीक्षा दी और पहले स्थान पर रहे। वह मात्र 19 वर्ष की आयु में वित्त विभाग, कलकत्ता के सहायक एकाउंटेंट जनरल के पद पर नियुक्त किए गए। उन्होंने नौकरी लगने से पहले लोकसुंदरी अम्मल से शादी कर ली थी।

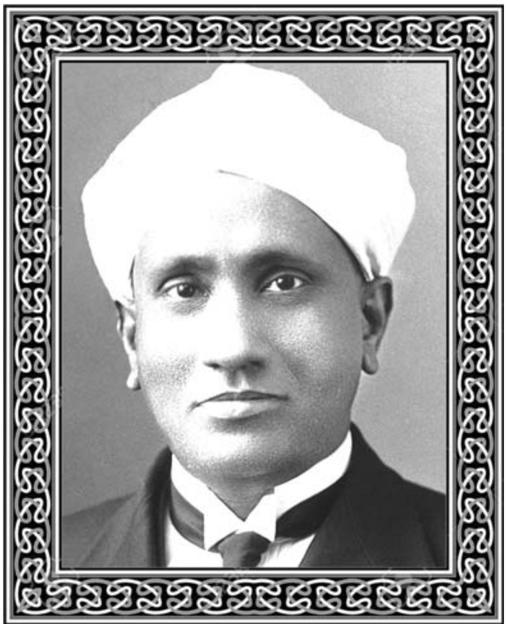

डॉ. सी वी रमन के बारे में कहा जाता है कि अपनी सहायक एकाउंटेंट जनरल की नौकरी से वह संतुष्ट नहीं थे। एक दिन घर लौटते समय उनकी निगाह 'द इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साइंस' पर पड़ी और वह उस संस्थान में गए। यहां पर उनकी मुलाकात अमृत लाल से हुई। उन्होंने रमन की प्रतिभा को जान लिया और उन्होंने भारतीय विज्ञान को प्रोत्साहित करने वाली इस संस्था में उनका स्वागत किया। इसके बाद डॉ. रमन ने इस प्रयोगशाला में कार्य करना शुरू कर दिया था। उन्होंने भौतिकी के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण शोध-कार्य किए। रमन की भौतिकी के क्षेत्र में लगन को देखकर कलकत्ता विश्वविद्यालय के तत्कालीन उपकुलपति सर आशुतोष मुखर्जी ने उन्हें भौतिक विज्ञान के प्रोफेसर के रूप में नियुक्त करने का प्रस्ताव रखा, जिसे उन्होंने सहर्ष ही स्वीकार कर लिया। इसके बाद उन्होंने वित्त विभाग में अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। वर्ष 1921 में सर चंद्रशेखर वेंकट रमन को ऑक्सफोर्ड, इंग्लैंड से विश्वविद्यालयीन कांग्रेस में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। वहां पर उनकी मुलाकात अर्नेस्ट रदरफोर्ड, जे.जे. थामसन, लैंडस्टीनर जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिकों से हुई। जब वह इंग्लैंड से भारत लौट रहे थे, तब एक अनपेक्षित घटना के कारण 'रमन प्रभाव' की खोज के लिए उन्हें प्रेरणा मिलीं। बाद में कलकत्ता विश्वविद्यालय पहुंच कर उन्होंने अपने सहयोगी डॉ. के. एस. कृष्णन के साथ मिलकर जल और बर्फ के पारदर्शी प्रखंडों (ब्लॉक्स) एवं अन्य पार्थिव वस्तुओं के ऊपर प्रकाश के प्रकीर्णन पर अनेक प्रयोग किए। इन प्रयोगों के परिणामस्वरूप वह अपनी उस खोज पर पहुंचे, जो दुनियाभर में 'रमन प्रभाव' नाम से प्रसिद्ध है। इसकी घोषणा 28 फरवरी, 1928 को की गई थी। उनकी इस महत्वपूर्ण खोज की याद में प्रतिवर्ष भारत में 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' मनाया जाता है। इस दिवस को मनाए जाने का उद्देश्य है भारत के छात्र छात्राओं में विज्ञान के प्रति रुचि जागृत करना, विज्ञान के क्षेत्र में नए प्रयोगों के लिए प्रेरित करना तथा विज्ञान एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों के प्रति सजग बनाना है। इस दिन विज्ञान संस्थान, प्रयोगशाला, विज्ञान अकादमी, स्कूल, कॉलेज तथा प्रशिक्षण संस्थानों में वैज्ञानिक गतिविधियों से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता हैं। रमण प्रभाव के बारे में बताया जाता है। विज्ञान के प्रति भ्रांतियों को दूर कर आणविक सिद्धांत को समझाया जाता है।

वर्ष 1929 में ब्रिटिश सरकार ने डॉ. सीवी रमन को 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया। वेंकटरमन को इस खोज के लिए वर्ष 1930 में भौतिक विज्ञान का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया। वह पहले एशियाई और अश्वेत थे, जिन्हें भौतिकी का नोबेल मिला था। वर्ष 1954 में सीवी रमन को भारत सरकार ने देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि वह पहले ऐसे भारतीय वैज्ञानिक बने, जिन्हें प्रतिष्ठित 'भारत रत्न' पुरस्कार से नवाजा गया।

भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित करने वाले महान वैज्ञानिक डॉ. सीवी रमन का निधन 21 नवंबर, 1970 को 82 वर्ष की आयु में हो गया।

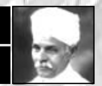

डॉ. भगवान दास

जिनके आगे राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री भी सिर झुकाते थे

डॉ. भगवान दास का जन्म 12 जनवरी, 1869 को, वाराणसी में हुआ। इनके पिता जी का नाम साह माधव दास था, जो कि चुनिंदा प्रतिष्ठित और धनी व्यक्तियों में गिने जाते थे। ऐश्वर्य, धन संपदा के वारिस होने के बावजूद, उनके रोम रोम में, देश भक्ति, दान दक्षिणा जैसे संस्कार, पूर्णः समाहित थे। जो कि उन्हें अपने पूर्वजों से प्रदत्त थे, जिनका वो सद उपयोग देश सेवा कर, करना चाहते थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा वाराणसी से ही आरंभ हुई, तीव्र बुद्धि क्षमता के कारण ही, इन्होंने 12 वर्ष की अल्प आयु में, हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। अध्ययन के दौरान भगवान दास जी ने संस्कृत हिन्दी, अरबी, उर्दू, फारसी जैसी कई भाषाओं में अच्छी पकड़ बना ली थी। डा. भगवान दास जी 18 वर्ष की आयु में ही, वहाँ से उन्होंने दर्शन शास्त्र में एम. ए. की उपाधि प्राप्त कर ली। डा. भगवान दास, डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवन चरित्र व गांधी जी की विचार धारा से काफी प्रभावित थे। काशी के इस महान दार्शनिक को देश का पहला भारत रत्न होने का गौरव प्राप्त है। वर्ष 1955 में भारत रत्न की उपाधि देने के बाद तत्कालीन राष्ट्रपति डा. राजेंद्र प्रसाद ने प्रोटोकाल तोड़ते हुए उनका पैर छूकर आशीर्वाद लिया। जब उन्हें प्रोटोकाल का याद दिलाया गया तो उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति होने के कारण डॉ. भगवान दास को भारत रत्न दिया और सामान्य नागरिक होने के नाते पैर छूकर आशीर्वाद लिया। ऐसे भारत रत्न थे डा. भगवान दास, जिनके आगे राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री भी सिर झुकाते थे। भगवान दास हिंदी के प्रति अनुराग के कारण कई साहित्यिक संस्थाओं से भी जुड़े रहे। विद्यापीठ, नागरी प्रचारिणी सभा-काशी, हिंदी साहित्य सम्मेलन से भी उनका बहुत गहरा संबंध था।

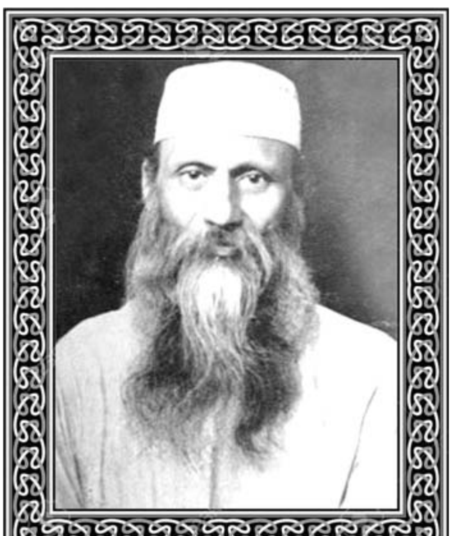

डॉक्टर भगवान दास शिक्षा शास्त्री, स्वतंत्रता सेनानी, दार्शनिक व कई संस्थाओं के संस्थापक रहे। उन्होंने डॉक्टर एनी बेसेंट को व्यवसायी सहयोग भी दिया। जो बाद मे सेंट्रल हिंदू कॉलेज की स्थापना का मुख्य कारण बना। परतंत्र होने के कारण भारतीय भाषा, सभ्यता और संस्कृति नष्ट-भ्रष्ट हो रही थी और हमारे महापुरुषों द्वारा उसे बचाने के गंभीर प्रयास किये जा रहे थे। प्रसिद्ध समाज सेविका एनी बेसेंट वाराणसी में एक ऐसे विद्यालय की स्थापना करना चाहती थी जो अंग्रेजों के प्रभाव से पूर्णः मुक्त हो। जैसे ही डॉ. भगवान दास को उक्त विषय की सूचना मिली, तो उन्होंने उक्त उद्देश्य को पूर्ण करने के प्रयत्न में, अपना दिन रात एक कर दिया। उन्हीं के सार्थक प्रयासों के फलस्वरूप वाराणसी में सैंट्रल हिन्दू कॉलेज की स्थापना की जा सकी। इसके बाद पं. मदनमोहन मालवीय ने वाराणसी में हिन्दू विश्वविद्यालय स्थापित करने का विचार किया, तब डॉ. भगवान दास ने उनके साथ भी, काशी हिन्दू विद्यापीठ की स्थापना में अपना अहम योगदान दिया और पूर्व में स्थापित सैंट्रल हिन्दू कॉलेज का उसमें विलय कर दिया। डॉ. भगवान दास काशी विद्यापीठ के संस्थापक सदस्य ही नहीं, उसके प्रथम कुलपति भी बने।

जब देश स्वतंत्र हुआ, तब मौजूदा सरकार द्वारा, डॉ. भगवान दास की राष्ट्रहित गतिविधियों के चलते, उन्हें सरकार में महत्वपूर्ण पद ग्रहण का अनुरोध किया गया, किंतु प्रबल गाँधीवादी विचारधारा के धनी व्यक्तित्व ने उन्हें विनय पूर्वक, उक्त पद को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने दर्शन, धर्म और शिक्षा के क्षेत्र को ही, राष्ट्र सेवा, समाज सेवा के लिए सर्वोपरि समझा। गांधी जी की, प्रेरणा के चलते उन्होंने सन् 1921 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। आंदोलन कारी होने के कारण, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। असहयोग आन्दोलन में भी उन्होंने अपनी सहभागिता बढ़ चढ़ कर दर्ज कराई। उक्त कारणों के चलते ही वे जनता के समक्ष, कांग्रेसी नेता व स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में उभरे। असहयोग आन्दोलन के समय डॉ. भगवान दास काशी विश्वविद्यालय के कुलपति थे। 1922 में डा. भगवान दास को वाराणसी के म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन के चुनावों में कांग्रेस को भारी मतों से विजय दिलायी और म्यूनिसिपल कमेटी के अध्यक्ष चुने गये। इस पद पर रहते हुए उन्होंने अनेक सुधार कार्य कराये। साथ ही वह अध्ययन और अध्यापन कार्य से भी जुड़े रहे, विशेष रूप से हिन्दी भाषा के उत्थान और विकास में उनका योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किये। सन् 1935 के कॉसिल के चुनाव में वे कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। कालांतर में वे सक्रिय राजनीति से दूर रहने लगे और भारतीय दर्शन और ध र्म अध्ययन और लेखन कार्य में व्यस्त हो गये।

डॉ. भगवान दास ने 30 से भी अधिक पुस्तकों को हिंदी व संस्कृत भाषा में लिखी। सन् 1953 में भारतीय दर्शन पर उनकी अंतिम पुस्तक प्रकाशित हुई। भारत के राष्ट्रपति ने सन 1955 में उन्हें, उक्त कार्य हेतु, भारतरत्न की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित किया। भारत रत्न मिलने के कुछ वर्षों बाद 18 सितम्बर 1958 में लगभग 90 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। वास्तव में उस दिन हमने एक ऐसी हस्ति को खो दिया था, जिसके जाने से देश को एक अपूर्णनीय क्षति पहुंची, जिसकी कमी को कभी भी पूरा नहीं किया जा सकता था। आज भले ही डॉ. भगवान दास हमारे बीच में ना हो, किंतु वे भारतीय दर्शन, धर्म और शिक्षा क्षेत्र में उनके द्वारा किये गये, सराहनीय सहयोग से हमेशा लोगों के दिलों में जीवत रहेंगे।

सैकड़ों अंग्रेजों की जान बचाने वाले महान इंजीनियर

सर मोक्षगुण्डम विश्वेश्वरय्या

विश्वेश्वरैया को भारत की प्रौद्योगिकी का जनक कहा जाता है। उनका कहना था, कार्य जो भी हो लेकिन वह इस ढंग से किया गया हो कि वह दूसरों के कार्य से श्रेष्ठ हो। विश्वेश्वरैया ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान उन्हें कितनी कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ा परंतु वह कभी निराश नहीं हुए। अपनी आत्मकथा में उन सिद्धांतों पर प्रकाश डाला है, जिनका अनुपालन कर वे प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सके । इस पुस्तक का नाम है 'मेमॉयर्स ऑफ माई वर्किंग लाइफ।'

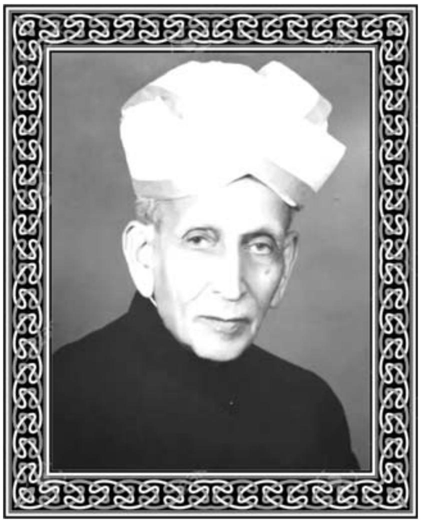

सर विश्वेश्वरय्या का पूरा नाम सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरय्या था. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म कोलार जिले के चिक्काबल्लापुर में 15 सितंबर 1860 को एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्रीनिवास शास्त्री तथा माता का नाम वेंकाचम्मा था। उनके जन्म दिवस यानि 15 सितंबर का दिन अभियन्ता दिवस (इंजीनियर्स डे) उन्हीं को याद करते हुए मनाया जाता है. वो मैसूर के 19वें दीवान थे जिनका कार्यकाल साल 1912 से 1918 के बीच रहा. उन्हें न सिर्फ 1955 में भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया बल्कि सार्वजनिक जीवन में योगदान के लिए किंग जॉर्ज पंचम ने उन्हें ब्रिटिश इंडियन एम्पायर के नाइट कमांडर के सम्मान से भी नवाजा. वो मांड्या जिले में बने कृष्णराज सागर बांध के निर्माण के मुख्य स्तंभ माने जाते हैं और उन्होंने हैदराबाद शहर को बाढ़ से बचाने का सिस्टम भी दिया. विश्वेश्वरय्या के पिता संस्कृत के जानकार थे. वो 12 साल के थे जब उनके पिता का निधन हो गया. शुरुआती पढ़ाई चिकबल्लापुर में करने के बाद वो बैंगलोर चले गए जहां से उन्होंने 1881 में बीए डिग्री हासिल की. इसके बाद पुणे गए जहां कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में पढ़ाई की. उन्होंने बॉम्बे में पीडब्ल्यूडी से साथ काम किया और उसके बाद भारतीय सिंचाई आयोग में गए. मात्र 32 साल के उम्र में सुक्कुर (सिंध) महापालिका के लिए कार्य करते हुए उन्होंने सिंधु नदी से सुक्कुर कस्बे को जल आपूर्ति की जो योजना उन्होंने तैयार किया वो सभी इंजीनियरों को पसंद आया। अँगरेज सरकार ने सिंचाई व्यवस्था को दुरुस्त करने के उपायों को ढूंढने के लिए एक समिति बनाई। उनको इस समिति का सदस्य बनाया गया। इसके लिए उन्होंने एक नए ब्लॉक प्रणाली का आविष्कार किया। इसके अंतर्गत उन्होंने स्टील के दरवाजे बनाए जो कि बांध से पानी के बहाव को रोकने में मदद करता था। वाड्यार वंश के शासनकाल में कावेरी नदी पर बांध के निर्माण के दौरान देश में सीमेंट नहीं बनता था। इसके लिए इंजीनियरों ने मोर्टार तैयार किया जो सीमेंट से ज्यादा मजबूत था। उनके इस प्रणाली की बहुत तारीफ हुई और आज भी यह प्रणाली पूरे विश्व में प्रयोग में लाई जा रही है। उन्होंने मूसा व इसा नामक दो नदियों के पानी को बांधने के लिए भी योजना बनायीं थी। इसके बाद उन्हें वर्ष 1909 में मैसूर राज्य का मुख्य अभियन्ता नियुक्त किया गया।

अंग्रेजों को लेकर भी उनसे जुड़ा एक किस्सा काफी प्रसिद्ध है। दरअसल, यह उस समय की बात है जब भारत में अंग्रेजों का शासन था। खचाखच भरी एक रेलगाड़ी चली जा रही थी। यात्रियों में अधिकतर अंग्रेज थे। एक डिब्बे में एक भारतीय मुसाफिर गंभीर मुद्रा में बैठा था। सांवले रंग और मंझले कद का वह यात्री साधारण वेशभूषा में था इसलिए वहां बैठे अंग्रेज उसे मूर्ख और अनपढ़ समझ रहे थे और उसका मजाक उड़ा रहे थे। पर वह व्यक्ति किसी की बात पर ध्यान नहीं दे रहा था। अचानक उस व्यक्ति ने उठकर ट्रेन की जंजीर खींच दी। तेज रफ्तार में दौड़ती ट्रेन तत्काल रुक गई। सभी यात्री उसे भला-बुरा कहने लगे। थोड़ी देर में गार्ड भी आ गया और उसने पूछा, 'जंजीर किसने खींची है?' उस व्यक्ति ने बेझिझक उत्तर दिया, 'मैंने खींची है।' कारण पूछने पर उसने बताया, श्मेरा अनुमान है कि यहां से लगभग एक फर्लांग (220 गज) की दूरी पर रेल की पटरी उखड़ी हुई है।श गार्ड ने पूछा, 'आपको कैसे पता चला?' वह बोला, 'श्रीमान! मैंने अनुभव किया कि गाड़ी की स्वाभाविक गति में अंतर आ गया है। पटरी से गूंजने वाली आवाज की गति से मुझे खतरे का आभास हो रहा है।' गार्ड उस व्यक्ति को साथ लेकर जब कुछ दूरी पर पहुंचा तो यह देखकर दंग रह गया कि वास्तव में एक जगह से रेल की पटरी के जोड़ खुले हुए हैं और सब नट-बोल्ट अलग बिखरे पड़े हैं। तब तक दूसरे यात्री भी वहां आ पहुंचे। जब लोगों को पता चला कि उस व्यक्ति की सूझबूझ के कारण उनकी जान बच गई है तो वे उसकी प्रशंसा करने लगे। गार्ड ने पूछा, श्आप कौन हैं?' उस व्यक्ति ने कहा, 'मैं एक इंजीनियर हूं और मेरा नाम है डॉ. एम. विश्वेश्वरैया है।'

मैसूर राज्य में उनके योगदान को देखते हुए मैसूर के महाराजा ने उन्हें सन 1912 में राज्य का दीवान यानी मुख्यमंत्री नियुक्त कर दिया। मैसूर के दीवान के रूप में उन्होंने राज्य के शैक्षिक और औद्योगिक विकास के लिए अथक प्रयास किया। उनके प्रयत्न से राज्य में कई नए उद्योग लगे। उनमें से प्रमुख थे चन्दन तेल फैक्टरी, साबुन फैक्टरी, धातु फैक्टरी, क्रोम टेनिंग फैक्टरी। उनके द्वारा प्रारंभ किये गए कई कारखानों में से सबसे महत्वपूर्ण भद्रावती आयरन एंड स्टील वर्क्स है। सर एम विश्वेश्वरैया स्वेच्छा से 1918 में मैसूर के दीवान के रूप में सेवानिवृत्त हो गए। सेवानिवृत्ति के बाद भी वो सक्रिय रूप से कार्य कर रहे थे। राष्ट्र के लिए उनके अमूल्य योगदान को देखते हुए सन् 1955 में भारत सरकार ने उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया। जब सर एम विश्वेश्वरैया 100 साल के हुए तब भारत सरकार ने उनके सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया। 101 की उम्र में 14 अप्रैल 1962 को विश्वेश्वरैया का निधन हो गया।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री, जिनके सम्मान में मनाया जाता है बाल दिवस

पं. जवाहरलाल नेहरू

जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर 1889 को ब्रिटिश भारत में इलाहाबाद में हुआ। उनके पिता, मोतीलाल नेहरू एक धनी बैरिस्टर जो कश्मीरी पण्डित थे। मोती लाल नेहरू सारस्वत कौल ब्राह्मण समुदाय से थे। आजाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु के जन्म दिन को ही बाल दिवस और चिल्ड्रेन्स डे कहा जाता है, क्योकि नेहरु जी को बच्चे बहुत पसंद थे और बच्चे उन्हें चाचा नेहरु कहकर बुलाते थे. अगर हम नेहरु जी के जीवन को विस्तार से पढ़े, तो हमें उनके जीवन से ढेर सारी सीख पाने के लिए मिलती है. नेहरु जी एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे, देश को आजाद कराने के लिए नेहरु जी ने महात्मा गाँधी का साथ दिया था. नेहरु जी के अंदर देश प्रेम की ललक साफ दिखाई देती थी, महात्मा गाँधी उन्हें एक शिष्य मानते थे, जो उनके प्रिय थे. नेहरु जी को व्यापक रूप से आधुनिक भारत का रचियता माना जाता है. जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे. इनके पिता प्रसिद्ध बैरिस्टर व् समाजसेवी थे. नेहरु जी सम्पन्न परिवार के इकलौते बेटे थे . इनके अलावा इनके परिवार में इनकी तीन बहने थी. नेहरु जी कश्मीरी वंश के सारस्वत ब्राह्मण थे. नेहरु जी ने देश विदेश के नामी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों से शिक्षा प्राप्त की. इन्होने हैरो से स्कूल की प्रारम्भिक शिक्षा एवम ट्रिनिटी कॉलेज लन्दन से लॉ की शिक्षा प्राप्त की. इसके बाद कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से कानून शास्त्र में पारंगत हुए . 7 वर्ष इंग्लैण्ड में रहकर इन्होने फैबियन समाजवाद एवं आयरिश राष्ट्रवाद की जानकारी विकसित की. इन्हें 'गुलाब का फूल' बहुत पसंद था, जिसे वो अपनी शेरवानी में लगाकर रखते थे. इन्हें बच्चों से भी बहुत लगाव था ,बच्चे इन्हें 'चाचा नेहरु' कहकर सम्बोधित करते थे . इसी प्रेम के कारण इनका जन्मदिवस बाल दिवस के रूप में 14 नवम्बर को मनाया जाता है. नेहरु जी 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' के रचियता के रूप में भी विख्यात रहे.

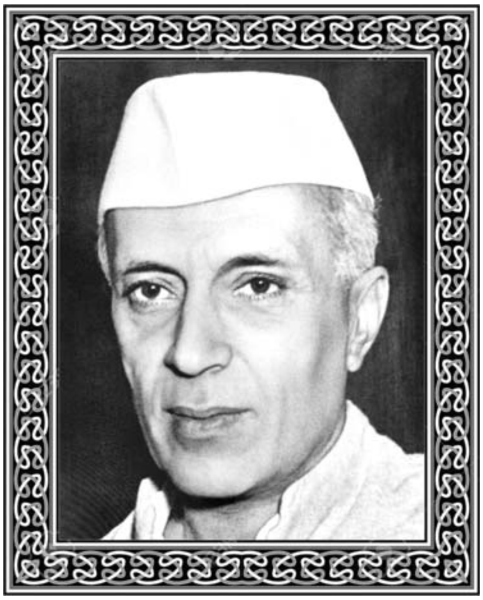

नेहरु जी अपने पड़ोसी देश चीन व् पाकिस्तान के साथ संबद्ध सुधारने के लिए हमेशा प्रयासरत रहे. उनकी सोच थी कि हमें अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना चाहिए, लेकिन 1962 में चीन ने भारत पर हमला कर दिया, जिससे नेहरु जी को बहुत आघात पहुंचा. पाकिस्तान से भी काश्मीर मसले के चलते कभी अच्छे सम्बन्ध नहीं बन पाए. नेहरु जी की 27 मई 1964 को दिल का दौरा पड़ने से 'स्वर्गवास' हो गया. उनकी मौत भारत देश के लिए एक बहुत बड़ी क्षती थी. देश के महान नेताओं व् स्वतंत्रता संग्रामी के रूप में उन्हें आज भी याद किया जाता है. उनकी याद में बहुत सी योजनायें, सड़क बनाई गई. जवाहरलाल नेहरु स्कूल, जवाहरलाल नेहरु टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी, जवाहरलाल नेहरु कैंसर हॉस्पिटल आदि की शुरुवात इन्ही के सम्मान में की गई.

1955 में नेहरु जी को देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत-रत्न' से नवाजा गया. वह देश के पहले ऐसे शख्स से जिन्हें प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए ही देश के सर्वोच्च सम्मान से नवाजा गया था। नेहरू को भारत रत्न से सम्मानित किए जाने को लेकर एक विवाद भी है कि उन्होंने खुद को ही भारत रत्न दिए जाने की सिफारिश कर दी। आमतौर पर भारत रत्न सम्मान दिए जाने को लेकर प्रधानमंत्री की तरफ से राष्ट्रपति को सिफारिश भेजी जाती है। इसके बाद राष्ट्रपति इस पर फैसला करता है। चूंकि, जवाहर लाल नेहरू को जिस समय भारत रत्न देने का फैसला किया गया, उस समय वह विदेश दौरे पर थे। बताया जाता है कि भारत रत्न दिए जाने को लेकर जानकारी तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने नेहरू के लौटने तक किसी से साझा नहीं की थी। ऐसे में प्रथम दृष्टया यह नहीं लगता कि नेहरू ने खुद को भारत रत्न दे दिया हो।

13 जुलाई 1955 को जवाहर लाल नेहरू यूरोप और सोवियत के दौरे से दिल्ली वापस आए। उस समय नेहरू जब दिल्ली एयरपोर्ट पर उतरे तब प्रोटोकॉल को तोड़ते हुए राजेंद्र प्रसाद खुद उनका स्वागत करने पहुंचे थे। राजेंद्र प्रसाद के अलावा काफी लोग नेहरू के स्वागत के लिए मौजूद थे। एयरपोर्ट पर उस समय नेहरू को एक छोटा सा भाषण देने के लिए भी जोर दिया गया। नेहरू के लौटने के बाद राजेंद्र प्रसाद ने राष्ट्रपति भवन में एक भोज का आयोजन किया। सभी आमंत्रित लोगों की मौजूदगी में डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने नेहरू को लेकर कहा, 'यह हमारे समय के शांति के सबसे बड़े वास्तुकार हैं।' इसके साथ ही उन्होंने जवाहर लाल नेहरू को भारत रत्न पुरस्कार के लिए चुने जाने की जानकारी साझा की। डॉ. प्रसाद ने कहा कि जवाहर सचमुच एक भारत रत्न है। ऐसे में औपचारिक रूप से उन्हें भारत रत्न क्यों नहीं दिया जाए? डॉ. प्रसाद ने कहा कि उन्होंने (नेहरू) शांति की नींव रखी और आप देखेंगे कि यह यात्रा ऐतिहासिक महत्व की साबित होगी। डॉ. प्रसाद के नेहरू पर इस बात का गर्व था कि उनके प्रयासों से भारत अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूत रूप से खड़ा दिखाई दे रहा था। यह कदम मैंने स्व-विवेक से, अपने प्रधानमंत्री की अनुशंसा के बगैर व उनसे किसी सलाह के बिना उठाया है। इसलिए एक बार कहा जा सकता है कि यह निर्णय अवैधानिक है, लेकिन मैं जानता हूं कि मेरे इस फैसले का स्वागत पूरे उत्साह से किया जाएगा।

एक महान राजनीतिज्ञ एवं जांबाज स्वतंत्रता सेनानी

गोविंद बल्लभ पंत

गोविन्द बल्लभ पंत का जन्म 10 सितम्बर, 1887 को अल्मोड़ा के खूंट नामक गाँव में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। गोविन्द बल्लभ पंत के पिता का नाम मनोरथ पंत व माँ का नाम गोविंदी बाई पंत था। गोविंद बल्लभ पंत जो भारत रत्न एवं हिम पुत्र नामों से भी जाना जाता है। छोटी सी आयु में ही गोविन्द बल्लभ पंत के पिता की मृत्यु हो जाने के कारण उनकी परवरिश की जिम्मेदारी उनके दादा जी 'बद्रीदत्त जोशी' जी ने सम्भाली। गोविन्द ने 10 वर्ष की आयु तक शिक्षा घर पर ही ग्रहण की। 1897 में गोविन्द को स्थानीय 'रामजे कॉलेज' में प्राथमिक पाठशाला में दाखिल कराया गया। 1899 में 12 वर्ष की अल्पायु में उनका विवाह 'गंगा देवी' से हो गया, उस समय वह कक्षा सात में थे। गोविन्द जी की प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा अल्मोड़ा से हुई। वर्ष 1905 में पंत जी अल्मोड़ा छोड़ कर इलाहाबाद चले गए अध्ययन के साथ ही साथ उनकी राजनीतिक क्षेत्र में भी रुचि बढ़ने लगी जिसके चलते वे कांग्रेस के स्वयंसेवक का कार्य भी करते थे। शिक्षा में इनकी रुचि व लगन के परिणाम स्वरूप वर्ष 1909 में उन्होंने कानून की शिक्षा सर्वोच्च अंको से प्राप्त की इनकी इसी उपलब्धि को देखते हुए उन्हें कॉलेज से "लेम्सडेंन अवार्ड" से सम्मानित किया गया। 1910 में गोविन्द बल्लभ पंत ने अल्मोड़ा में वकालत आरम्भ की। अल्मोड़ा के बाद पंत जी ने कुछ महीने रानीखेत में वकालत की, फिर पंत जी वहाँ से काशीपुर आ गये। उन दिनों काशीपुर के मुकदमें एस.डी.एम. (डिप्टी कलक्टर) की कोर्ट में पेश हुआ करते थे। यह अदालत ग्रीष्म काल में 6 महीने नैनीताल व सर्दियों के 6 महीने काशीपुर में रहती थी। इस प्रकार पंत जी का काशीपुर के बाद नैनीताल से सम्बन्ध जुड़ा। 1909 में पंत जी के पहले पुत्र की बीमारी से मृत्यु हो गयी और कुछ समय बाद पत्नी गंगादेवी की भी मृत्यु हो गयी। उस समय उनकी आयु 23 वर्ष की थी। वह गम्भीर व उदासीन रहने लगे तथा समस्त समय कानून व राजनीति को देने लगे। परिवार के दबाव पर 1912 में पंत जी का दूसरा विवाह श्रीमती कलादेवी से अल्मोड़ा में हुआ। पंत जी के कारण काशीपुर राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टियों से कुमाऊँ के अन्य नगरों की अपेक्षा अधिक जागरुक था। अंग्रेज शासकों ने काशीपुर नगर को काली सूची में शामिल कर लिया। पंतजी के नेतृत्व के कारण अंग्रेज काशीपुर को "गोविन्दगढ़" भी कहते थे। 1914 में काशीपुर में 'प्रेमसभा' की स्थापना पंत जी के प्रयत्नों से ही हुई। ब्रिटिश शासकों ने समझा कि समाज सुधार के नाम पर यहाँ आतंकवादी कार्यो को प्रोत्साहन दिया जाता है। फलस्वरूप इस सभा को हटाने के अनेक प्रयत्न किये गये पर पंत जी के प्रयत्नों से वह सफल नहीं हो पाये। 1914 में पंत जी के प्रयत्नों से ही 'उदयराज हिन्दू हाईस्कूल' की स्थापना हुई। राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के आरोप में ब्रिटिश सरकार ने इस स्कूल के विरुद्ध डिग्री दायर कर नीलामी के आदेश पारित कर दिये।

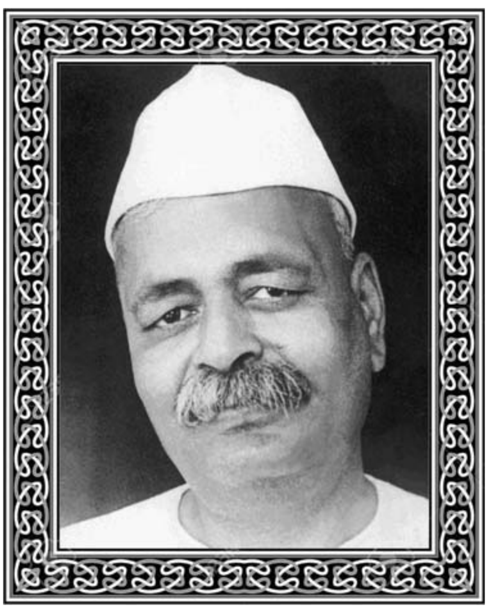

जब पंत जी को पता चला तो उन्होंनें चन्दा मांगकर इसको पूरा किया। 1916 में पंत जी काशीपुर की 'नोटीफाइड ऐरिया कमेटी' में लिये गये। बाद में कमेटी की 'शिक्षा समिति' के अध्यक्ष बने। कुमायूं में सबसे पहले नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा लागू करने का श्रेय पंत जी को ही है। पंतजी ने कुमायूं में 'राष्ट्रीय आन्दोलन' को 'अंहिसा' के आधार पर संगठित किया। आरम्भ से ही कुमाऊं के राजनीतिक आन्दोलन का नेतृत्व पंत जी के हाथों में रहा। कुमाऊं में राष्ट्रीय आन्दोलन का आरम्भ कुली उतार, जंगलात आंदोलन, स्वदेशी प्रचार तथा विदेशी कपडों की होली व लगान-बंदी आदि से हुआ। दिसम्बर 1921 में वे गांधी जी के आह्वान पर असहयोग आन्दोलन के रास्ते खुली राजनीति में उतर आये। 9 अगस्त 1925 को काकोरी काण्ड करके उत्तर प्रदेश के कुछ नवयुवकों ने सरकारी खजाना लूट लिया तो उनके मुकदमें की पैरवी के लिये अन्य वकीलों के साथ पन्त जी ने जी-जान से सहयोग किया। उस समय वे नैनीताल से स्वराज पार्टी के टिकट पर लेजिस्लेटिव कौन्सिल के सदस्य भी थे। 1927 में राम प्रसाद 'बिस्मिल' व उनके तीन अन्य साथियों को फाँसी के फन्दे से बचाने के लिये उन्होंने पण्डित मदन मोहन मालवीय के साथ वायसराय को पत्र भी लिखा किन्तु गांधी जी का समर्थन न मिल पाने से वे उस मिशन में कामयाब न हो सके। 1928 के साइमन कमीशन के बहिष्कार और 1930 के नमक सत्याग्रह में भी उन्होंने भाग लिया और मई 1930 में देहरादून जेल की हवा भी खायी। नवम्बर, 1934 में गोविन्द बल्लभ पंत 'रुहेलखण्ड-कुमाऊं' क्षेत्र से केन्द्रीय विधान सभा के लिए निर्विरोध चुन लिये गये। उसके बाद 17 जुलाई 1937 से लेकर 2 नवम्बर 1939 तक वे ब्रिटिश भारत में संयुक्त प्रान्त अथवा उत्तर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री बने। इसके बाद दोबारा उन्हें यही दायित्व फिर सौंपा गया और वे 1 अप्रैल 1946 से 15 अगस्त 1947 तक संयुक्त प्रान्त (यू०पी०) के मुख्यमंत्री रहे। जब भारतवर्ष का अपना संविधान बन गया और संयुक्त प्रान्त का नाम बदल कर उत्तर प्रदेश रखा गया तो फिर से तीसरी बार उन्हें ही इस पद के लिये सर्व सम्मति से उपयुक्त पाया गया। इस प्रकार स्वतन्त्र भारत के नवनामित राज्य के भी वे 26 जनवरी 1950 से लेकर 27 दिसम्बर 1954 तक मुख्यमंत्री रहे। सरदार बल्लब भाई पटेल की मृत्यु के बाद 10 जनवरी, 1955 को उन्होंने भारत के गृह मंत्री का पद संभाला। सन् 1957 में गणतन्त्र दिवस पर महान देशभक्त, कुशल प्रशासक, सफल वक्ता, तर्क का धनी, उदारमना, भारतीय संविधान में हिन्दी भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने और जमींदारी प्रथा को खत्म कराने वाले पन्त जी को भारत की सर्वोच्च उपाधि 'भारत रत्न' से विभूषित किया गया। 7 मई 1961 को हृदयाघात आने के कारण उनकी मृत्यु हो गयी। उस समय वे भारत सरकार में केन्द्रीय गृह मंत्री थे। उनके निधन के पश्चात लाल बहादुर शास्त्री उनके उत्तराधिकारी बने।

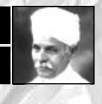

उपेक्षित विधवाओं के पुनर्वास को प्रेरित करने वाले

महर्षि कर्वे

हमारे देश में जिन व्यक्तियों को देश का सबसे बड़ा सम्मान "भारत रत्न" मिला है, उनमें से एक हैं, महर्षि कर्वे। महर्षि कर्वे का जन्म 18 अप्रैल, 1858 को महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले के 'मुरूड़' नामक गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री केशव पंत था। यद्यपि महर्षि कर्वे के माता-पिता बहुत ही स्वाभिमानी और उच्च विचारों वाले दंपत्ति थे, किंतु उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। वे अपने पुत्र को अच्छी शिक्षा और संस्कारों से युक्त बनाना चाहते थे, किंतु अपनी विपन्नता के कारण अधिक कुछ ना कर सके। स्त्री-शिक्षा और स्त्रियों की दशा सुधारने के क्षेत्र में उनका योगदान अनुपम है। अकेले अपने ही बलबूते पर उन्होंने एस.एन.टी.डी. महिला विश्वविद्यालय नामक एक अनूठी शिक्षा संस्था की स्थापना कर दिखाई। जब वह किसी काम को करने का निश्चय कर लेते थे, तो मार्ग में आने वाली कठिनाइयों से घबराते नहीं थे और उसके लिए कठिन-से-कठिन परिश्रम करने को तैयार रहते थे। सफलता न मिलने पर भी वह हिम्मत न हारते थे और बराबर जुटे रहते थे। उनके विद्यार्थी-जीवन की एक घटना से उनके इन गुणों पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। घटना 1875 की है। धोंडो केशव कर्वे उस समय 17 वर्ष के थे। उन दिनों मराठी छठे स्टैंडर्ड की परीक्षा बोर्ड की होती थी। उनके गांव मुरुड़ में परीक्षा केंद्र नहीं था। परीक्षा शुरू होने से केवल चार दिन पहले पता चला कि उन्हें परीक्षा देने सतारा जाना पड़ेगा। सतारा था, वहां से 110 मील । जाने के लिए कोई सवारी भी नहीं थी पैदल जाना था। रास्ता भी दुर्गम था। परंतु अपना सामान अपने कंधों पर लादकर मुरुड़ के पांच साहसी विद्यार्थी समय पर सतारा पहुंच ही गए। किंतु वहां पहुंच कर परीक्षा कमेटी के चेयरमैन ने दुबले-पतले और कमजोर घोड़ो को देखते ही कह दिया कि तुम तो 17 वर्ष के नहीं लगते। इसलिए तुम परीक्षा में नहीं बैठ सकते। चेयरमैन ने उसकी उम्र का प्रमाणपत्र देखने की भी आवश्यकता नहीं समझी। इतनी बड़ी यात्रा के बाद भी परीक्षा में बैठने की अनुमति न मिलने से भी धोंडो निराश नहीं हुआ। अगली बार कोल्हापुर से उसने वह परीक्षा पास की।

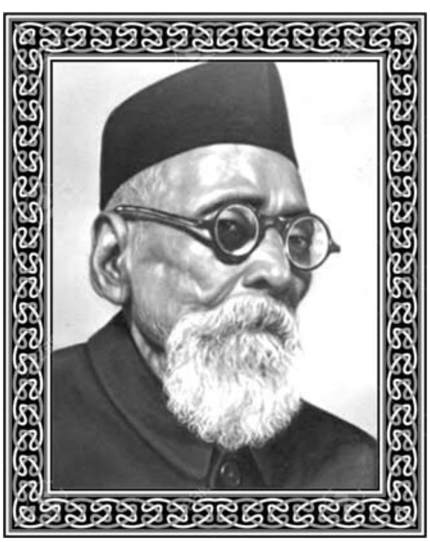

फर्ग्युसन कॉलेज में अध्यापन करते समय उन्होंने समाज सुधार के क्षेत्र में पदार्पण किया। सन् 1893 में उन्होंने अपने मित्र की विधवा बहन 'गोपूबाई' से विवाह किया। विवाह के बाद गोपूबाई का नया नाम 'आनंदीबाई' पड़ा। उनके इस कार्य के परिणाम स्वरूप पूरे महाराष्ट्र में विशेषकर उनकी जाति बिरादरी में बड़ा रोष और विरोध उत्पन्न हो गया। इसी विरोध ने महर्षि कर्वे को समाज द्वारा उपेक्षित विधवाओं के उद्धार और पुनर्वास के लिए प्रेरित किया। वह इन दिनों महात्मा गाँधी द्वारा चलाई गयी नई शिक्षा नीति और महाराष्ट्र समाज सुधार समिति के कार्यों में भी व्यस्त थे। जब देश के जाने माने समाज सेवियों और विद्वानों को महर्षि कर्वे द्वारा विधवाओं के उद्धार के लिए किए जाने वाले प्रयत्नों का पता चला तो उन्होंने मुक्त कंठ से उनके कार्यों की प्रशंसा की और सभी संभव सहायता देने का आश्वासन भी दिया। अब महर्षि कर्वे सहयोग और समर्थन प्राप्त होते ही उत्साह के साथ आम जनता को अपने विचारों से सहमत करने और इस उद्देश्य के लिए धन एकत्र करने के काम में लग गये। उन्होंने कुछ स्थानों पर अपने तत्वाधान में विधवाओं के पुनर्विवाह भी सम्पन्न कराये। धीरे धीरे महर्षि कर्वे के इस विधवा उद्धार के कार्यों को प्रशंसा, मान्यता और धन जन सभी मिलने लगे। सन् 1896 में उन्होंने पूना के हिंगले नामक स्थान पर दान में मिली एक भूमि पर एक कुटिया में एक विधवा आश्रम और अनाथ बालिका आश्रम की स्थापना कर दी। धीरे धीरे समाज के धनी और दयालु लोग महर्षि कर्वे के कार्यों से प्रभावित होकर तन मन धन तीनों प्रकार से सहयोग देने लगे। सन् 1907 में महर्षि कर्वे ने महिलाओं के लिए 'महिला विद्यालय' की स्थापना की। जब उन्होंने विधवा और अनाथ महिलाओं के इस विद्यालय को सफल होते देखा तो उन्होंने इस काम को आगे बढ़ाते हुए 'महिला विश्वविद्यालय' की योजना पर भी विचार करना प्रारम्भ कर दिया। अंतत: महर्षि कर्वे के अथक प्रयासों और महाराष्ट्र के कुछ दानवीर धनियों द्वारा दान में दी गयी विपुल धनराशि के सहयोग से सन् 1916 में 'महिला विश्वविद्यालय' की नींव रखी गयी।

सन 1942 में उनके द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय की रजत जयंती मनायी गयी। सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे महान् विद्वान् और शिक्षाविद ने इस समारोह की अध्यक्षता की। इसी वर्ष महर्षि कर्वे को बनारस विश्वविद्यालय द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। सन् 1951 में उनके विश्वविद्यालय को 'राष्ट्रीय विश्वविद्यालय' का दर्जा प्राप्त हुआ। इसी वर्ष पूना विश्वविद्यालय ने महर्षि कर्वे को डी.लिट. की उपाधि प्रदान की। महर्षि कर्वे के महान् समाज सुधार के कार्यों के सम्मान स्वरूप सन् 1955 में भारत सरकार द्वारा उन्हें 'पद्म भूषण' से विभूषित किया गया। इसी वर्ष 'श्रीमती नत्थीबाई भारतीय महिला विश्वविद्यालय' द्वारा उन्हें डी.लिट. की उपाधि प्रदान की गयी। सन 1958 में जब महर्षि कर्वे ने अपने जीवन के सौ वर्ष पूरे किए, देश भर में उनकी जन्म शताब्दी मनायी गयी। इस अवसर को अविस्मरणीय बनाते हुए भारत सरकार द्वारा इसी वर्ष उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। भारत सरकार द्वारा उनके सम्मान और स्मृति में एक डाक टिकट भी जारी किया गया।

उन्होंने 105 वर्ष के दीर्घ आयु प्राप्त की और अंत तक वह किसी न किसी रूप में मानव सेवा के कार्यों में लगे रहे। 9 नवंबर सन् 1962 को इस महान् आत्मा ने इस लोक से विदा ली।

बिधान चंद्र रॉय

जिनके याद में हर वर्ष मनाया जाता है 'नेशनल डॉक्टर्स डे'

बिधान चंद्र रॉय का जन्म बिहार के पटना जिले में 1 जुलाई 1882 को खजान्ची रोड बांकीपुर, पटना, बिहार मे एक प्रवासी बंगाली परिवार में हुआ था। उनके पिता जी का नाम प्रकाश चन्द्र रॉय और माता जी का नाम अघोरकामिनी देवी था. उनका जन्म, उनके जन्म स्थान को वर्तमान मे अघोर प्रकाश शिशु सदन नामक विद्यालय मे परिवर्तित कर दिया गया है। मात-पिता के ब्रह्मसमाजी होने से डाक्टर राय पर ब्रह्मसमाज का बाल्यावस्था से ही अमिट प्रभाव पड़ा था। बचपन में दूसरे छात्रों की तरह एक साधारण छात्र अध्यापकों को झांसा देकर भाग जाने में आपको बड़ा मजा आता था। केवल पास होने पर ही अपने को धन्य समझते थे। कक्षा में प्रथम आने या कुछ विशेष कर पाने का कभी कोई विचार उनके मन में उठता ही नहीं था। बांकीपुर कॉलेज पटना से उन्होंने बीए की परीक्षा पास की और वह कोलकाता आए कोलकाता में उन्हें चिढ़ थी। उन्होंने इंजीनियर या डॉक्टर बनने की सोंची। दोनों कॉलेजों में भर्ती की अर्जी भेजी उन्हें मेडिकल कॉलेज से भर्ती का पत्र पहले मिला और इसी कारण व 1901 में वहां दाखिल हो गए। मेडिकल कॉलेज के सारे अध्याय अध्ययन काल में वह केवल 5 रू० की एक पुस्तक की खरीद पाए। पुस्तके व पुस्तकालय व मित्रों से लेकर पढ़ते थे। इसी समय उनके पिता रिटायर हुए, राय के दोनों बड़े भाई इंग्लैंड में थे और उन्हें पैसा भेजना आवश्यक था इस कारण पिता विधान चंद्र राय को पर्याप्त धन देने में असमर्थ थे। अपनी पढ़ाई का खर्च छात्रवृत्ति से और अस्पताल में वार्ड बॉय का काम करके चलाया था द्य आपने हमेशा मुसीबतों का डटकर सामना किया। मेडिकल कॉलेज के वापस प्रिंसिपल कर्नल ल्यूकिस की उन पर विशेष कृपा थी। डॉक्टर राय का कहना था, कर्नल ल्यूकिस मुझसे आत्म सम्मान और महत्वाकांक्षा जागृत की और मुझमें सेवा त्याग और कष्ट सहन करने की भावना पैदा की। डॉक्टरी परीक्षा पास करने के बाद सन उन्नीस सौ छह में विधान चंद्र राय की प्रांतीय चिकित्सा सेवा में नियुक्ति हो गई और वह कर्नल डिफेंस में के सहायक के रूप में काम करने लगे उस समय भारत के चिकित्सा क्षेत्र में इंडियन मेडिकल सर्विस का बोलबाला था यह परीक्षा आईसीएस के समक्ष थी और इसके अधिकतर अधिकारी अंग्रेज होते थे बड़े बड़े पद पर उन्हीं को मिलते थे और अधिक योग्यता व अनुभव प्राप्त प्रांतीय सेवा के अधिकारियों को इन के नीचे काम करना पड़ता था डॉक्टर को कई बार अंग्रेज अधिकारियों से टक्कर लेने पड़े अपनी योग्यता और डरता तथा निडरता तथा कर्नल ल्यूकिस के सहयोग से कारण वह सदैव सफल रहे।

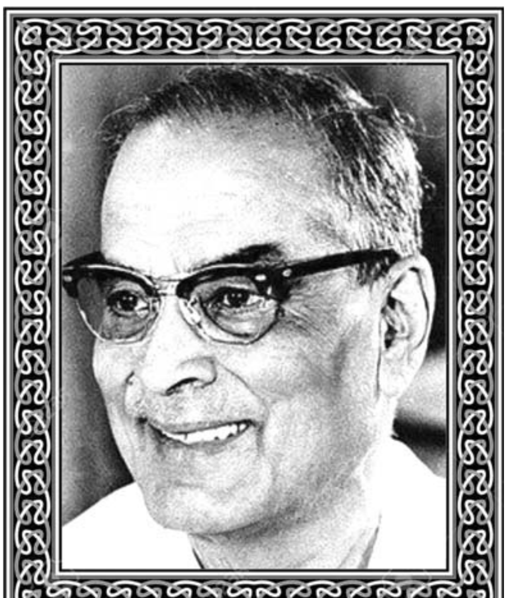

पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री डॉ विधान चंद्र राय को आधुनिक बंगाल का निर्माता माना जाता है. कई संस्थान तथा पांच शहरों, दुर्गापुर, कल्याणी, विधाननगर, अशोकनगर और हाबरा की स्थापना का श्रेय भी उन्हें जाता है. इतिहास में वह गिने चुने लोगों में हैं, जिन्हें भारत में एक साथ एफआरसीएस और एमआरसीपी की डिग्री मिली. उनकी याद में हर वर्ष एक जुलाई को नेशनल डॉक्टर्स डे मनाया जाता है. श्री राय ने पटना कॉलेजियट स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की. प्रेसिडेंसी कॉलेज, कलकत्ता से इंटर, तथा पटना कॉलेज से ग्रेजुएशन की डिग्री प्राप्त की. गणित में ऑनर्स की पढ़ाई करने वाले बिधान चंद्र राय वर्ष 1901 में कलकत्ता मेडिकल कॉलेज में पढ़ने पहुंचे. उन्होंने मेडिसिन में स्नातकोत्तर की पढ़ाई इंग्लैंड के सेंट बार्थोलोम्यूज हॉस्पिटल में की. इंग्लैंड से वह 1911 में स्वदेश लौटे. कई मेडिकल कॉलेजों में उन्होंने पढ़ाया. डॉ राय न केवल महात्मा गांधी के दोस्त थे, बल्कि उनके डॉक्टर भी थे. जब गांधीजी 1933 में पुणे में अनशन पर बैठे थे, तब डॉ राय ने उनकी चिकित्सा करनी चाही. गांधीजी ने यह कहकर दवा लेने से मना कर दिया कि वह भारत में नहीं बनी थी. महात्मा गांधी ने डॉ राय से कहा, 'मैं आपसे चिकित्सा क्यों कराऊं? क्या आप मेरे 40 करोड़ देशवासियों की मुफ्त में चिकित्सा करते हैं?' इस पर डॉ राय ने कहा, 'मैं सभी मरीजों की मुफ्त में चिकित्सा नहीं कर सकता. लेकिन, मैं यहां मोहनदास करमचंद गांधी की चिकित्सा करने नहीं आया हूं, बल्कि उसकी चिकित्सा करने आया हूं, जो मेरे देश के 40 करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं.' इसके बाद गांधीजी ने दवा ले ली.

भारत का स्वतंत्रता संग्राम जिस प्रकार अग्रणी वकीलों और राजनीतिज्ञों के योगदान से चला वहां देश के कुछ योग्यतम डॉक्टरों तथा अन्य चिकित्सकों के सहयोग से भी वंचित नहीं रहा डॉक्टर खान साहब हकीम अजमल खान, अन्सारी, डॉक्टर कर्वे और डॉक्टर सुशीला नायर के नाम इनमें प्रमुख है परंतु डॉ बिधान चंद्र राय का नाम सबसे ऊंचा है। क्योंकि उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी और देशभक्ति तो उन्हें विरासत में ही मिली थी।

1 जुलाई 1962 को जब लोग आपका जन्म दिवस मनाने की पूरी तैयारी कर रहे थे , तब किसे पता था, कि जन्मदिवस ही निधन दिवस में बदल जाएगा। सारा भारत आपके बिछोह में रो पड़ा था। 80 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया था।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाये जाने के प्रबल समर्थक

पुरुषोत्तम दास टंडन

पुरुषोत्तम दास टंडन का जन्म 1 अगस्त, 1882 को उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम और धार्मिक शहर इलाहाबाद में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय 'सिटी एंग्लो वर्नाक्यूलर विद्यालय' में हुई थी। इसके बाद उन्होंने एल.एल.बी. की डिग्री हासिल की और एम.ए. इतिहास विषय से किया। वर्ष 1906 में वकालत की प्रैक्टिस के लिए पुरुषोत्तम जी ने 'इलाहाबाद उच्च न्यायालय' में काम करना शुरू किया। पुरुषोत्तम जी के व्यक्तित्व का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष उनका विधायी जीवन था, जिसमें वह आजादी के पूर्व एक दशक से भी अधिक समय तक उत्तर प्रदेश की विधानसभा के अध्यक्ष रहे। वे संविधान सभा, लोक सभा और राज्य सभा के भी सदस्य रहे थे। वे समर्पित राजनयिक, हिन्दी के अनन्य सेवक, कर्मठ पत्रकार, तेजस्वी वक्ता और समाज सुधारक थे। पुरुषोत्तम जी हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के प्रबल समर्थक थे और इसको आगे बढ़ाने और राष्ट्रभाषा का स्थान देने के लिए काफी प्रयास कर रहे थे। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन ने 10 अक्टूबर, 1910 को 'नागरी प्रचारिणी सभा', वाराणसी के प्रांगण में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की स्थापना की। इसी क्रम में 1918 में उन्होंने 'हिन्दी विद्यापीठ' और 1947 में 'हिन्दी रक्षक दल' की स्थापना की। वे हिन्दी को देश की आजादी के पहले 'आजादी प्राप्त करने का' और आजादी के बाद 'आजादी को बनाये रखने काश एक बड़ा साधन मानते थे।' पुरुषोत्तमदास टंडन हिन्दी के प्रबल पक्षधर थे। वह हिन्दी में भारत की मिट्टी की सुगंध महसूस करते थे। शहिन्दी साहित्य सम्मेलनश के श्इंदौर अधिवेशनश में स्पष्ट घोषणा की गई थी कि- 'अब से राजकीय सभाओं, कांग्रेस की प्रांतीय सभाओं और अन्य सम्मेलनों में अंग्रेजी का एक शब्द भी सुनाई न पड़े। टंडन जी हिंदी-प्रेमी थे. हिंदी के महान साधक और अथक सिपाही, जिनकी सांस-सांस में हिंदी-अनुराग बसा था. पर उनके हिंदी-प्रेम का यह अर्थ न था कि वे उर्दू के विरोधी हैं. वास्तव में वे हिंदी और उर्दू को दो अलग-अलग भाषाएं न मानकर एक ही भाषा की दो शैलियां मानते थे, जिनकी लिपि अलग-अलग है. लिपि की भिन्नता न हो, तो कई बार तो यह तय करना भी कठिन हो जाता है कि यह हिंदी है या उर्दू? टंडन जी ने बहुत स्पष्ट शब्दों में लिखा है-आज हिंदी और उर्दू दो भिन्न सभ्यताओं की दो पृथक भाषाएं बन गई हैं.

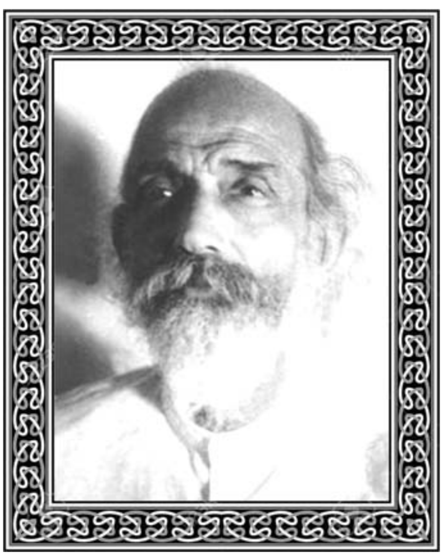

आजादी के बाद पुरुषोत्तम दास टंडन ने उत्तर प्रदेश की विधान सभा के प्रवक्ता के रूप में तेरह साल तक काम किया। 31 जुलाई, 1937 से लेकर 10 अगस्त, 1950 तक के लंबे कार्यकाल के दौरान उन्होंने विधान सभा को कई बार संबोधित किया। भारत की आजादी के बाद 1951 में हुए देश के पहले चुनाव में पाँच प्रत्याशी निर्विरोध चुने गए थे। इसके बाद 1952 में हुए उप-चुनाव में इलाहाबाद पश्चिम में कांग्रेस के पुरुषोत्तम दास टंडन निर्विरोध विजयी हुए। वर्ष 1962 में टिहरी गढ़वाल से वहाँ के राजा मानवेंद्रशाह ने जब चुनाव लड़ने का फैसला किया तो पुरुषोत्तम दास टंडन के मुकाबले कोई प्रत्याशी आगे नहीं आया। इस चुनाव में 'जनसंघ' के रंगीलाल ने परचा भरा था, लेकिन बाद में उन्होंने भी पर्चा वापस ले लिया। वर्ष 1951 ई. में पुरुषोत्तम दास टंडन कांग्रेस के अध्यक्ष बनाये गये थे, किंतु इस पद पर वे अधिक समय तक नहीं रहे। क्योंकि बाद के समय में भाषायी राज्यों के सम्बन्ध में कांग्रेस से उनका मतभेद हो गया। मतभेद हो जाने के कारण उन्होंने कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया। 1921 में महात्मा गांधी के आह्वान पर वकालत छोड़ कर खुद को देश-समाज के लिए समर्पित कर दिया। अनेक जेल यात्राएं की। किसानों-मजदूरों को संगठित करने की कोशिशें कीं। पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया। वे बेहतरीन वक्ता थे।

राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन प्रदेश विधानसभा के प्रथम अध्यक्ष थे। वह हिंदी के अनन्य उपासक थे। विधानसभा में हिंदी का चलन उनके कार्यकाल में ही शुरू हुआ। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी टंडन को राजर्षि की उपाधि ब्रह्मर्षि देवरहा बाबा ने दी थी। वह कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे परंतु कांग्रेस की अंदरूनी खींचतान की वजहों से राजर्षि टंडन बहुत दिन कांग्रेस के अध्यक्ष नहीं रहे और त्यागपत्र दे दिया। समझौतावादी रवैया उन्हें एकदम स्वीकार नहीं था। बड़े हिंदी साहित्यकार वियोगी हरि ने अपने संस्मरण में लिखा है, 'राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन को उनकी सेवाओं के लिए 'भारत रत्न' देने की घोषणा हुई। वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार और कवि सुमित्रानंदन पंत को 'पद्म भूषण' दिया गया। कोई और होता तो वह इस उपलब्धि पर इतराता घूमता। ढिंढोरा पीटता। पर, राजर्षि टंडन तो अलग ही मिट्टी के बने थे। उन्हें अपने भारत रत्न मिलने की उतनी खुशी नहीं थी जितनी पंत जी को 'भारत रत्न' न मिलने का दुख।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

राष्ट्र के प्रति सराहनीय योगदान को देखते हुए मिला सर्वोच्च सम्मान

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे। उनका जन्म 3 दिसंबर 1884 को बिहार के सिवान जिले के जिरादेई गांव में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। भारत की आजादी की लड़ाई में उन्होंने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। कांग्रेस में शामिल होने वाले बिहार के वह प्रमुख नेताओं में से थे। वकालत में पोस्ट ग्रैजुएट डॉ. राजेन्द्र प्रसाद महात्मा गांधी के बहुत बड़े समर्थक थे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को 1931 में सत्याग्रह आंदोलन और 1942 में हुए भारत छोड़ो आंदोलन के लिए माहात्मा गांधी के साथ जेल भी जाना पड़ा था। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद साल 1934 से 1935 तक कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। 1946 में हुए चुनाव के बाद उन्हें केंद्र सरकार में खाद्य एवं कृषि मंत्री बनाया गया था। राष्ट्र के प्रति उनके योगदान को देखते हुए उन्हें देश के सबसे बड़े पुरस्कार भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया। डॉ.राजेन्द्र प्रसाद की शादी केवल 12 वर्ष की उम्र में ही हो गई थी। उनकी पत्नी का नाम राजवंशी देवी था। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अपने स्कूल और कॉलेज के दिनों में काफी तेज छात्र माने जाते थे। उन्हे कलकत्ता विश्विद्यालय की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर हर महीने 30 रुपये की स्कॉलरशिप से पुरस्कृत किया गया था और इसके बाद साल 1902 में उन्होंने प्रसिद्ध कलकत्ता प्रेसिडेंसी कॉलेज में दाखिला ले लिया था। वह इतने बुद्धिमान थे कि एक बार परीक्षा के दौरान कॉपी चेक करने वाले अध्यापक ने उनकी शीट पर लिख दिया था कि 'परीक्षा देने वाला परीक्षा लेने वाले से ज्यादा बेहतर है'।

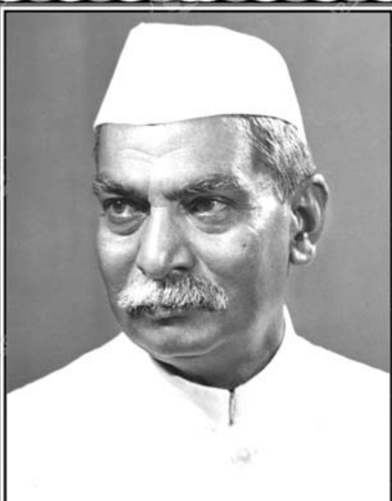

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन पर गांधी जी का गहरा प्रभाव पड़ा था। वह छुआछूत और जाति के प्रति गांधी जी के नजरिए का पूरा समर्थन करते थे। गांधी जी ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन पर इतना गहरा असर किया था कि वह अपने यहां काम करने वाले लोगों की संख्या को घटाकर एक कर दिया। इतना ही नहीं डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अपने घर के कामों को भी खुद ही करने लगे जिसमें पोछा लगाना भी शामिल था। गांधी जी की वजह से ही डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े थे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद महात्मा गांधी से बहुत प्रभावित थे और उनके समर्थक भी थे। चम्पारण आंदोलन के दौरान उन्होंने गांधी जी को काम करते देखा तो वह खुद को रोक ना सके और गांधी जी के साथ चम्पारण आंदोलन का हिस्सा होने से खुद को रोक न सके। इस आंदोलन के दौरान डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने गांधी जी का जमकर समर्थन किया। 1930 में शुरू हुए नमक सत्याग्रह आंदोलन में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एक तेज तर्रार कार्यकर्ता के रूप में नजर आए। इस आंदोलन के दौरान डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को बिहार राज्य का प्रमुख बना दिया गया और उन्होंने इस दौरान नमक बेचकर धन की व्यवस्था की। हालांकि इस आंदोलन के दौरान उन्हें कानून व्यवस्था का उल्लंघन करने के लिए 6 महीने की जेल की सजा भी हुई थी। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का भारत की आजादी और आजादी के बाद भी देश के लिए किया गया योगदान सराहनीय है। वर्ष 1946 में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने खाद्य एवं कृषि मंत्री के तौर पर देश की सेवा की और आजादी के बाद उन्हें भारत का राष्ट्रपति चुन लिया गया। राष्ट्रपति रहते डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने भारत की छवि को मजबूत बनाने के लिए उन्होंने कई देशों का दौरा किया। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का भारत की आजादी और आजादी के बाद भी देश के लिए किया गया योगदान सराहनीय है। वर्ष 1946 में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने खाद्य एवं कृषि मंत्री के तौर पर देश की सेवा की और आजादी के बाद उन्हें भारत का राष्ट्रपति चुन लिया गया। राष्ट्रपति रहते डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने भारत की छवि को मजबूत बनाने के लिए उन्होंने कई देशों का दौरा किया।

1950 में संविधान सभा की आखिरी बैठक में वे राष्ट्र्रपति चुने गए और 26 जनवरी, 1950 से 13 मई, 1962 तक देश के पहले राष्ट्रपति रहे. राष्ट्रपति बनने के बाद राजेंद्र प्रसाद ने कई सारे सामाजिक कार्य किए. 1962 में राष्ट्रपति पद से हट जाने के बाद उन्हें भारत सरकार द्वारा सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाजा गया. डॉ राजेंद्र प्रसाद अपने जीवन के आखिरी महीने बिताने के लिए उन्होंने पटना के निकट सदाकत आश्रम चुना! यहां पर 28 फरवरी 1963 में उनके जीवन की कहानी समाप्त हुई! हमको इन पर गर्व है और यह सदा राष्ट्र को प्रेरणा देते रहेंगे!

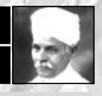

आधुनिक शिक्षा के सबसे बड़े समर्थक

डॉ. जाकिर हुसैन

डॉ. जाकिर हुसैन का जन्म 8 फरवरी, 1897 ई. में हैदराबाद, आंध्र प्रदेश में हुआ था। उनके पिता का नाम फिदा हुसैन खान तथा उनकी माता का नाम नजीन बेगम था। । जब वे 10 वर्ष के थे तो उनके पिता का देहांत हो गया और इसके कुछ समय बाद 1911 में उनकी माता का भी देहांत हो गया। 18 साल की उम्र में उनका विवाह शाहजहाँ बेगम से कर दिया गया। उनकी दो बेटियाँ जिनका नाम सईदा खान और साफिया रहमान थीं। हुसैन की प्रारंभिक प्राथमिक शिक्षा हैदराबाद में पूरी हुई, उन्होंने इस्लामिया हाई स्कूल, इटावा से हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी की, और फिर मुहम्मद एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की, इसके बाद वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में गए जहाँ वे एक प्रमुख छात्र नेता थे। उन्होंने 1926 में बर्लिन विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। डॉ. जाकिर हुसैन भारत के राष्ट्रपति बनने वाले पहले मुसलमान थे। देश के युवाओं से सरकारी संस्थानों का बहिष्कार की गाँधी की अपील का हुसैन ने पालन किया। उन्होंने अलीगढ़ में मुस्लिम नेशनल यूनिवर्सिटी (बाद में दिल्ली ले जायी गई) की स्थापना में मदद की और 1926 से 1948 तक इसके कुलपति रहे। महात्मा गाँधी के निमन्त्रण पर वह प्राथमिक शिक्षा के राष्ट्रीय आयोग के अध्यक्ष भी बने, जिसकी स्थापना 1937 में स्कूलों के लिए गाँधीवादी पाठ्यक्रम बनाने के लिए हुई थी। 1948 में हुसैन अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कुलपति बने और चार वर्ष के बाद उन्होंने राज्यसभा में प्रवेश किया। 1962 में वे भारत के उपराष्ट्रपति निर्वाचित हुए। उपराष्ट्रपति के रूप में उनका कार्यकाल 1962 से 1967 तक रहा। फिर 1967 में कांग्रेस पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार के रूप में वह भारत के राष्ट्रपति पद के लिए चुने गये और मृत्यु तक पदासीन रहे। एक शिक्षक के रूप में डॉ० जाकिर हुसैन ने महात्मा गांधी और हाकिम अजमल खान के आदर्शो को प्रचारित किया। उन्होंने वर्ष 1930 के दशक के मध्य तक देश के कई शैक्षिक सुधार आंदोलन में एक सक्रिय सदस्य के रूप में कार्य किया।

डॉ० जाकिर हुसैन स्वतंत्र भारत में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कुलपति (पहले इसे एंग्लो-मुहम्मडन ओरिएंटल कॉलेज के नाम से जाना जाता था) चुने गए। वाइस चांसलर के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान डॉ० जाकिर हुसैन ने पाकिस्तान के रूप में एक अलग देश बनाने की मांग के समर्थन में इस संस्था के अन्दर कार्यरत कई शिक्षकों को ऐसा करने से रोकने में सक्षम हुए. डॉ० जाकिर हुसैन भारत में आधुनिक शिक्षा के सबसे बड़े समर्थकों में से एक थे और उन्होंने अपने नेतृत्व में जामिया मिलिया इस्लामिया के नाम से एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में नई दिल्ली में मौजूद को स्थापित किया, जहाँ से हजारों छात्र प्रत्येक वर्ष अनेक विषयों में शिक्षा ग्रहण करते हैं। 1913 में वह स्वतंत्रता सेनानी मौलाना अबुल कलाम आजाद और मोहम्मद अली के संपर्क में आए। उनके विचारों से डॉ. जाकिर हुसैन बहुत प्रभावित हुए। उनके मन में भी देशभक्ति की भावना जागी। उस समय देश में जगह-जगह अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन हो रहे थे। जाकिर हुसैन पर भी इन आंदोलनों का प्रभाव पड़ा। 1920 में गांधी जी ने अंग्रेजों के खिलाफ असहयोग आंदोलन चलाया। जगह-जगह जाकर गांधीजी ने युवाओं को ललकारा। वह इस सिलसिले में अलीगढ़ भी पहुंचे और ऐंग्लो ऑरियंटल कॉलेज के छात्रों को अंग्रेजी शिक्षा देने वाले कॉलेजों और संस्थानों का बहिष्कार करने को कहा। गांधीजी की अपील का युवा जाकिर पर काफी प्रभाव पड़ा और वह सक्रिय रूप से असहयोग आंदोलन में भाग लेने को तैयार हो गए और कॉलेज का बहिष्कार करने का फैसला कर लिया। आखिरकार अलीगढ़ में बहुत छोटी सी जगह में 29 अक्टूबर, 1920 को जामिया मिल्लिया इस्लामिया की बुनियाद रखी गई। उन्होंने अपना जीवन समाज की शिक्षा और सेवा में समर्पित किया और वहां दो साल अध्यापक पद पर काम किया। उन्होंने अपने परिश्रम से अपने साथियों के साथ जामिया मिल्लिया की नींव पक्की की।

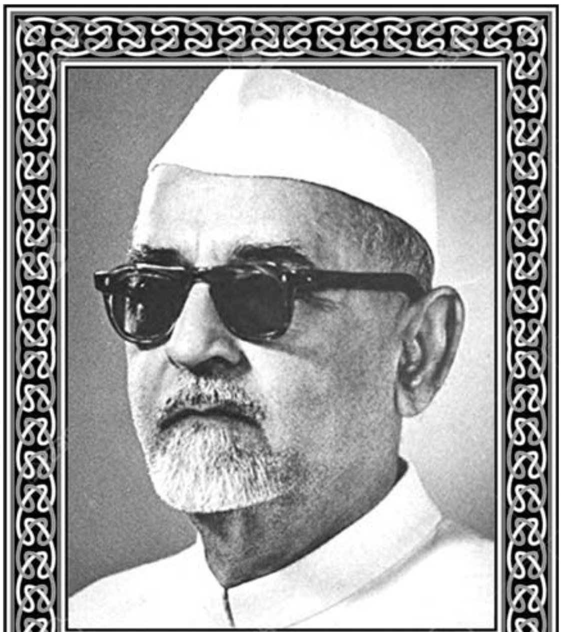

डॉ. जाकिर हुसैन कों वर्ष 1963 मे भारत रत्न से नवाजा गया। उन्हे 1954 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। दिल्ली, कोलकाता, अलीगढ़, इलाहाबाद और काहिरा विश्वविद्यालयों ने उन्हें उन्होंने डि-लिट् (मानद) उपाधि से सम्मानित किया था। इल्यांगुडी में उच्च शिक्षा के लिए सुविधा प्रदान करने के मुख्य उद्देश्य के साथ, उनके सम्मान में 1970 में एक कॉलेज शुरू किया गया था। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग कॉलेज का नाम उनके नाम पर रखा गया है।

डॉ० जाकिर हुसैन की 58 वर्ष की आयु में 3 मई 1969 को नई दिल्ली में उनकी मृत्यु हो गई।

हिन्दू धर्म और संस्कृति के अटूट रक्षक

पांडुरंग वामन काणे

पांडुरंग वामन काणे डॉ. काणे का जन्म 7 मई 1880 को महाराष्ट्र के रत्नागिरि जिले के दापोली नामक गाँव में एक चितपावन ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री वामन राव पुरोहिताई के कार्य से जुड़े थे, किंतु साथ ही वकालत के कार्य से भी जुड़े थे। वास्तव में डॉ. काणे का परिवार वैदिक संस्कृति और ज्ञान से पैतृक रूप से समृद्ध था। डॉ. काणे ने गाँव के ही स्कूल से प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ अपने परिवार से वैदिक ज्ञान भी प्राप्त किया।

वर्ष 1887 में उन्होंने एस. पी. जी. स्कूल से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे पढ़ने में बहुत कुशाग्र थे। उन्होंने हाईस्कूल में पूरे जिले में 23वां स्थान प्राप्त किया। वर्ष 1901 में डॉ. काणे ने स्नातक की परीक्षा उतीर्ण की और संस्कृत विषय में विशेष योग्यता होने के फलस्वरूप 'भाऊदाजी संस्कृत पुरस्कार' से सम्मानित किए गये। शिक्षिक योग्यता के आधार पर उन्हें 'विल्सन कॉलेज' में दो वर्ष के लिए फैलोशिप प्राप्त हुई। डॉ. काणे ने इसी कॉलेज से एल.एल.बी. (वकालत) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। सन् 1903 में उन्होंने संस्कृत और अंग्रेजी विषय से प्रथम श्रेणी में एम.ए. की परीक्षा उतीर्ण की। उन्होंने संस्कृत में 'अलंकार साहित्य के इतिहास' पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया और इस उपलब्धि के लिए डॉ. काणे को 'वी.एन. मॉडलिंग स्वर्ण पदक' से सम्मानित किया गया। इस समय तक डॉ. काणे समूचे महाराष्ट्र में संस्कृत विद्वान् के रूप में प्रसिद्धि पा चुके थे। ज्ञान के वे अद्भुत भंडार थे। उनका हिन्दी, संस्कृत भाषा के अतिरिक्त जर्मनी, अंग्रेजी, फ्रेंच, उर्दू, फारसी आदि भाषाओं पर समान अधिकार था। वे हिन्दू धर्म और संस्कृति के अटूट रक्षक थे। उन्होंने मानवता और सत्यता के आधार पर कट्टर ब्राह्मण होते हुए भी हरिजनों के उद्धार के लिए भी महत्त्वपूर्ण कार्य किए। उन्होंने 'मुस्लिम लॉ' का भी गहरा अध्ययन किया। उन्होंने मुस्लिमों के अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया।

डॉ. काणे की महानतम उपलब्धियों में उनके द्वारा लिखे गये महानतम ग्रंथ प्रमुख हैं, जिन्हें लिखने में उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश भाग लगा दिया था। डॉ. काणे ने कुल 18 ग्रंथ पुस्तकों और 21 शोध पत्रों का सृजन किया। इनके लिखे ग्रंथों में 'धर्मशास्त्र का इतिहास', 'संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास', 'भारतीय रीति रिवाज' और 'आधुनिक विधान' उच्चकोटि के वे महानतम ग्रंथ हैं जिन्होंने डॉ. काणे को अंतर्राष्ट्रीय विश्व मंच पर भारतीय साहित्य के एक युग के रूप में प्रतिष्ठित किया। धर्मशास्त्र का इतिहास' 6000 पृष्ठों का ग्रंथ है। यह ग्रंथ इस बात का प्रमाण है कि डॉ. काणे ने अथक लगन और परिश्रम से इस ग्रंथ का निर्माण किया। डॉ. काणे के ये ग्रंथ अंग्रेजी भाषा में लिखे गये हैं। इस सब के पीछे शायद उनका यह उद्देश्य था कि अंग्रेजी भाषा में लिखे होने के कारण भारतीय धर्म, भाषा, संस्कृति की प्राचीनतम और अमूल्य धरोहर को विश्व के अधिकांश देशों में पढ़ा और जाना जा सका।

वर्ष 1907 में उन्हें मुंबई के एलफिंस्टन कॉलेज में संस्कृत के मुख्य अध्यापक के रूप में नियुक्त किया गया। यह पद उनके शोध कार्यों के अनुकूल था। इसी वर्ष उन्होंने 'प्राचीन भारतीय साहित्य' पर अपना एक अन्य शोध कार्य पूर्ण किया और उन्हें पुन: 'वी.एन.मॉडलिंग स्वर्ण पदक' से सम्मानित किया गया। वर्ष 1908 में डॉ. काणे ने एल.एल.बी. (वकालत) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। सन् 1909 में जब वे एलफिंस्टन कॉलेज में संस्कृत के प्राध्यापक के पद पर थे, वहाँ पर अपनी योग्यता और प्रतिभा की अनहोनी होती देख उन्होंने त्यागपत्र देकर वकालत प्रारम्भ की। वकालत के साथ साथ वे संस्कृत भाषा और प्राचीन भारतीय संस्कृति पर शोध कार्य करते रहे और इन विषयों से सम्बन्धित व्याख्यान भी निरंतर देते रहे। पांडुरंग वामन काणे का सबसे बड़ा योगदान उनका विपुल साहित्य है, जिसकी रचना में उन्होंने अपना महत्त्वपूर्ण जीवन लगाया। वे अपने महान् ग्रंथों- 'साहित्यशास्त्र' और 'धर्मशास्त्र' पर 1906 ई. से कार्य कर रहे थे। इनमें 'धर्मशास्त्र का इतिहास' सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रसिद्ध है। पाँच भागों में प्रकाशित बड़े आकार के 6500 पृष्ठों का यह ग्रंथ भारतीय धर्मशास्त्र का विश्वकोश है। इसमें ईस्वी पूर्व 600 से लेकर 1800 ई. तक की भारत की विभिन्न धार्मिक प्रवृत्तियों का प्रामाणिक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। हिन्दू विधि और आचार विचार संबंधी उनका कुल प्रकाशित साहित्य 20,000 पृष्ठों से अधिक का है।

डॉ. काणे का पूरा जीवन भारतीय धर्म, भाषा, संस्कृति के प्रचार प्रसार में लगा रहा। उनका पूरा जीवन भारतीय धर्म, भाषा, संस्कृति को सुदृढ़ करने में समर्पित रहा। डॉ. काणे आजीवन मुम्बई की 'रॉयल एशिया हिंद सोसायटी' और ब्राह्मण सभा मुम्बई से सम्बद्ध रहे। जीवनपर्यंत एक कर्मयोगी की भांति साहित्य की सेवा करने वाले इस महान् साहित्यकार, धर्मशास्त्री और शिक्षाशास्त्री का 18 अप्रॅल, 1972 को निधन हो गया। डॉ. काणे को 1946 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने "मानद डॉक्टरेट" के सम्मान से सम्मानित किया. 1948, 1951 और 1954 में प्राच्य विद्याविदों के अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन में इन्होंने भारतीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया.1960 में पुणे विश्वविद्यालय ने डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया.1963 में भारत सरकार द्वारा भारत रत्न से सम्मानित किया गया. 1965 में धर्मशास्त्र का इतिहास" के 5 खंडो में से चौथे खंड को "साहित्य अकादमी पुरस्कार" मिला.

'करो या मरो' को 'मरो नही मारो' में बदला

लाल बहादुर शास्त्री

लालबहादुर शास्त्री का जन्म 1904 में मुगलसराय (उत्तर प्रदेश) में एक कायस्थ परिवार में मुंशी शारदा प्रसाद श्रीवास्तव के यहाँ हुआ था। उनके पिता प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे,सब उन्हें मुंशीजी ही कहते थे। लालबहादुर की माँ का नाम रामदुलारी था। परिवार में सबसे छोटे होने के कारण बालक लालबहादुर को परिवार वाले प्यार में नन्हें कहकर ही बुलाया करते थे। जब नन्हें अठारह महीने का हुआ दुर्भाग्य से पिता का निधन हो गया। बिना पिता के बालक नन्हें की परवरिश करने में उसके मौसा रघुनाथ प्रसाद ने उसकी माँ का बहुत सहयोग किया। ननिहाल में रहते हुए उसने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। उसके बाद की शिक्षा हरिश्चन्द्र हाई स्कूल और काशी विद्यापीठ में हुई। काशी विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि मिलने के बाद उन्होंने जन्म से चला आ रहा जातिसूचक शब्द श्रीवास्तव हमेशा हमेशा के लिये हटा दिया और अपने नाम के आगे 'शास्त्री' लगा लिया। इसके पश्चात् शास्त्री शब्द लालबहादुर के नाम का पर्याय ही बन गया। 1928 में उनका विवाह मिर्जापुर निवासी गणेश प्रसाद की पुत्री ललिता से हुआ।

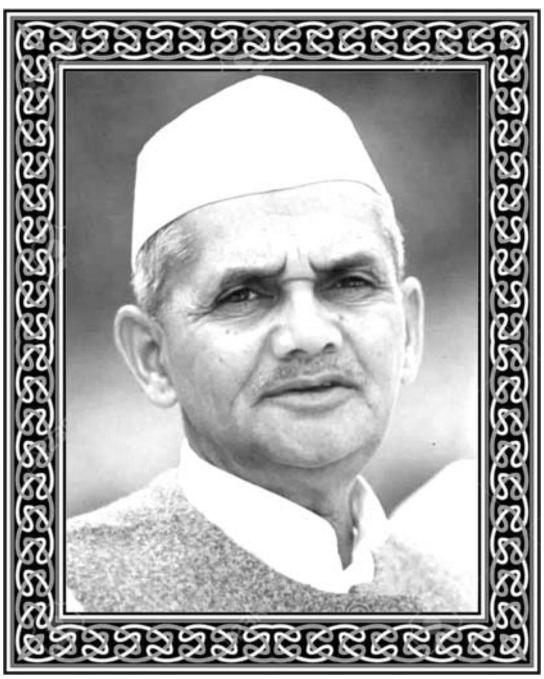

लाल बहादुर शास्त्री के बारे में कुछ कम ज्ञात तथ्यों में से एक है कि उन्होंने अपनी माँ को यह नहीं बताया कि वह रेलमन्त्री थे। उन्होंने यह बताया था, मैं रेलवे में काम करता हूँ। एक बार रेलवे द्वारा आयोजित एक समारोह में उनकी माँ उनके बारे में पूछते हुए आई कि मेरा बेटा भी वहाँ होगा क्योंकि वह भी रेलवे में काम करता है। लोग उनसे पूछने लगे कि आपके बेटे का क्या नाम है? जब उन्होंने नाम बताया सभी हतप्रभ रह गए। सबको लगा कि वह झूठ बोल रही हैं। परन्तु वह बोलीं, नहीं, वह आया है। लोग उनको लाल बहादुर शास्त्री जी के पास ले गए और पूछने लगे, क्या यह आपके बेटे हैं? तब माँ ने कहा, हाँ यह मेरा बेटा है। फिर लोगों ने उनको मिलवाया, क्या यह आपकी माँ हैं? तब शास्त्री जी ने अपनी माँ को बुलाकर अपने पास बिठाया और कुछ देर बाद उनको घर भिजवा दिया। तब रिपोर्टर्स ने पूछा, आपने उनके सामने भाषण क्यों नहीं दिया? तब वह बोले, मेरी माँ नहीं जानती कि मैं मंत्री हूँ। यदि उनको पता चल जाता तो वह लोगों की सिफारिशें लेकर मेरे पास आ जातीं और मैं उनको मना न कर पाता और उनको इस बात का अहंकार भी हो जाता। हर व्यक्ति उनका यह उत्तर सुनकर स्तब्ध रह गया।

संस्कृत भाषा में स्नातक स्तर तक की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् वे भारत सेवक संघ से जुड़ गये और देशसेवा का व्रत लेते हुए यहीं से अपने राजनैतिक जीवन की शुरुआत की। शास्त्रीजी सच्चे गान्धीवादी थे जिन्होंने अपना सारा जीवन सादगी से बिताया और उसे गरीबों की सेवा में लगाया। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सभी महत्वपूर्ण कार्यक्रमों व आन्दोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही और उसके परिणामस्वरूप उन्हें कई बार जेलों में भी रहना पड़ा। स्वाधीनता संग्राम के जिन आन्दोलनों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही उनमें 1921 का असहयोग आंदोलन, 1930 का दांडी मार्च तथा 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन उल्लेखनीय हैं। दूसरे विश्व युद्ध में इंग्लैण्ड को बुरी तरह उलझता देख जैसे ही नेताजी ने आजाद हिन्द फौज को षदिल्ली चलोष का नारा दिया, गान्धी जी ने मौके की नजाकत को भाँपते हुए 8 अगस्त 1942 की रात में ही बम्बई से अँग्रेजों को 'भारत छोड़ो' व भारतीयों को 'करो या मरो' का आदेश जारी किया और सरकारी सुरक्षा में यरवदा पुणे स्थित आगा खान पैलेस में चले गये। 9 अगस्त 1942 के दिन शास्त्रीजी ने इलाहाबाद पहुँचकर इस आन्दोलन के गान्धीवादी नारे को चतुराई पूर्वक 'मरो नहीं, मारो!' में बदल दिया और अप्रत्याशित रूप से क्रान्ति की दावानल को पूरे देश में प्रचण्ड रूप दे दिया। नेहरू के निधन के पश्चात भारतवर्ष के प्रधान मन्त्री भी बने।

लाल बहादुर शास्त्री जी की रहस्मयी निधन के संबंध में कहा जाता है कि पाकिस्तान के आक्रमण का सामना करते हुए भारतीय सेना ने लाहौर पर धाबा बोल दिया। इस अप्रत्याशित आक्रमण को देख अमेरिका ने लाहौर में रह रहे अमेरिकी नागरिकों को निकालने के लिए कुछ समय के लिए युद्धविराम की मांग की। रूस और अमेरिका के चहलकदमी के बाद भारत के प्रधानमंत्री को रूस के ताशकंद समझौता में बुलाया गया। शास्त्री जी ने ताशकंद समझौते की हर शर्तों को मंजूर कर लिया मगर पाकिस्तान जीते इलाकों को लौटाना हरगिज स्वीकार नहीं था। अंतर्राष्ट्रीय दवाब में शास्त्री जी को ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर करना पड़ा पर लाल बहादुर शास्त्री ने खुद प्रधानमंत्री कार्यकाल में इस जमीन को वापस करने से इंकार कर दिया। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री अयूब खान के साथ युद्ध विराम पर हस्ताक्षर करने के कुछ घंटे बाद ही भारत देश के प्रधनमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का संदिग्ध निधन हो गया। मृत्यु का कारण हार्ट अटैक बताया गया। मानते है कि शास्त्रीजी की मृत्यु हार्ट अटैक से नहीं बल्कि जहर देने से ही हुई।

देशभक्ति और ईमानदारी के लिये लाल बहादुर शास्त्री जी को मरणोपरान्त 1966 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

इन्दिरा गांधी

आयरन लेडी, जिसने बांग्लादेश मुक्ति संग्राम को दिया अंजाम

इन्दिरा का जन्म 19 नवम्बर 1917 को राजनीतिक रूप से प्रभावशाली नेहरू परिवार में हुआ था। इनके पिता जवाहरलाल नेहरू और इनकी माता कमला नेहरू थीं। इंदिरा के जन्म के समय महात्मा गांधी के नेतृत्व में जवाहरलाल नेहरू का प्रवेश स्वतन्त्रता आन्दोलन में हुआ। उनकी परवरिश अपनी माँ की सम्पूर्ण देखरेख में, जो बीमार रहने के कारण नेहरू परिवार के गृह सम्बन्धी कार्यों से अलग रही, होने से इंदिरा में मजबूत सुरक्षात्मक प्रवृत्तिओं के साथ साथ एक नि:संग व्यक्तित्व विकसित हुआ। इन्दिरा ने युवा लड़के-लड़कियों के लिए वानर सेना बनाई, जिसने विरोध प्रदर्शन और झंडा जुलूस के साथ साथ कागेस के नेताओं की मदद में संवेदनशील प्रकाशनों तथा प्रतिबंधित सामग्रीओं का परिसंचरण कर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में छोटी लेकिन उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। उन्होंने प्रमुख भारतीय, यूरोपीय तथा ब्रिटिश स्कूलों में अध्यन किया, जैसे शान्तिनिकेतन, बैडमिंटन स्कूल औरऑक्सफोर्ड। यूरोप और ब्रिटेन में रहते समय उनकी मुलाकात एक पारसी कांग्रेस कार्यकर्ता, फिरोज गाँधी से हुई और अंतत: 16 मार्च 1942 को आनंद भवन इलाहाबाद में एक निजी आदि धर्म ब्रह्म-वैदिक समारोह में उनसे विवाह किया। इसके दो साल के बाद संजय गाँधी को जन्म दिया।

1959 और 1960 के दौरान इंदिरा चुनाव लड़ीं और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष चुनी गयीं। उनका कार्यकाल घटनाविहीन था। वो अपने पिता के कर्मचारियों के प्रमुख की भूमिका निभा रहीं थीं। नेहरू का देहांत 27 मई, 1964 को हुआ और इंदिरा नए प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के प्रेरणा पर चुनाव लड़ीं और तत्काल सूचना और प्रसारण मंत्री के लिए नियुक्त हो, सरकार में शामिल हुई। 1960 के दशक में विशेषीकृत अभिनव कृषि कार्यक्रम और सरकार प्रदत्त अतिरिक्त समर्थन लागु होने पर अंतत: भारत में हमेशा से चले आ रहे खाद्यान्न की कमी को, मूलत: गेहूं, चावल, कपास और दूध के सन्दर्भ में, अतिरिक्त उत्पादन में बदल दिया। बजाय संयुक्त राज्य से खाद्य सहायता पर निर्भर रहने के। जहाँ के एक राष्ट्रपति जिन्हें श्रीमती गांधी काफी नापसंद करती थीं, देश एक खाद्य निर्यातक बन गया। उस उपलब्धि को अपने वाणिज्यिक फसल उत्पादन के विविधीकरण के साथ हरित क्रांति के नाम से जाना जाता है।

1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध चल रहा था, इंदिरा श्रीनगर सीमा क्षेत्र में उपस्थित थी। हालांकि सेना ने चेतावनी दी थी कि पाकिस्तानी अनुप्रवेशकारी शहर के बहुत ही करीब तीव्र गति से पहुँच चुके हैं, उन्होंने अपने को जम्मू या दिल्ली में पुन:स्थापन का प्रस्ताव नामंजूर कर दिया और उल्टे स्थानीय सरकार का चक्कर लगाती रहीं और संवाद माध्यमों के ध्यानाकर्षण को स्वागत किया। ताशकंद में सोवियत मध्यस्थता में पाकिस्तान के अयूब खान के साथ शांति समझौते पर हस्ताक्षर करने के कुछ घंटे बाद ही लालबहादुर शास्त्री का निधन हो गया। तब कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष के. कामराज ने शास्त्री के आकस्मिक निधन के बाद इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। सन् 1966 में जब श्रीमती गांधी प्रधानमंत्री बनीं, कांग्रेस दो गुटों में विभाजित हो चुकी थी, श्रीमती गांधी के नेतृत्व में समाजवादी और मोरारजी देसाई के नेतृत्व में रूढीवादी। मोरारजी देसाई उन्हें 'गूंगी गुड़िया' कहा करते थे। 1967 के चुनाव में आंतरिक समस्याएँ उभरी जहां कांग्रेस लगभग 60 सीटें खोकर 545 सीटोंवाली लोक सभा में 297 आसन प्राप्त किए। उन्हें देसाई को भारत के भारत के उप प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री के रूप में लेना पड़ा। 1969 में देसाई के साथ अनेक मुददों पर असहमति के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस विभाजित हो गयी। वे समाजवादियों एवं साम्यवादी दलों से समर्थन पाकर अगले दो वर्षों तक शासन चलाई।

इन्दिरा गांधी के बहुसंख्यक अंगरक्षकों में से दो थे सतवंत सिंह और बेअन्त सिंह, दोनों सिख. 31 अक्टूबर 1984 को वे अपनी सेवा हथियारों के द्वारा 1, सफदरजंग रोड, नई दिल्ली में स्थित प्रधानमंत्री निवास के बगीचे में इंदिरा गांधी की राजनैतिक हत्या की। गांधी को उनके सरकारी कार में अस्पताल पहुंचाते पहुँचाते रास्ते में ही दम तोड़ दीं थी, लेकिन घंटों तक उनकी मृत्यु घोषित नहीं की गई। उन्हें अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में लाया गया, जहाँ डॉक्टरों ने उनका ऑपरेशन किया। उस वक्त के सरकारी हिसाब 29 प्रवेश और निकास घावों को दर्शाती है, तथा कुछ बयाने 31 बुलेटों के उनके शरीर से निकाला जाना बताती है। उनका अंतिम संस्कार 3 नवंबर को राज घाट के समीप हुआ और यह जगह शक्ति स्थल के रूप में जानी गई।

1971 में, बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में भारत को पाकिस्तान के खिलाफ जीत दिलाने के बाद, उस समय के राष्ट्रपति, श्री वी.वी. गिरी ने गांधी को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, भारत रत्न से सम्मानित किया। इसलिए, वह भारत रत्न से सम्मानित होने वाली पहली महिला बनीं।

देश के पहले और अब तक के अंतिम निर्दलीय राष्ट्रपति

वी.वी. गिरी

यदि आज हमारे देश में श्रम को उसका अधिकार मिल रहा है, अगर आज देश का हर मजदूर अपने हक के लिए बोल पा रहा है, तो उसके लिए एक इन्सान को धन्यवाद बोलना चाहिए, वो है वी.वी. गिरी. वी वी गिरी ने मजदूर वर्ग को एक नयी आवाज दी, उनके हक की लड़ाई लड़ी, जिसकी बदौलत आज उनको वो सम्मान मिल पा रहा है. ये अपना करियर लॉ में बनाना चाहते थे, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के समय अपने आप को रोक नहीं पाए और देश की आजादी की लड़ाई में कूद पड़े.

स्वतंत्र भारत के चौथे राष्ट्रपति वी वी गिरी का जन्म 10 अगस्त, 1894 को ब्रह्मपुर, ओड़िशा में हुआ था. वी.वी. गिरी के पिताजी का नाम वी. वी. जोगिआह पंतुलु था, जो वकील और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक्टिव मेम्बर थे. वी वी गिरी एक वकील और स्थानीय बार काउंसिल के नेता थे. वी. वी. गिरी जी की स्कूली शिक्षा ब्रह्मपुर में ही संपन्न हुई। 1913 में वकालत की पढाई के लिए वे आयरलैंड चले गए, डबलिन यूनिवर्सिटी से 1913-16 तक पढाई की. वहां उनकी मुलाकात डी वलेरा से हुई, जो एक प्रसिद्ध ब्रिटिश विद्रोही थे और उनसे प्रभावित होकर वे आयरलैंड की स्वतंत्रता के लिए चल रहे 'सिन फीन आंदोलन' से जुडे और अपना योगदान दिया. दंड स्वरुप उन्हें इस आयरलैंड से बाहर निकल दिया गया. स्वतंत्रता के इस आंदोलन में उनकी मुलाकात इमोन दे वलेरा, माइकल कॉलिंस,डेस्मंड,जेम्स कोन्नाली आदि जैसे महान स्वतंत्रता सेनानीयों से हुई, जिनसे इनके निकट संबंद्ध बन गए थे. इनसे प्रभावित हो कर और सलाह ले कर, 1916 में वे भारत वापस लौट आये.

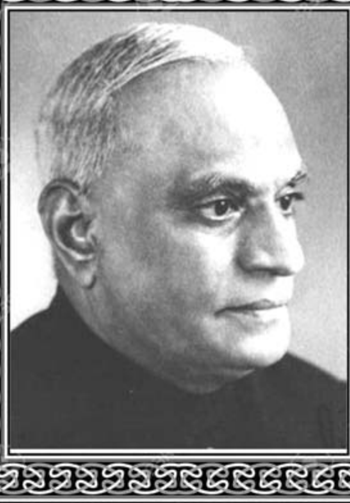

1916 में भारत लौटने के बाद वी.वी. गिरी श्रमिक और मजदूरों के लिए चल रहे आंदोलन में जुड़ गए। रेलवे कर्मचारियों के हितों की रक्षा करने के उद्देश्य से उन्होंने बंगाल-नागपुर रेलवे एसोसिएशन की भी स्थापना की. अपने जीवन काल में श्रमिकों और मजदूरों के हितों के लिए हमेशा प्रयासरत रहे. वी वी गिरी जी का राजनैतिक सफर आयरलैंड में उनकी पढाई के दौरान ही शुरू हो गया था. गाँधीजी की बातों से प्रभावित हो कर एवं स्वतंत्रता आंदोलनों से जुड़ने के पश्चात् उन्होंने कानून की पढाई से ज्यादा महत्व स्वतंत्रता की लड़ाई को दिया. इसके लिए वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बनकर, पूर्ण रूप से स्वतंत्रता की लड़ाई में कूद पड़े. वी वी गिरी जी को अखिल भारतीय रेलवे कर्मचारी संघ और अखिल भारतीय व्यापार संघ (कांग्रेस) के अध्यक्ष के रूप में चुना गया. सन 1934 में इम्पीरियल विधानसभा के भी सदस्य नियुक्त हो गए. सन 1936 में मद्रास आम चुनावों में वी.वी. गिरी को कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में खड़ा किया गया, जिसमें उन्हें विजय प्राप्त हुई. सन् 1937 में मद्रास में कांग्रेस पार्टी द्वारा बनाए गए, श्रम एवं उद्योग मंत्रालय में मंत्री के रूप में वी वी गिरी जी को नियुक्त किया गया. 1942 में इन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई, जिसके लिए इन्हें जेल यातनाये भी झेलनी पड़ी. 1947 में जब देश को स्वतंत्रता मिल गई, तत्पश्चात वी वी गिरी जी को सिलोन (श्रीलंका) में भारत के उच्चायुक्त पद से नवाजा गया. सन 1952 में वी वी गिरी ने पाठापटनम सीट से लोकसभा का चुनाव जीत कर सांसद बन गए. श्रम मंत्री के तौर पर इन्होंने 1954 तक बहुत उम्दा कार्य किया. जिसके लिए उनको 1975 में देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाजा गया. वी वी गिरी उत्तर प्रदेश, मैसूर एवं केरल के राज्यपाल भी रहे. 1967 में जब डॉ जाकिर हुसैन राष्ट्रपति थे, तब वी वी गिरी को उपराष्ट्रपति बनाया गया. 3 मई 1969 को डॉ जाकिर हुसैन की अकाल मृत्यु के बाद रिक्त राष्ट्रपति पद को भरने के लिए वी वी गिरी जी को राष्ट्रपति बना दिया गया. 6 माह बाद 1969 को जब राष्ट्रपति चुनाव हुए, तब इंदिरा गाँधी जी द्वारा वी वी गिरी को फिर से राष्ट्रपति पद के लिए नियुक्त किया गया. वी वी गिरी जी ने सन् 1969 से 1974 तक इस पद की गरिमा बढाई. वी वी गिरी जी को किताब लेखन में भी रूचि थी. उनके द्वारा लिखी हुई किताबे "श्रमिकों की समस्याएं" अत्यधिक लोकप्रिय रही.

वो साल 1970 के दिन थे। सुप्रीम कोर्ट के एक कटघरे में सोफानुमा बड़ी कुर्सी लगी थी. अदालत में हर कोई सलीके से बैठा था और चौकन्ना था। वजह ये थी कि उस दिन देश की सबसे बड़ी अदालत में वो होने वाला था जो न तो पहले कभी हुआ और न ही बाद में इसकी कोई संभावना नजर आती है. दरअसल, उस दिन कोर्ट में हाजिर होने वाले थे भारत के राष्ट्रपति। वो शख्स जो खुद सुप्रीम कोर्ट के किसी फैसले को पलटने की ताकत रखता है। वो शख्स जिसे कानूनी तौर पर छूट हासिल है, लेकिन फिर भी वो अदालत के सामने कटघरे में पेश हुए और अपना बयान दर्ज कराया. उस राष्ट्रपति का क्या नाम है- वी वी गिरि।. पूरा नाम वराहगिरि वेंकट गिरि। वी वी गिरि एक ऐसे शख्स थे जिनके नाम कई चीजें पहली बार होने का कीर्तिमान दर्ज है. मसलन वे देश के पहले और अब तक के अंतिम निर्दलीय राष्ट्रपति हैं.

23 जून 1980 को चेन्नई में 85 वर्ष की आयु में वी वी गिरी जी को हार्ट अटैक आया, जिसके बाद उनका निधन हो गया. श्रमिकों के उत्थान और देश की स्वतंत्रता के लिए तत्पर वी वी गिरी जी उत्कृष्ट योगदान को सदेव याद किया जाता है.

वो कांग्रेसी जिसके प्लान ने 6 मुख्यमंत्रियों से इस्तिफे दिलवा दिए

के. कामराज

15 जुलाई, 1903 को जन्मे दक्षिण के दिग्गज नेता और पूर्व मुख्यमंत्री कामराज का वो प्लान जिसकी वजह से देश के 6 मुख्यमंत्रियों को इस्तीफा देना पड़ गया. सिर्फ मुख्यमंत्रियों को ही नहीं 6 केंद्रीय मंत्रियों को भी इस्तीफा देना पड़ा था. दिलचस्प बात यह भी है कि वह 60 के दशक में आजाद भारत के 'किंगमेकर' भी कहे जाते थे. 1964 में जवाहरलाल नेहरू के निधन के बाद कांग्रेस के सामने सवाल था कि अगला प्रधानमंत्री किसे बनाया जाए? तब वित्त मंत्री रहे मोरारजी देसाई के मन में पीएम बनने की आकांक्षा हिलोरें ले रही थीं। पार्टी के भीतर भी देसाई की पकड़ मजबूत थी मगर उनके दांव को फेल कर दिया के. कामराज ने। कामराज उस समय कांग्रेस के अध्यक्ष हुआ करते थे। अधिकतर कांग्रेसी चाहते थे कि कामराज ही प्रधानमंत्री बनें मगर उन्होंने कहा कि राष्ट्रनिर्माण के लिए पार्टी का फिट रहना जरूरी है। कामराज ने कहा कि सबकी सहमति से नेता चुना जाए। देसाई के पास कांग्रेस कार्यसमिति में उतनी ताकत नहीं थी। कामराज का प्लान काम कर गया। संसदीय पार्टी और मुख्यमंत्रियों से बात करने के बाद कामराज ने नेहरू के बाद लाल बहादुर शास्त्री के जिम्मे देश का भार सौंपने का फैसला किया। दो साल बाद, कामराज ने कुछ ऐसा किया कि उन्हें स्वतंत्र भारत का पहला 'किंगमेकर' कहा जाने लगा। किंगमेकर के रूप में कामराज ने आखिरी बड़ा फैसला इंदिरा की नियुक्ति का किया था. इसके बाद 1967 के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस कई राज्यों में बुरी तरह हारी. लोकसभा में भी उसे महज 285 सीटें मिलीं. खुद कामराज तमिलनाडु में अपनी गृह विधानसभा विरुदुनगर से चुनाव हार गए. इस बार दांव इंदिरा ने चला. उन्होंने कहा कि हारे हुए नेताओं को पद छोड़ना चाहिए. कामराज ने कांग्रेस अध्यक्ष का पद छोड़ दिया. हालांकि नए कांग्रेस अध्यक्ष निजा लिंगाप्पा बने. मगर अंदरखाने संगठन के फैसले अभी भी कामराज ही ले रहे थे. लेकिन ऐसा लंबे समय तक चलने वाला नहीं था. संगठन और सरकार के बीच दूरी बढ़ती जा रही थी. बैंकों के राष्ट्रीयकरण समेत ऐसे तमाम मसले थे जिसपर वरिष्ठ नेता अपनी अनदेखी से नाराज थे. के कामराज यानी कुमारस्वामी कामराज आजादी के बाद के शुरुआती दौर में देश के कद्दावर नेताओं में शुमार किए जाते थे और उन्होंने प्रधानमंत्री बनने का ऑफर इसलिए ठुकरा दिया था क्योंकि उन्हें हिंदी नहीं आती थी और उनका मानना था कि देश के प्रधानमंत्री को हिंदी आनी चाहिए. लाल बहादुर शास्त्री के ताशकंद में रहस्यमय परिस्थितियों में निधन के बाद एक बार फिर कांग्रेसियों ने कामराज से पीएम बनने को कहा। मगर कामराज की नजरें भविष्य पर थीं। उन्हें लगता था कि इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री पद की सबसे योग्य उम्मीदवार हैं। उनकी नजर में इंदिरा नौजवान थी और जोश से भरी हुई थीं, उनमें वे सारी बातें थीं जो भारत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर ठीक से प्रॉजेक्ट कर सकती थीं। मोरारजी देसाई को दूसरी बार हाथ से कुर्सी जाते देखना बिल्कुल रास नहीं आया। शक्ति प्रदर्शन की नौबत आ गई। मगर कांग्रेस संसदीय पार्टी ने इंदिरा को चुना। उन्हें इंदिरा से 186 वोट कम मिले।

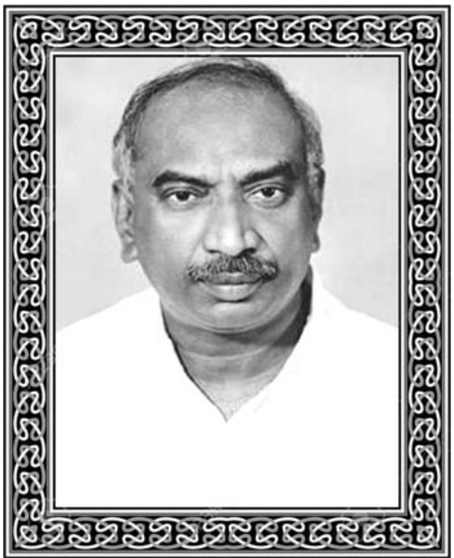

कुमारस्वामी कामराज ने 1954 में मद्रास स्टेट के मुख्यमंत्री का काम संभाला। वह आजाद भारत के शायद पहले ऐसे मुख्यमंत्री थे जिन्हें अंग्रेजी नहीं आती थी। मगर मद्रास (अब तमिलनाडु) में अगले नौ साल के उनके कार्यकाल को प्रशासन के बेहतरीन दौर के रूप में देखा जाता है। कामराज के नेतृत्व में मद्रास के औद्योगिक और कृषि क्षेत्र का बड़े पैमाने पर विकास हुआ। मुख्यमंत्री होने के बावजूद कामराज बड़ी सादगी से रहते थे। सीएम होने के नाते उन्हें जेड लेवल की सुरक्षा मिली हुई थी जो उन्होंने लेने से मना कर दी। वह कहीं दौरे पर जाते तो सुरक्षा में केवल पुलिस का एक पैट्रोल वीकल चलता था। उनके गृहनगर में घर तक डायरेक्ट पानी का कनेक्शन दिया गया था जो उन्होंने फौरन हटा दिया। तब कामराज का निधन हुआ तो उनके पास केवल 130 रुपये, 2 जोड़ी चप्पल, 4 शर्ट और कुछ किताबें थीं।

कामराज अपने एक और खास काम से जाने जाते हैं और वह है कामराज प्लान. तीन बार मुख्यमंत्री बनने के बाद गांधीवादी कामराज ने 02 अक्टूबर 1963 को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष बनाये जाने की बात कही. उनका कहना था कि कांग्रेस के सब बुजुर्ग नेताओं में सत्ता लोभ घर कर रहा है. उन्हें वापस संगठन में लौटना चाहिए. लोगों से जुड़ना चाहिए. तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू को कामराज की यह योजना बहुत पसंद आई. उन्होंने इसे पूरे देश में लागू करने का मन बनाया. इस योजना को भारतीय राजनीति में कामराज प्लान के नाम से जाना जाता है. इस योजना के चलते छह कैबिनेट मंत्रियों और छह मुख्यमंत्रियों को इस्तीफा देना पड़ा. कैबिनेट मंत्रियों में मोरारजी देसाई, लाल बहादुर शास्त्री, बाबू जगजीवन राम और एसके पाटिल जैसे लोग शामिल थे. वहीं, उत्तर प्रदेश के चंद्रभानु गुप्त, एमपी के मंडलोई, ओडिशा के बीजू पटनायक जैसे मुख्यमंत्रियों ने अपने पद से इस्तीफा दिया. कामराज को इसके बाद कांग्रेस का अध्यक्ष बना दिया गया।

गांधीवादी कामराज की मृत्यु 2 अक्टूबर, 1975 को गांधी जयंती के दिन ही हार्टअटैक हुई. मरणोपरांत उन्हें 1976 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया.

मदर टेरेसा

कुष्ठता के कलंक के खिलाफ लड़ी लड़ाई

मदर टेरेसा जिनका नाम लेते ही मन में दया के भाव जाग जाते हैं। जिंदगीभर जरूरतमंद लोगों की सेवा कर अपना संपूर्ण जीवन न्योछावर कर दिया। संत मदर टेरेसा का जीवन एक मिसाल हैं। मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त, 1910 को स्कॉप्जे (अब मेसीडोनिया में) में हुआ था। इनके पिता निकोला बोयाजू एक साधारण व्यवसायी थे। मदर टेरेसा का वास्तविक नाम 'अगनेस गोंझा बोयाजिजू' था। जब वह मात्र आठ साल की थीं तभी इनके पिता का निधन हो गया, जिसके बाद इनके लालन-पालन की सारी जिम्मेदारी इनकी माता द्राना बोयाजू के ऊपर आ गयी। यह एक सुन्दर, अध्ययनशील एवं परिश्रमी लड़की थीं। पढ़ाई के साथ-साथ, गाना इन्हें बेहद पसंद था। यह और इनकी बहन पास के गिरजाघर में मुख्य गायिकाएँ थीं। ऐसा माना जाता है कि जब यह मात्र बारह साल की थीं तभी इन्हें ये अनुभव हो गया था कि वो अपना सारा जीवन मानव सेवा में लगायेंगी और 18 साल की उम्र में इन्होंने 'सिस्टर्स ऑफ लोरेटो' में शामिल होने का फैसला ले लिया। तत्पश्चात यह आयरलैंड गयीं जहाँ इन्होंने अंग्रेजी भाषा सीखी। अंग्रेजी सीखना इसलिए जरुरी था क्योंकि 'लोरेटो' की सिस्टर्स इसी माध्यम में बच्चों को भारत में पढ़ाती थीं।

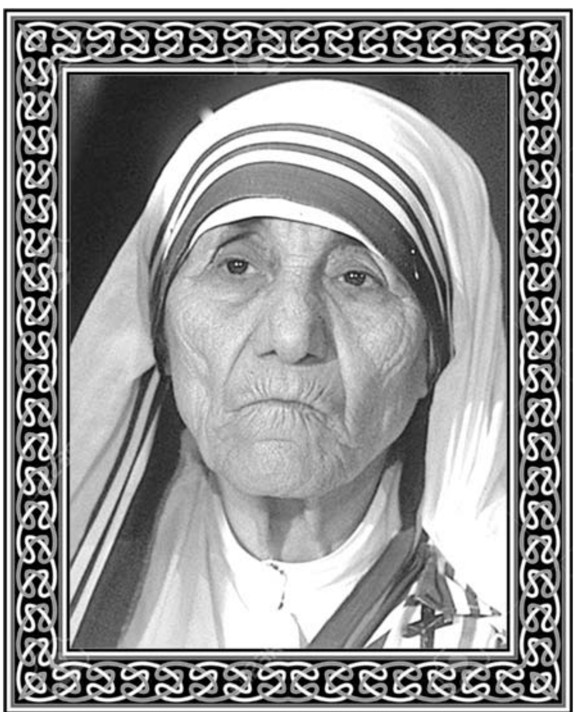

1981 ई में आवेश ने अपना नाम बदलकर टेरेसा रख लिया और उन्होने आजीवन सेवा का संकल्प अपना लिया। समभाव से पीड़ित की सेवा मदर टेरेसा दलितों एवं पीडितों की सेवा में किसी प्रकार की पक्षपाती नहीं है। उन्होनें सद्भाव बढाने के लिए संसार का दौरा किया है। उनकी मान्यता है कि 'प्यार की भूख रोटी की भूख से कहीं बड़ी है।' उनके मिशन से प्रेरणा लेकर संसार के विभिन्न भागों से स्वयं-सेवक भारत आये तन, मन, धन से गरीबों की सेवा में लग गये। हमेशा नीली किनारी की सफेद धोती पहनने वाली मदर टेरेसा का कहना था कि दुखी मानवता की सेवा ही जीवन का व्रत होना चाहिए। हर कोई किसी न किसी रूप में भगवान है या फिर प्रेम का सबसे महान रूप है सेवा। यह उनके द्वारा कहे गए सिर्फ अनमोल वचन नहीं हैं बल्कि यह उस महान आत्मा के विचार हैं जिसने कुष्ठ और तपेदिक जैसे रोगियों की सेवा कर संपूर्ण विश्व में शांति और मानवता का संदेश दिया। एक प्रसंग के अनुसार मदर टेरेसा से एक बार एक इंटरव्यू करने वाले ने पूछा-जब आप प्रार्थना करती हैं तो ईश्वर से क्या कहती हैं? मदर ने जवाब दिया-मैं कुछ कहती नहीं, सिर्फ सुनती हूं। इंटरव्यू करने वाले को ज्यादा तो समझ नहीं आया, पर उसने दूसरा प्रश्न पूछा-तो फिर जब आप सुनती हैं तो ईश्वर आपसे क्या कहता है? मदर-वह भी कुछ नहीं कहता, सिर्फ सुनता है। कुछ देर मौन छा गया, इंटरव्यू करने वाले को आगे का प्रश्न समझ ही नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाए। थोड़ी देर बाद इस मौन को तोड़ते हुए मदर ने खुद कहा- क्या आप समझे, जो मैं कहना चाहती थी, मुझे माफ कीजिएगा मेरे पास आपको समझाने का कोई दूसरा तरीका नहीं है।

मदर टेरेसा ने भारत में कार्य करते हुए यहां की नागरिकता के साथ सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न प्राप्त (1980) किया। समाज में दिए गए उनके अद्वितीय योगदान की वजह से उन्हें पद्मश्री (1962), नोबेल शांति पुरस्कार (1979) और मेडल ऑफ फ्रीड़ा (1985) प्रदान किए गए। सचमुच वे मां थी। माँ शब्द जुबान पर आते ही सबसे पहले मदर टेरेसा का नाम आता है। कलियुग में वे मां का एक आदर्श प्रतीक थी जो आज भी प्रेम की भांति सभी के दिलों में जीवित हैं। माँ दुनिया का सबसे अनमोल शब्द है। एक ऐसा शब्द जिसमें सिर्फ अपनापन, सेवा, समर्पण, दया, करूणा और प्यार झलकता है। जब हम उनके बारे में बात करते हैं तो हम उनके सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक कार्य को याद करते हैं, जो थी कुष्ठता के कलंक के खिलाफ उनकी लड़ाई। कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों के प्रति हर जगह भेदभाव देखा गया था, लेकिन मदर टेरेसा ने उनके साथ अपनों जैसा व्यवहार किया। इस तरह की उनकी दया और करूणा की भावना ने दुनिया को एक सीख दी है।

कुष्ठ रोगियों और अनाथों की सेवा में अपनी जिंदगी समर्पित करने वाली मदर टेरेसा को 25 जनवरी, 1980 को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था। इसके बाद 1983 में मदर टेरेसा पॉप-जॉन पॉल द्वितीय से मिली, तब मदर टेरेसा को प्रथम बार दिल का दौरा पड़ा तब उनकी आयु 73 वर्ष की थी। उम्र के साथ टेरेसा का स्वास्थ्य कमजोर होने लगा और समय के चलते 1989 में टेरेसा को दूसरा दिल का दौरा आ गया। समय और उम्र दोनों बीत रहे थे और स्वास्थ्य और भी बिगड़ने लगा। टेरेसा ने 5 सितम्बर 1997 में भारत के कोलकाता शहर में अपने प्राण त्याग दिए।

भूदान आन्दोलन के प्रणेता

विनोबा भावे

विनोबा भावे एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता और भूदान आंदोलन के प्रणेता थे, जिनका मूल नाम विनायक नारहरी भावे था। आचार्य विनोबा भावे का जन्म 11 सितम्बर 1895 को रायगढ़ में हुआ था। विनोबा भावे का मूल नाम विनायक नरहरि भावे था और इनका जन्म महाराष्ट्र के एक छोटे से गांव में हुआ था। इनके पिताजी का नाम विनायक नरहरि शंभू राव और माता जी का नाम रुक्मिणी देवी था। ये चार भाई बहन थे जिनमे विनायक सबसे बड़े थे। इनकी माताजी धार्मिक चीजों से बहुत प्रभावित इसलिए इनको श्रीमद् भागवत गीता बचपन में ही पढ़ने का मौका मिला। विनोबा को बचपन में मां से मिले संस्कार युवावस्था में और भी गाढ़े होते चले गए। युवावस्था की ओर बढ़ते हुए विनोबा न तो संत ज्ञानेश्वर को भुला पाए थे, न तुकाराम को। वही उनके आदर्श थे। दर्शन उनका प्रिय विषय था। हिमालय जब से होश संभाला था, तभी से उनकी सपनों में आता था और वे कल्पना में स्वयं को सत्य की खोज में गहन कंदराओं में तप-साधना करते हुए पाते. वहां की निर्जन, वर्फ से ढकी दीर्घ-गहन कंदराओं में उन्हें परमसत्य की खोज में लीन हो जाने के लिए उकसातीं. 1915 में उन्होंने हाई स्कूल की परीक्षा पास की। अब आगे क्या पढ़ा जाए. वैज्ञानिक प्रवृत्ति के पिता और अध्यात्म में डूबी रहने वाली मां का वैचारिक द्वंद्व वहां भी अलग-अलग धाराओं में प्रकट हुआ। पिता ने कहा-'फ्रेंच पढ़ो', मां बोलीं 'ब्राह्मण का बेटा संस्कृत न पढ़े, यह कैसे संभव है!' विनोबा ने उन दोनों का मन रखा। इंटर में फ्रेंच को चुना। संस्कृत का अध्ययन उन्होंने निजी स्तर पर जारी रखा। उन दिनों फ्रेंच ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हो रही क्रांति की भाषा थी। सारा परिवर्तनकामी साहित्य उसमें रचा जा रहा था।

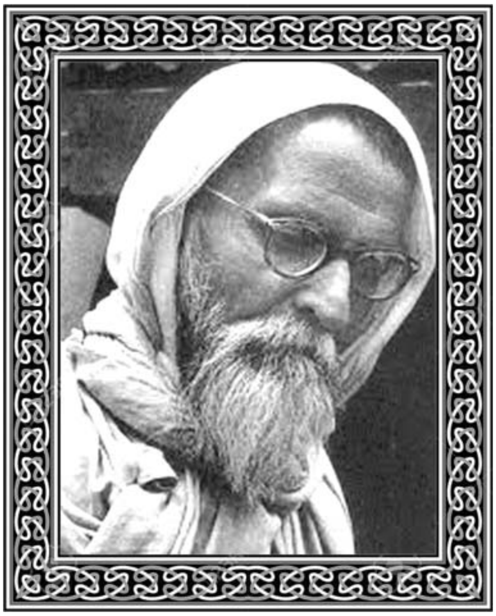

दो महान आत्माओं को मिलवाने के लिए समय अपना जादुई खेल रच रहा था। काशी में महामना मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित हिंदू विश्वविद्यालय में एक बड़ा जलसा हो रहा था। 4 फरवरी 1916, जलसे में राजे-महाराजे, नबाव, सामंत सब अपनी पूरी धज के साथ उपस्थित थे। सम्मेलन की छटा देखते ही बनती थी। उस सम्मेलन में गांधी जी ने ऐतिहासिक भाषण दिया। वह कहा जिसकी उस समय कोई उम्मीद नहीं कर सकता था। गांधी जी ने कहा कि अपने धन का सदुपयोग राष्ट्रनिर्माण के लिए करें। उसको गरीबों के कल्याण में लगाएं. उन्होंने आवाह्न किया कि वे व्यापक लोकहित में अपने सारे आभूषण दान कर दें। वह एक क्रांतिकारी अपील थी। सभा में खलबली मच गई। पर गांधी की मुस्कान उसी तरह बनी रही। अगले दिन उस सम्मेलन की खबरों से अखबार रंगे पड़े थे। विनोबा ने समाचारपत्र के माध्यम से ही गांधी जी के बारे में जाना और उन्हें लगा कि जिस लक्ष्य की खोज में वे घर से निकले हैं, वह पूरी हुई। काफी दिन बाद अपनी पहली भेंट को याद करते हुए विनोबा ने कहा था-जिन दिनों में काशी में था, मेरी पहली अभिलाषा हिमालय की कंदराओं में जाकर तप-साधना करने की थी। दूसरी अभिलाषा थी, बंगाल के क्रांतिकारियों से भेंट करने की. लेकिन इनमें से एक भी अभिलाषा पूरी न हो सकी. समय मुझे गांधी जी तक ले गया। वहां जाकर मैंने पाया कि उनके व्यक्तित्व में हिमालय जैसी शांति है तो बंगाल की क्रांति की धधक भी. मैंने छूटते ही स्वयं से कहा था, मेरे दोनों इच्छाएं पूरी हुई. गांधी और विनोबा की वह मुलाकात क्रांतिकारी थी।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय भारत देश को जबरन युद्ध में झोंका जा रहा था जिसके विरुद्ध एक व्यक्तिगत सत्याग्रह 17 अक्तूबर, 1940 को शुरू किया गया था और विनोबा को प्रथम सत्याग्रही बनाया गया। अपना सत्याग्रह शुरू करने से पहले अपने विचार स्पष्ट करते हुए विनोबा ने एक वक्तव्य जारी किया था-युद्ध मानवीय नहीं होता। वह लड़ने वालों और न लड़ने वालों में फर्क नहीं करता। आज का मशीनों से लड़ा जाने वाला युद्ध अमानवीयता की पराकाष्ठा है। यह मनुष्य को पशुता के स्तर पर ढ़केल देता है। भारत स्वराज्य की आराधना करता है जिसका आशय है, सबका शासन। यह सिर्फ अहिंसा से ही हासिल हो सकता है। मैं उनको अहिंसा का दर्शन समझाऊंगा, वर्तमान युद्ध की विभीषिका भी समझाऊंगा तथा यह बताऊंगा की फासीवाद, नाजीवाद और साम्राज्यवाद एक ही सिक्के के दो अलग-अलग पहलू हैं। एक कहानी सन् 1958 की है, जब तेलंगाना के पोचमपल्ली गांव के हरिजनों ने विनोबा भावे से अपने जीवन यापन के लिए 80 एकड़ भूमि देने का अनुरोध किया तब आचार्य विनोबा भावे ने जमींदारों से आगे आकर गरीबों को भूमि दान करने के लिए कहा इसे भूदान आंदोलन कहा गया। इसी से भूदान आंदोलन की शुरुआत हुई भूदान का अर्थ भूमि को उपहार में दे देना होता है। उन्होंने इस आंदोलन से 44 लाख एकड़ भूमि दान में ली और उससे लगभग 13 लाख गरीबों की मदद की। इस भूदान आंदोलन से उन्होंने पूरी दुनिया का ध्यान अपनी तरफ खींचा।

विनोबा 1958 में सामुदायिक नेतृत्व के लिए अंतर्राष्ट्रीय रेमन मैग्सेसे पुरस्कार के पहले प्राप्तकर्ता थे। उन्हें 1983 में मरणोपरांत भारत रत्न (भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार) से भी सम्मानित किया गया था। उनकी मृत्यु 15 नवम्बर 1982 को पनवार, वर्धा में हुई।

स्वाधीनता में संघर्षरत 'सीमांत गांधी' के नाम से विख्यात

खान अब्दुल गफ्फार

खान अब्दुल गफ्फार खघ्न एक महान् राजनेता थे जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था। ब्रिटिश सरकार से आजादी के लिए संघर्षरत 'स्वतंत्र पख्तूनिस्तान' आंदोलन के प्रणेता थे। अब्दुल गफ्फार खान एक राजनैतिक और आध्यात्मिक नेता थे जिन्हें महात्मा गाँधी की तरह उनके अहिंसात्मक आन्दोलन के लिए जाना जाता है। उनका लक्ष्य संयुक्त, स्वतन्त्र और धर्मनिरपेक्ष भारत बनाने का था। इसके लिये उन्होने 1930 में खुदाई खिदमतगार नाम के संग्ठन की स्थापना की। और यह संगठन 'सुर्ख पोश' (या लाल कुर्ती दल) के नाम से भी जान जाता है। खाान अब्दुल गफ्फार खान का जन्म 6 फरवरी 1890 ई. को तत्कालीन ब्रिटिश भारत और वर्तमान पाकिस्तान के पेशावर में हुआ था. उनके परदादा 'अब्दुल्ला खान' बहुत ही सत्यवादी और जुझारू स्वभाव थे. उनके पिता 'बैरम खान' शांत स्वभाव के थे और ईश्वरभक्ति में लीन रहा करते थे. उन्होंने अपने लड़के अब्दुल गफ्फार खान को शिक्षित बनाने के लिए 'मिशनरी स्कूल' में भेजा, पठानों ने उनका बड़ा विरोध किया. मिशनरी स्कूल की पढ़ाई समाप्त करने के बाद वे अलीगढ आ गए. गर्मी की छुट्टियों में समाजसेवा करना उनका मुख्य काम था. शिक्षा समाप्त कर वह देशसेवा में लग गए. सरहद के पार आज भी अपने लोगों की स्वाधीनता के लिए संघर्षरत 'सीमांत गांधी' के नाम से विख्यात खघन अब्दुल गफ्फार खान प्रारम्भ से ही अंग्रेजों के खिलाफ थे.

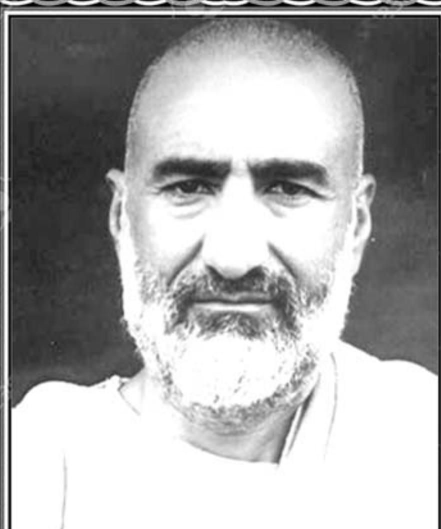

खान अब्दुल गफ्फार खान एक महान राजनेता थे, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया और अपने कार्य और निष्ठा के कारण "सरहदी गांधी" (सीमान्त गांधी), "बाचा खान" तथा "बादशाह खान" के नाम से पुकारे जाने लगे. 20वीं शताब्दी में पख्तूनों या पठान (पाकिस्तान और अफगानिस्तान का मुस्लिम जातीय समूह) के सबसे अग्रणी और करिश्माई नेता थे, जो महात्मा गांधी के अनुयायी बन गए. गांधी जी के कट्टर अनुयायी होने के साथ ही उनका सीमा प्रान्त के कष्बीलों पर अत्यधिक प्रभाव था जिससे उन्हें 'सीमांत गांधी' कहा जाने लगा. राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेकर उन्होंने कई बार जेलों में घोर यातनायें झेली, फिर भी वे अपनी मूल संस्कृति से विमुख नहीं हुए. इसी वजह से वह भारत के प्रति अत्यधिक स्नेह भाव रखते थे. पाकिस्तान के चारसद्दा जिला स्थित "बाचा खान यूनिवर्सिटी" का नाम इन्हीं के नाम पर है. मुस्लिम लीग ने जहाँ पख्तूनों को इस आन्दोलन के लिये कोई मदद नहीं दी, वहीं कांग्रेस ने उन्हें अपना पूर्ण समर्थन दिया. अत: वे पक्के कांग्रेसी बन गए और यहीं से वे गाँधी जी के अनुयायी के रूप में प्रतिष्ठित होते चले गये. खघन ने पठानों को गांधी जी का 'अहिंसा' का पाठ पढ़ाया. 1929 में कांग्रेस पार्टी की एक सभा में शामिल होने के बाद गफ्फार खान ने खुदाई खिदमतगार (ईश्वर के सेवक) की स्थापना की और पख्तूनों के बीच लाल कुर्ती आंदोलन का आह्वान किया. विद्रोह के आरोप में उनकी पहली गिरफ्तारी 3 वर्ष के लिए हुई थी. उसके बाद उन्हें यातनाओं की झेलने की आदत सी पड़ गई. जेल से बाहर आकर उन्होंने पठानों को राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ने के लिए 'खुदाई खिदमतगार' नामक संस्था की स्थापना की और अपने आन्दोलनों को और भी तेज कर दिया.

देश में हाईकोर्ट की स्थापना से पहले ब्रिटिश सरकार और ईस्ट इंडिया कंपनी की दोहरी न्याय प्रणाली से भारतीयों के मुकदमों का फैसला होता था। कंपनी और ब्रिटिश राजा की अदालत के क्षेत्राधिकार अलग-अलग हुआ करते थे। 1858 में ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन खत्म हो गया। 1861 में इंडियन हाईकोर्ट एक्ट पास होने के बाद न्यायालयों का एकीकरण हुआ और न्याय व्यवस्था ब्रिटिश सरकार के हाथों में आ गई। ब्रिटिश सरकार को सर्वोच्च न्यायालयों और सदर अदालतों को खत्म करने की शक्ति भी मिली। बम्बई, कलकत्ता और मद्रास तीनों प्रेसिडेंसी में एक-एक हाईकोर्ट की स्थापना की गई। इस कानून के जरिए सबसे पहले कोलकाता हाईकोर्ट की स्थापना हुई। आज ही के दिन 1862 में बॉम्बे हाईकोर्ट की स्थापना की गई। महाराष्ट्र, गोवा, दादरा नगर हवेली और दमन और दीव के मामलों पर बॉम्बे हाईकोर्ट को सुनवाई करने का अधिकार दिया गया। शुरुआत में 15 जजों की नियुक्ति का ऑर्डर दिया गया, लेकिन 7 जजों की ही नियुक्ति हो पाई। हाईकोर्ट की वर्तमान बिल्डिंग को बनाने का काम 1871 में शुरू हुआ। फिलहाल पणजी (गोवा), औरंगाबाद और नागपुर में बॉम्बे हाईकोर्ट की बेंच है। 14 अगस्त को इतिहास में इन महत्वपूर्ण घटनाओं की वजह से भी याद किया जाता है।

वर्ष 1987 में भारत सरकार की ओर से खान अब्दुल गफ्फार खान को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था। वे इस सम्मान को पाने वाले पहले विदेशी नागरिक थे। सन 1988 में पाकिस्तान सरकार ने उन्हें पेशावर में उनके घर में नजरबंद कर दिया गया. 20 जनवरी 1988 को उनकी मृत्यु हो गयी और उनकी अंतिम इच्छानुसार उन्हें जलालाबाद अफगानिस्तान में दफनाया गया.

अभिनेता सह नेता के रूप में अपनी छाप छोड़ने वाले

एम. जी. रामचंद्रन

एम.जी.आर. का जन्म 17 जनवरी, 1917 को कैंडी, श्रीलंका में मलयाली प्रवासी माता-पिता एम. गोपाल मेनन और मरुदुर सत्यभामा के यहाँ हुआ। अपने शुरूआती जीवन में, एमजीआर और उनके बड़े भाई, एम.जी. चक्रपनी, उनके परिवार का समर्थन करने के लिए एक नाटक मंडली के सदस्य बन गए। गांधीवादी आदर्शों से प्रभावित एम.जी.आर. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए। नाटकों में अभिनय करने के कुछ साल बाद सन् 1936 में उनका फिल्म कैरियर शुरू हुआ। 1940 के दशक में उन्होंने अग्रणी भूमिका के लिए स्नातक की उपाधि प्राप्त की है और अगले तीन दशकों के लिए उन्होंने अपना वर्चस्व तमिल फिल्म उद्योग में बना लिया। उन्होंने सफलतापूर्वक एक बड़े राजनीतिक आधार बनाने के लिए एक नायक के रूप में अपनी लोकप्रियता का इस्तेमाल किया।

अभिनेता और राजनेता एमआर राधा और एमजीआर ने एक साथ 25 फिल्मों में काम किया था। 12 जनवरी 1967 को, राधा और एक निर्माता ने भविष्य की फिल्म परियोजना के बारे में बात करने के लिए एमजीआर का दौरा किया। बातचीत के दौरान, एमआर राधा ने खड़े होकर दो बार अपने बाएं कान में एमजीआर को गोली मार दी और फिर खुद को गोली मारने की कोशिश की। ऑपरेशन के बाद, एमजीआर की आवाज बदल गई। जब से उनके कान में गोली लगी थी, एमजीआर ने अपने बाएं कान में सुनवाई खो दी थी। ये 1983 में सामने आए जब उन्हें किडनी की समस्या थी। 1972 में, डीएमके नेता करुणानिधि ने अपने पहले बेटे एमके मुथु को फिल्म और राजनीति में बड़े पैमाने पर प्रोजेक्ट करना शुरू किया, उसी समय एमजीआर यह आरोप लगा रहे थे कि अन्नादुराई के निधन के बाद पार्टी में भ्रष्टाचार बढ़ गया था और एक सार्वजनिक सभा में उन्होंने पूछा पार्टी के वित्तीय विवरणों को प्रचारित करने के लिए, जिससे क्डज्ञ नेतृत्व क्रोधित होता है। नतीजतन, 'डीएमके से बाहर होने पर, उनके स्वयंसेवक अनाकापुथुर रामलिंगम ने अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम नामक एक नई पार्टी शुरू की। उस पार्टी के सदस्य के रूप में शामिल हुए और इसके नेता और जनरल सचिव बने।' जिसे उन्होंने अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम कहा, बाद में नाम बदलकर अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम किया, जो डीएमके की एकमात्र शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी थी।

राष्ट्रीय ध्वज के साथ एमजीआरमाचंद्रन की राजदूत कार एक बार जब वे तमिलनाडु के मुख्यमंत्री बने, तो उन्होंने सामाजिक विकास, विशेषकर शिक्षा पर बहुत जोर दिया। उनकी सबसे सफल नीतियों में से एक 'मध्यान्ह भोजन योजना' का रूपांतरण था, जिसे लोकप्रिय कांग्रेस के मुख्यमंत्री और किंगमेकर के। कामराज द्वारा शुरू किया गया था, जो पहले से ही कमजोर वर्ग के बच्चों को सरकार में 'एमजीआर की पोषक भोजन योजना' में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था- तमिलनाडु में चल रहे और सहायता प्राप्त स्कूलों को सथथुरंडई जोड़कर-एक पौष्टिक शर्करायुक्त आटा गुलगुला। यह योजना रुपये की लागत पर थी। 1 बिलियन और 1982 में लगाया गया था। राज्य के 120,000 से अधिक बच्चे लाभान्वित हुए थे। उन्होंने महिला स्पेशल बसें भी शुरू कीं। उन्होंने राज्य में शराब बंदी और पुराने मंदिरों और ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण की शुरुआत की, अंततः राज्य की पर्यटक आय में वृद्धि हुई। उन्होंने एमजीआर प्राइमरी एंड हायर सेकेंडरी स्कूल नामक कोडम्बक्कम में सिनेमा तकनीशियनों के बच्चों के लिए एक निशुल्क स्कूल की स्थापना की, जिसने 1950 के दशक में मुफ्त मिड-डे मील प्रदान किया। उन्होंने 1984 के विधानसभा चुनावों में चुनाव प्रचार में हिस्सा नहीं लेने के बावजूद एडीएमके का नेतृत्व किया। उस समय वह अमेरिका में चिकित्सा उपचार से गुजर रहे थे और उनकी छवियां तमिलनाडु में सिनेमा हॉल के माध्यम से प्रसारित की गई थीं। यह एक प्रभावी अभियान रणनीति थी और डीएमके ने 56% विधानसभा सीटों का दावा करते हुए चुनाव जीता, जो उनके लोकप्रिय समर्थन की गहराई को दर्शाता है। उन्होंने 1984 में एक दोहरी भूस्खलन वाली जीत में अपनी सीट जीती थी। उनके पास अभी भी एक दशक से अधिक की सबसे लंबी सुसंगत दीर्घायु के साथ मुख्यमंत्री होने का रिकॉर्ड है। करुणानिधि ने 1 अप्रैल 2009 को और फिर 13 मई 2012 को दावा किया कि एमजीआर 1979 में डीएमके के साथ अपनी पार्टी के विलय के लिए तैयार था, जिसमें बीजू पटनायक मध्यस्थ के रूप में काम कर रहे थे। योजना विफल हो गई, क्योंकि एमजीआर के करीबी पानरुती रामचंद्रन ने एक बिगाड़ने का काम किया और एमजीआर ने अपना विचार बदल दिया।

1987 में उनकी मृत्यु के बाद, वह सी. राजगोपालाचारी और के. कामराज के बाद भारत रत्न प्राप्त करने वाले तमिलनाडु राज्य के तीसरे मुख्यमंत्री बने। 2017 में एमजीआर की जन्म शताब्दी मनाने के लिए, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार ने 100 और 5 रूपये के सिक्के जारी करने का निर्णय लिया, जो रामचंद्र जन्म शताब्दी के एक शिलालेख के साथ एक चित्र के रूप में उनकी छवि को सहन करेंगे।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर

जिसने अंतिम क्षण तक दलितों का सम्मान दिलाने के लिए किया संघर्ष

डॉ भीमराव अंबेडकर छुआछूत की पीड़ा को जन्म से ही झेलते आए थे। जाति प्रथा और ऊंच-नीच का भेदभाव वह बचपन से ही देखते आए थे और इसके स्वरूप उन्होंने काफी अपमान का सामना किया। डॉ भीमराव अंबेडकर ने छुआछूत के विरुद्ध संघर्ष किया और इसके जरिए वे निम्न जाति वालों को छुआछूत की प्रथा से मुक्ति दिलाना चाहते थे और समाज में बराबर का दर्जा दिलाना चाहते थे। 1920 के दशक में मुंबई में डॉ भीमराव अंबेडकर ने अपने भाषण में यह साफ-साफ कहा था कि "जहां मेरे व्यक्तिगत हित और देश हित में टकराव होगा वहां पर मैं देश के हित को प्राथमिकता दूंगा परंतु जहां दलित जातियों के हित और देश के हित में टकराव होगा वहां मैं दलित जातियों को प्राथमिकता दूंगा।" वे दलित वर्ग के लिए मसीहा के रूप में सामने आए जिन्होंने अपने अंतिम क्षण तक दलितों को सम्मान दिलाने के लिए संघर्ष किया। सन् 1927 में अछूतों को लेने के लिए एक सत्याग्रह का नेतृत्व किया। और सन् 1937 में मुंबई में उच्च न्यायालय में मुकदमा जीत लिया। सहृदय नेता डॉ. भीमराव अंबेडकर का जन्म मध्यप्रदेश के इंदौर शहर में स्थित महू में हुआ था जिसका नाम आज बदल कर डॉ.अंबेडकर नगर रख दिया गया था। डॉ भीमराव अंबेडकर जी का जन्म 14 अप्रैल 1891 में हुआ था। डॉ भीमराव अंबेडकर जाति से दलित थे। उनकी जाति को अछूत जाति माना जाता था। इसलिए उनका बचपन बहुत ही मुश्किलों में व्यतीत हुआ था। बाबासाहेब अंबेडकर सहित सभी निम्न जाति के लोगों को सामाजिक बहिष्कार, अपमान और भेदभाव का सामना करना पड़ता था। उनके पिता मुंबई शहर के एक ऐसे मकान में रहने गए जहां एक ही कमरे में पहले से बेहद गरीब लोग रहते थे, इसलिए दोनों के एक साथ सोने की व्यवस्था नहीं थी तो बाबासाहेब अंबेडकर और उनके पिता बारी-बारी से सोया करते थे जब उनके पिता सोते थे तो डॉ भीमराव अंबेडकर दीपक की हल्की सी रोशनी में पढ़ते थे। भीमराव अंबेडकर संस्कृत पढ़ने के इच्छुक थे, परंतु छुआछूत की प्रथा के अनुसार और निम्न जाति के होने के कारण वे संस्कृत नहीं पढ़ सकते थे। परंतु ऐसी विडंबना थी कि विदेशी लोग संस्कृत पढ़ सकते थे। भीम राव आंबेडकर जीवनी में अपमानजनक स्थितियों का सामना करते हुए डॉ भीमराव अंबेडकर ने धैर्य और वीरता से अपनी स्कूली शिक्षा प्राप्त की और इसके बाद कॉलेज की पढ़ाई। डॉ भीमराव अंबेडकर ने 1907 में मैट्रिकुलेशन पास करने के बाद एली फिंस्टम कॉलेज में 1912 में ग्रेजुएट हुए। 1913 और 15 प्राचीन भारत व्यापार पर एक शोध प्रबंध लिखा था। डॉ भीमराव अंबेडकर ने 1915 में कोलंबिया विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एमए की शिक्षा ली। 1917 में पीएचडी की उपाधि प्राप्त कर ली। नेशनल डेवलपमेंट फॉर इंडिया एंड एनालिटिकल स्टडी विषय पर उन्होंने शोध किया। 1917 में ही लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में उन्होंने दाखिला लिया लेकिन साधन के अभाव के कारण वह अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पाए। कुछ समय बाद लंदन जाकर लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से अधूरी पढ़ाई उन्होंने पूरी की।

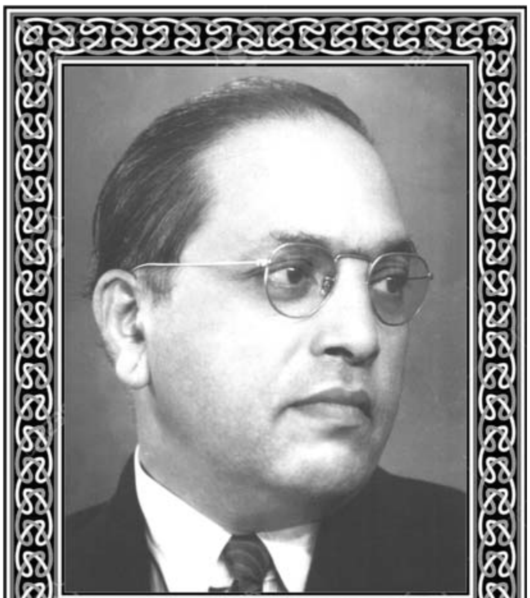

डॉ बी. आर. अंबेडकर ने इतनी असमानताओं का सामना करने के बाद सामाजिक सुधार का मोर्चा उठाया। अंबेडकर जी ने ऑल इंडिया क्लासेज एसोसिएशन का संगठन किया। सामाजिक सुधार को लेकर वह बहुत प्रयत्नशील थे। ब्राह्मणों द्वारा छुआछूत की प्रथा को मानना, मंदिरों में प्रवेश ना करने देना, दलितों से भेदभाव, शिक्षकों द्वारा भेदभाव आदि सामाजिक सुधार करने का प्रयत्न किया। परंतु विदेशी शासन काल होने कारण यह ज्यादा सफल नहीं हो पाया। विदेशी शासकों को यह डर था कि यदि यह लोग एक हो जाएंगे तो परंपरावादी और रूढ़िवादी वर्ग उनका विरोधी हो जाएगा।

डॉ भीमराव अंबेडकर सन् 1948 से मधुमेह (डायबिटीज) से पीड़ित थे और वह 1954 तक बहुत बीमार रहे थे। 3 दिसंबर 1956 को डॉ भीमराव अंबेडकर ने अपनी अंतिम पांडुलिपि बुद्ध और धम्म उनके को पूरा किया और 6 दिसंबर 1956 को अपने घर दिल्ली में अपनी अंतिम सांस ली थी। बाबा साहेब का अंतिम संस्कार चौपाटी समुद्र तट पर बौद्ध शैली में किया गया। इस दिन से अंबेडकर जयंती पर सार्वजनिक अवकाश रखा जाता है। अगर आज बाबा साहेब आंबेडकर जिंदा होते तो क्या करते? 1990 में उन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया है। कई सार्वजनिक संस्थान का नाम उनके सम्मान में उनके नाम पर रखा गया है जैसे कि हैदराबाद, आंध्र प्रदेश का डॉ. अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, बी आर अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय- मुजफ्फरपुर। डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा नागपुर में है, जो पहले सोनेगांव हवाई अड्डे के नाम से जाना जाता था। अंबेडकर का एक बड़ा आधिकारिक चित्र भारतीय संसद भवन में प्रदर्शित किया गया है।

अफरीकन गांधी पूर्व राष्ट्रपति

नेल्सन मंडेला

मबासा नदी के किनारे ट्रॉस्की के मवेजों गाँव में 'नेल्सन रोहिल्हाला मंडेला' का 18 जुलाई, 1918 को जन्म हुआ था। उनके पिता ने उन्हें नाम दिया 'रोहिल्हाला' अर्थ पेड़ की डालियों को तोड़ने वाला या फिर प्यारा शैतान बच्चा। नेल्सन के पिता 'गेडला हेनरी' गाँव के प्रधान थे। उनका परिवार परम्परा से ही गाँव का प्रधान परिवार था। घर का कोई लड़का ही इस पद पर सुशोभित होता था। नेल्सन अपनी पिता की तीसरी पत्नी 'नेक्यूफी नोसकेनी' की पहली सन्तान थे। कुल मिलाकर वह तेरह भाईयों में तीसरे थे। इसी बीच बारह साल की उम्र में ही नेल्सन के सिर से पिता का साया उठ गया। नेल्सन ने 'क्लार्कबेरी मिशनरी स्कूल' से अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूरी की। 1944 में नेल्सन की जिन्दगी में 'इवलिन मेस' आई और दोनों शादी के बन्धन में बँध गए। इवलिन उनके सहयोगी और मित्र वाल्टर सिसुलू की बहन थीं। वह इन्हीं दिनों 'अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस' में शामिल हो गए। जल्दी ही उन्होंने टाम्बो, सिसुलू और अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर 'अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस यूथ लीग' का निर्माण किया। 1947 में मंडेला इस संस्था के सचिव चुन लिए गए। साथ ही उन्हें 'ट्रांसवाल ए.एन.सी.' का अधिकारी भी नियुक्त किया गया।

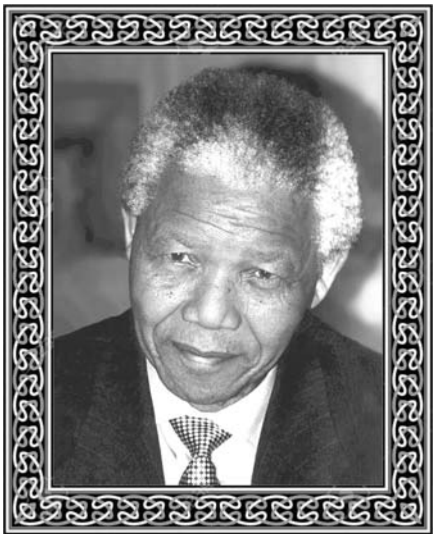

यह वह दौर था जब पूरी दुनिया गांधी से प्रभावित हो रही थी, नेल्सन भी उनमें से एक थे। वैचारिक रूप से वह स्वयं को गांधी के नजदीक पाते थे, और यह प्रभाव उनके द्वारा चलाए गए आन्दोलनों पर स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। कुछ ही समय में उनकी फर्म देश की 'पहली अश्वेतों' द्वारा चलाई जा रही फर्म हो गई, लेकिन नेल्सन के लिए वकील का रोजगार और राजनीति को एक साथ लेकर चलना मुश्किल साबित हो रहा था। इसी दौरान उन्हें ट्रांसवाल कांग्रेस का अध्यक्ष बना दिया गया। जिम्मेदारियाँ बढ़ती जा रही थीं। नेल्सन की विचार शैली और काम करने की क्षमता से लोग प्रभावित होने लगे। एक महान् नेता धीरे-धीरे जन्म ले रहा था। इसी बीच अपने आप को कघनून का बेहतर जानकार बनाने के लिए नेल्सन ने कानून की पढ़ाई शुरू कर दी, लेकिन अपनी व्यस्तता के कारण वे एल.एल.बी. की परीक्षा पास करने में असफल रहे। इस असफलता के बाद उन्होंने एक वकील के तौर पर काम करने के बजाय अटार्नी के तौर पर काम करने के लिए पात्रता परीक्षा पास करने का फैसला किया। इसी बीच अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस को चुनावों में करारी पराजय का सामना करना पड़ा। कांग्रेस के अध्यक्ष को पद से हटाकर किसी नए अध्यक्ष को लाने की माँग जोर पकड़ने लगी। यूथ कांग्रेस के विचारों को अपनाकर मुख्य पार्टी को आगे बढ़ाने का विचार रखा गया। वाल्टर सिसुलू ने एक कार्ययोजना का निर्माण किया, जो 'अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस' के द्वारा स्वीकार कर लिया गया। 1951 में नेल्सन को 'यूथ कांग्रेस' का अध्यक्ष चुन लिया गया। नेल्सन ने अपने लोगों को कानूनी लड़ाई लड़ने के लिए 1952 में एक कघनूनी फर्म की स्थापना की।

विद्यार्थी जीवन में उन्हें रोज याद दिलाया जाता कि उनका रंग काला है और सिर्फ इसी वजह से वह यह काम नहीं कर सकते। उन्हें रोज इस बात का एहसास करवाया जाता कि अगर वे सीना तान कर सड़क पर चलेंगे तो इस अपराध के लिए उन्हें जेल जाना पड़ सकता है। ऐसे अन्याय ने उनके अन्दर असंतोष भर दिया। एक क्रान्तिकारी तैयार हो रहा था। उन्होंने 'हेल्डटाउन' से अपनी स्नातक शिक्षा पूरी की। हेल्डटाउन अश्वेतों के लिए बनाया गया एक विशेष कॉलेज था। यहीं पर उनकी मुलाकात 'ऑलिवर टाम्बो' से हुई, जो जीवन भर के लिए उनके दोस्त और सहयोगी बन जाने वाले थे। 1940 तक नेल्सन मंडेला और ऑलिवर टाम्बो ने कॉलेज कैम्पस में अपने राजनीतिक विचारों और कार्यकलापों के लिए प्रसिद्धि पा ली। कॉलेज प्रशासन को जब इस बात का पता लगा तो दोनों को कॉलेज से निकाल दिया गया और परिसर में उनके प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया। 'फोर्ट हेयर' उनके क्रियाकलापों के मूर्त गवाह के रूप में आज भी खड़ा है। कॉलेज से निकाल दिए जाने के बाद वह माता-पिता के पास ट्रॉस्की लौट आए। ठीक अगले साल दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद रहित चुनाव हुए। अफ्ररीकन नेशनल कांग्रेस ने सबको पछाड़ते हुए बासठ प्रतिशत मतों पर अपना कब्जा कर लिया। 10 मई, 1994 को अश्वेतों के लिए दक्षिण अफ्रीका की उस भूमि पर नेल्सन मंडेला ने अपनी जनता को सम्बोधित करते हुए कहा-'आखिरकार हमने अपने राजनीतिक लक्ष्य को प्राप्त कर ही लिया। हम अपने आप से वादा करें कि हम अपने सभी लोगों को आजादी देंगे, गरीबों से, मुश्किलों से, तकलीफों से, लिंगभेद से और किसी भी तरह के शोषण से। और कभी भी इस खूबसूरत धरती पर एक-दूसरे के साथ किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जाएगा। स्वतंत्रता का लुत्फ उठाइए। ईश्वर अफ्रीका पर अपनी कृपा बनाए रखे। नेल्सन के इस सम्बोधन ने अफ्रीका के श्वेत लोगों के मन से डर को निकाल दिया, जो देश की बहुसंख्यक जनता का प्रतिनिधित्व करती थी।

1990 में भारत सरकार की ओर से नेल्ष्सन मंडेला को भारत रत्न पुरस्कार दिया गया। अपने इस उत्कृष्ट कार्य के लिए ही 1993 में नेल्सन मंडेला और डी क्लार्क दोनों को संयुक्त रूप से शान्ति के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला का 5 दिसम्बर, 2013 को निधन हो गया।